5274
1868 I

NOWOROCZNIK

DLA

# NAUCZYCIELI

I

## PRZYJACIÓŁ WYCHOWANIA.

1868.

BYDGOSZCZ.
Nakładem księgarni T. Śniegockiego.
1868.

Druk J. Buszczyńskiego w Toruniu.

5274
I

# NOWOROCZNIK

DLA

# NAUCZYCIELI

I

PRZYJACIÓŁ WYCHOWANIA.

1868.

BYDGOSZCZ.

Nakładem księgarni T. Śniegockiego.

Druk J. Buszczyńskiego w Toruniu.

1868.

BIBLIOTHECA
VNIV. IAGELL.
CRACOVIENSIS

52774 I,
1868

Biblioteka Jagiellońska
1002765723

# Spis rzeczy.


Stronnica.

Konotatnik na wszystkie dni roku . . . . . 1
Spis uczniów . . . . . 54
Plan godzin . . . . . 67
Wspomnienia historyczne . . . . . 1
Organizacyja Władz szkolnych w państwie pruskiem 17
Historyja szkół w Polsce . . . . . 64
Szkoła realna i jej zadanie . . . . . 74
Wychowanie fizyczne młodzieży . . . . . 82
Aforyzmy pedagogiczne . . . . . 87
Wyjątki z Żywota człowieka poczciwego . . . 92
Zdanie Jędrzeja Śniadeckiego o wychowaniu fizycznem 94
Rady Komisyji Edukacyjnej dla nauczycieli . . 96
O ćwiczeniu i wychowaniu dziatek . . . . 99
Zdania sławnych ludzi o wychowaniu . . . . 102
Statystyka oświaty Europejskiej . . . . . 104
Zakłady naukowe w Galicyji . . . . . 111
Szkolnictwo w ziemiach polskich pod panowaniem rosyjskiem . . . . . 117
Rozmaitości . . . . . 120
Sprawozdanie Dyrekcyji Towarzystwa Pomocy Naukowej Imienia Karola Marcinkowskiego . . . 151

# KONOTATNIK

na wszystkie dnie roku

**1868.**

## Styczeń.

| | |
|---|---|
| *1. Środa.* | |
| *2. Czwartek.* | |
| *3. Piątek.* | |
| *4. Sobota.* | |

# Styczeń.

| | | |
|---|---|---|
| 5. Niedziela. | | |
| 6. Poniedziałek. | | |
| 7. Wtorek. | | |
| 8. Środa. | | |
| 9. Czwartek. | | |
| 10. Piątek. | | |
| 11. Sobota. | | |

# Styczeń.

| | |
|---|---|
| 12. Niedziela. | |
| 13 Poniedziałek. | |
| 14. Wtorek. | |
| 15. Środa. | |
| 16. Czwartek. | |
| 17. Piątek. | |
| 18. Sobota. | |

# Styczeń.

| | | |
|---|---|---|
| *19. Niedziela.* | | |
| *20. Poniedziałek.* | | |
| *21. Wtorek.* | | |
| *22. Środa.* | | |
| *23. Czwartek.* | | |
| *24. Piątek.* | | |
| *25. Sobota.* | | |

# Styczeń.

| | | |
|---|---|---|
| *26. Niedziela.* | | |
| *27. Poniedziałek* | | |
| *28. Wtorek.* | | |
| *29. Środa.* | | |
| *30. Czwartek.* | | |
| *31. Piątek.* | | |

# Luty.

1. Sobota.

2. Niedziela.

3. Poniedziałek.

4. Wtorek.

5. Środa.

6. Czwartek.

7. Piątek.

8. Sobota.

# Luty.

| | | |
|---|---|---|
| 9. Niedziela. | | |
| 10. Poniedziałek. | | |
| 11. Wtorek | | |
| 12. Środa | | |
| 13. Czwartek. | | |
| 14. Piątek. | | |
| 15. Sobota. | | |

# Luty.

| | | |
|---|---|---|
| *16. Niedziela.* | | |
| *17. Poniedziałek* | | |
| *18. Wtorek.* | | |
| *19. Środa.* | | |
| *20. Czwartek.* | | |
| *21. Piątek.* | | |
| *22. Sobota.* | | |

# Luty.

| | | |
|---|---|---|
| *23. Niedziela* | | |
| *24. Poniedziałek.* | | |
| *25. Wtorek.* | | |
| *26 Środa* | | |
| *27. Czwartek* | | |
| *28. Piątek* | | |
| *29. Sobota* | | |

# Marzec.

| | | |
|---|---|---|
| *1. Niedziela.* | | |
| *2. Poniedziałek.* | | |
| *3. Wtorek* | | |
| *4. Środa.* | | |
| *5. Czwartek* | | |
| *6. Piątek.* | | |
| *7. Sobota.* | | |

# Marzec.

| | | |
|---|---|---|
| *8. Niedziela* | | |
| *9. Poniedziałek* | | |
| *10. Wtorek* | | |
| *11. Środa* | | |
| *12. Czwartek* | | |
| *13. Piątek.* | | |
| *14. Sobota* | | |

# Marzec.

| | | |
|---|---|---|
| *15. Niedziela.* | | |
| *16. Poniedziałek.* | | |
| *17. Wtorek* | | |
| *18. Środa.* | | |
| *19. Czwartek* | | |
| *20. Piątek* | | |
| *21. Sobota.* | | |

# Marzec.

| | | |
|---|---|---|
| *22. Niedziela.* | | |
| *23. Poniedziałek.* | | |
| *24. Wtorek.* | | |
| *25. Środa.* | | |
| *26. Czwartek.* | | |
| *27. Piątek.* | | |
| *28. Sobota.* | | |

## Marzec.

29. Niedziela.

30. Poniedziałek.

31. Wtorek.

## Kwiecień.

1. Środa.

2. Czwartek.

3. Piątek.

4. Sobota.

# Kwiecień.

| | | |
|---|---|---|
| 5. Niedziela. | | |
| 6. Poniedziałek. | | |
| 7. Wtorek. | | |
| 8. Środa. | | |
| 9. Czwartek. | | |
| 10. Piątek. | | |
| 11. Sobota. | | |

# Kwiecień.

| | | |
|---|---|---|
| *12. Niedziela.* | | |
| *13. Poniedziałek.* | | |
| *14. Wtorek.* | | |
| *15. Środa.* | | |
| *16. Czwartek.* | | |
| *17. Piątek.* | | |
| *18 Sobota.* | | |

# Kwiecień.

| | | |
|---|---|---|
| 19. Niedziela. | | |
| 20. Poniedziałek. | | |
| 21. Wtorek. | | |
| 22. Środa. | | |
| 23. Czwartek. | | |
| 24. Piątek. | | |
| 25. Sobota. | | |

# Kwiecień.

| | | |
|---|---|---|
| 26. Niedziela. | | |
| 27. Poniedziałek. | | |
| 28. Wtorek. | | |
| 29. Środa. | | |
| 30. Czwartek. | | |
| | **Maj.** | |
| 1. Piątek. | | |
| 2. Sobota. | | |

# Maj.

| | | |
|---|---|---|
| *3. Niedziela.* | | |
| *4. Poniedziałek.* | | |
| *5. Wtorek.* | | |
| *6. Środa.* | | |
| *7. Czwartek.* | | |
| *8. Piątek.* | | |
| *9. Sobota.* | | |

# Maj.

| | | |
|---|---|---|
| 10. Niedziela. | | |
| 11. Poniedziałek. | | |
| 12. Wtorek. | | |
| 13. Środa. | | |
| 14. Czwartek. | | |
| 15. Piątek. | | |
| 16. Sobota. | | |

# Maj.

| | | |
|---|---|---|
| 17. Niedziela. | | |
| 18. Poniedziałek | | |
| 19. Wtorek | | |
| 20. Środa. | | |
| 21. Czwartek | | |
| 22. Piątek | | |
| 23. Sobota | | |

# Maj.

| | |
|---|---|
| *24. Niedziela.* | |
| *25. Poniedziałek.* | |
| *26. Wtorek.* | |
| *27. Środa.* | |
| *28. Czwartek.* | |
| *29. Piątek.* | |
| *30. Sobota.* | |
| *31. Niedziela.* | |

# Czerwiec.

| | | |
|---|---|---|
| *1. Poniedziałek.* | | |
| *2. Wtorek.* | | |
| *3. Środa.* | | |
| *4. Czwartek.* | | |
| *5. Piątek.* | | |
| *6. Sobota.* | | |

# Czerwiec.

| | | |
|---|---|---|
| 7. Niedziela. | | |
| 8 Poniedziałek. | | |
| 9. Wtorek. | | |
| 10. Środa. | | |
| 11. Czwartek. | | |
| 12 Piątek. | | |
| 13. Sobota. | | |

# Czerwiec.

| | | |
|---|---|---|
| *14. Niedziela* | | |
| *15 Poniedziałek.* | | |
| *16 Wtorek.* | | |
| *17 Środa* | | |
| *18 Czwartek* | | |
| *19 Piątek.* | | |
| *20. Sobota.* | | |

# Czerwiec.

| | | |
|---|---|---|
| *21. Niedziela.* | | |
| *22. Poniedziałek* | | |
| *23. Wtorek* | | |
| *24. Środa.* | | |
| *25. Czwartek* | | |
| *26. Piątek.* | | |
| *27. Sobota.* | | |

## Czerwiec.

28 Niedziela

29 Poniedziałek

30. Wtorek.

## Lipiec.

1. Środa

2. Czwartek

3. Piątek.

4. Sobota.

# Lipiec.

| | | |
|---|---|---|
| *5. Niedziela.* | | |
| *6. Poniedziałek.* | | |
| *7. Wtorek* | | |
| *8 Środa.* | | |
| *9. Czwartek* | | |
| *10 Piątek.* | | |
| *11. Sobota.* | | |

# Lipiec.

| | | |
|---|---|---|
| *12. Niedziela.* | | |
| *13. Poniedziałek.* | | |
| *14 Wtorek.* | | |
| *15. Środa.* | | |
| *16. Czwartek.* | | |
| *17. Piątek.* | | |
| *18. Sobota.* | | |

# Lipiec.

| | | |
|---|---|---|
| *19. Niedziela.* | | |
| *20. Poniedziałek.* | | |
| *21. Wtorek.* | | |
| *22. Środa.* | | |
| *23. Czwartek.* | | |
| *24. Piątek.* | | |
| *25. Sobota.* | | |

# Lipiec.

| | | |
|---|---|---|
| 26. Niedziela. | | |
| 27. Poniedziałek. | | |
| 28. Wtorek. | | |
| 29. Środa. | | |
| 30. Czwartek. | | |
| 31. Piątek. | | |

# Sierpień.

| | | |
|---|---|---|
| *1. Sobota.* | | |
| *2. Niedziela.* | | |
| *3. Poniedziałek.* | | |
| *4. Wtorek.* | | |
| *5. Środa.* | | |
| *6. Czwartek.* | | |
| *7. Piątek.* | | |
| *8. Sobota.* | | |

9. Niedziela.

10. Poniedziałek.

11 Wtorek.

12 Środa.

13 Czwartek.

14 Piątek.

15 Sobota.

# Sierpień.

16. Niedziela.

17 Poniedziałek.

18. Wtorek.

19. Środa.

20. Czwartek.

21. Piątek.

22. Sobota.

# Sierpień.

23 Niedziela.

24 Poniedziałek.

25 Wtorek.

26 Środa.

27 Czwartek.

28 Piątek.

29 Sobota.

# Sierpień.

| | |
|---|---|
| 30. Niedziela. | |
| 31. Poniedziałek. | |
| 1. Wtorek. | **Wrzesień.** |
| 2. Środa. | |
| 3. Czwartek. | |
| 4. Piątek. | |
| 5. Sobota. | |

# Wrzesień.

| | |
|---|---|
| 6. Niedziela. | |
| 7. Poniedziałek | |
| 8. Wtorek | |
| 9. Środa. | |
| 10. Czwartek. | |
| 11. Piątek. | |
| 12. Sobota | |

# Wrzesień.

| | |
|---|---|
| 13. Niedziela. | |
| 14. Poniedziałek | |
| 15. Wtorek | |
| 16. Środa. | |
| 17. Czwartek. | |
| 18. Piątek. | |
| 19. Sobota | |

# Wrzesień.

| | |
|---|---|
| 20. Niedziela. | |
| 21. Poniedziałek | |
| 22. Wtorek | |
| 23. Środa. | |
| 24. Czwartek. | |
| 25. Piątek. | |
| 26. Sobota | |

27. Niedziela.

28. Poniedziałek.

29. Wtorek.

30. Środa.

## Październik.

1. Czwartek.

2. Piątek.

3. Sobota.

| | | |
|---|---|---|
| 4. Niedziela | | |
| 5. Poniedziałek. | | |
| 6. Wtorek. | | |
| 7. Środa | | |
| 8. Czwartek | | |
| 9. Piątek. | | |
| 10. Sobota. | | |

# Październik.

| | |
|---|---|
| *11. Niedziela.* | |
| *12. Poniedziałek.* | |
| *13. Wtorek* | |
| *14 Środa.* | |
| *15. Czwartek* | |
| *16. Piątek* | |
| *17. Sobota.* | |

# Październik.

| | | |
|---|---|---|
| *18. Niedziela.* | | |
| *19. Poniedziałek.* | | |
| *20. Wtorek* | | |
| *21. Środa.* | | |
| *22. Czwartek* | | |
| *23. Piątek* | | |
| *24. Sobota.* | | |

# Październik.

25 Niedziela.

26 Poniedziałek.

27 Wtorek

28 Środa.

29 Czwartek

30 Piątek

31 Sobota.

# Listopad.

| | | |
|---|---|---|
| *1. Niedziela.* | | |
| *2. Poniedziałek.* | | |
| *3. Wtorek.* | | |
| *4. Środa.* | | |
| *5. Czwartek.* | | |
| *6. Piątek.* | | |
| *7. Sobota.* | | |

# Listopad.

| | |
|---|---|
| 8. Niedziela. | |
| 9. Poniedziałek. | |
| 10. Wtorek. | |
| 11. Środa. | |
| 12. Czwartek. | |
| 13. Piątek | |
| 14. Sobota. | |

# Listopad.

| | |
|---|---|
| 15. Niedziela/ | |
| 16 Poniedziałek. | |
| 17 Wtorek: | |
| 18. Środa: | |
| 19. Czwartek. | |
| 20. Piątek | |
| 21. Sobota: | |

# Listopad.

| | |
|---|---|
| *22. Niedziela.* | |
| *23. Poniedziałek* | |
| *24. Wtorek* | |
| *25. Środa* | |
| *26. Czwartek* | |
| *27. Piątek.* | |
| *28. Sobota.* | |

# Listopad.

| | |
|---|---|
| *29. Niedziela.* | |
| *30 Poniedziałek* | |
| *1. Wtorek.* | **Grudzień.** |
| *2. Środa.* | |
| *3. Czwartek.* | |
| *4. Piątek.* | |
| *5. Sobota.* | |

# Grudzień.

| | |
|---|---|
| 6. Niedziela | |
| 7. Poniedziałek | |
| 8 Wtorek. | |
| 9 Środa. | |
| 10. Czwartek. | |
| 11. Piątek | |
| 12. Sobota | |

| | |
|---|---|
| 13. Niedziela. | |
| 14. Poniedziałek | |
| 15. Wtorek. | |
| 16. Środa. | |
| 17. Czwartek. | |
| 18. Piątek. | |
| 19. Sobota. | |

# Grudzień.

| | | |
|---|---|---|
| 20. Niedziela. | | |
| 21. Poniedziałek | | |
| 22. Wtorek. | | |
| 23. Środa. | | |
| 24. Czwartek. | | |
| 25. Piątek. | | |
| 26. Sobota | | |

# Grudzień.

| | |
|---|---|
| *27. Niedziela.* | |
| *28. Poniedziałek.* | |
| *29. Wtorek.* | |
| *30. Środa.* | |
| *31. Czwartek.* | |

# Spis uczniów.

| *Nazwiska.* | *Wiek* | *Wyzn.* | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| *Nazwiska.* | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| ***Nazwiska.*** | Wiek | Wyzn | |
|---|---|---|---|
| | | | |

| *Názniska.* | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | a | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| Nazwiska. | Wiek. | Wyzn. | |
|---|---|---|---|

| Nazwiska. | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| *Nazwiska* : | Wiek | Rzym | |
|---|---|---|---|
| | | | |

| Godziny. | Poniedziałek | Wtorek. | Środa |
|---|---|---|---|
| 7–8. | | | |
| 8–9. | | | |
| 9–10. | | | |
| 10–11. | | | |
| 11–12. | | | |
| 12–1. | | | |
| 1–2. | | | |
| 2–3. | | | |
| 3–4. | | | |
| 4–5. | | | |
| 5–6. | | | |
| 6–7. | | | |
| 7–8. | | | |
| 8–9. | | | |

| Czwartek. | Piątek. | Sobota. | Niedziela. |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| Godziny. | Poniedziałek. | Wtorek. | Środa |
|---|---|---|---|
| 7–8 | | | |
| 8–9 | | | |
| 9–10 | | | |
| 10–11 | | | |
| 11–12 | | | |
| 12–1 | | | |
| 1–2 | | | |
| 2–3 | | | |
| 3–4 | | | |
| 4–5 | | | |
| 5–6 | | | |
| 6–7 | | | |
| 7–8 | | | |
| 8–9 | | | |

| Czwartek | Piątek | Sobota | Niedziela |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| Dnie | Godziny | I Klasa. | II Klasa. | Klasa. | Klasa |
|---|---|---|---|---|---|
| Poniedziałek | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Wtorek | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Środa | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| Klasa | Klasa | Klasa | Klasa. | Klasa: |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

| Dnie. | Godziny. | I Klasa. | II Klasa. | Klasa. | Klasa. |
|---|---|---|---|---|---|
| Poniedziałek. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Wtorek. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Środa. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| Klasa. | Klasa. | Klasa. | Klasa. | Klasa. |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

| Dnie. | Godziny | I Klasa | II Klasa. | Klasa | Klasa |
|---|---|---|---|---|---|
| Czwartek. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Piątek. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Sobota. | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| Klasa. | Klasa. | Klasa. | Klasa. | Klasa. |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

| Dnie | Godziny | I Klasa | II Klasa | Klasa | Klasa |
|---|---|---|---|---|---|
| Czwartek | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Piątek | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| Sobota | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| Klasa | Klasa. | Klasa | Klasa. | Klasa. |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

# Wspomnienia historyczne.

## Styczeń.

1. 1467 Urodził się Zygmunt I., król polski. — Ulryk Zwingli urodz. 1484.
2. 1235 Grzegórz IX., papież, potwierdził nadanie Ziemi Dobrzyńskiej Krzyżakom.
3. 1661 zaczął w Polsce pierwszy stały dziennik wychodzić. — 1795 trzeci podział Polski.
4. 1663 zwycięztwo Stef. Czarnieckiego pod Starynimem. — 1785 Jakób Grimm urodz.
5. 1477 bitwa pod Nancy. — 1762 Elżbieta cesarzowa rosyjska umarła.
6. 1355 księstwo Mazowieckie przez pakta do Polski wcielone. — 1682 Jerzy Fox †.
7. 1428 zjazd w Łucku Zygmunta cesarz., Wład. Jagiełły króla polsk. i Witolda ks. lit.
8. 1642 Galilei †. — 1715 Fenelon †.
9. 1433 przywileje i nadania Wład. Jagiełły w Jedlni uczynione, spisane i potwierdzone w Krakowie..
10. 1633 Władysław IV. obległ Smoleńsk z Moskalami. — 1778 Lineusz †.
11. 1501 sejm w Piotrkowie. — 1562 Jan Przerębski †. — 1655 Chmielnicki zwyciężony.
12. 1280 Zawisza, 1329 Radlicki, biskupi krakowscy, umierają. — 1746 J. H. Pestalozzi urodz.
13. 1697 w bezkrólewiu po Janie III. konfederacyja wojska i komisyja we Lwowie.
14. 1329 sejm za Wład. Łokietka w Chęciuie. — 1851 Gasp. Spontini †.
15. 1582 pokój Stefana Batorego pod Zapołoczem z Moskalami. — 1754 Fryd. Gedike urodz.

16. 1649 Jan Kazimierz na koronacyją do Krakowa wjeżdża. — 1789 Aug. Neander urodz.
17. 1649 koronacyja Jana Kazimierza, 1734 Augusta III. — 1706 Benjamin Franklin urodz.
18. 1701 koronacyja Fryderyka I., króla pruskiego. Uroczystość koronacyjna.
19. 1608 Bernard Maciejowski, kard. arcyb. gnieźnieński †.
20. 1320 Władysław Łokietek koronowany. — 1848 Krystyan VIII. król duński †.
21. 1633 hołd Jerzego Wilhelma elektora brandenburskiego królowi i koronie Polski.
22. 1600 Jerzy Radziwiłł, kardynał biskup †. — 1729 Gotfryd Efr. Lessing urodz.
23. 1579 unija w Utrecht. — 1649 potwierdzenie praw koronnych przez Jana Kazimierza.
24. 1706 potyczka między Szwedami i Polakami pod Grodnem. — 1712 Fryderyk II. Wielki urodz.
25. 1588 zwycięztwo Jana Zamojskiego pod Byczyną. — 1576 Hans Sachs †.
26. 1507 koronacyja Zygmunta I., króla polskiego. — 1823 E. Jenner †.
27. 1510 pożar w żupie Wieliczki. — 1756 W. A. Mozart urodz. — 1786 H. Joach. Zieten †.
28. 814 Karol Wielki †. — 1725 Piotr Wielki †.
29. 1814 Jan Gottl. Fichte †. — 1720 Fr. Bohomolec urodz.
30. 1638 zwycięztwo Stan. Koniecpolskiego nad Tatarami u Sinych wód.
31. 1637 Bzowski, dominikan †. — 1697 Jerzy Lubomirski, marszałek i hetman †.

---

## Luty.

1. 1657 zwycięztwo Sapiehy nad Szwedami. — 1733 August II., król polski †.
2. 1594 Palestrina †. — Sejm koronacyji Jana III., króla, w Krakowie.
3. 1280 Leszek Czarny Litwę i Jadźwingów zwycięża.
4. 856 Rabanus Maurus †. — 1502 wjazd uroczysty do Krakowa Heleny, małżonki Alexandra króla.
5. 1633 Władysław IV. na koronacyją do Krakowa wjeżdża.
6. 1295 Przemysław zabity w Rogoźnie. — 1620 Fryderyk Wilhelm, wielki elektor, urodz.
7. 1633 Władysław IV. na Pacta conventa przysięga.

8. 1576 Stefan Batory na Pacta conventa przysięga. — 1807 bitwa pod Pruską Iławą.
9. 1135 Wiślica ze szczętem zrabowana. — 1434 ślub Kazimierza Jagiełłowicza.
10. 1564 Częstochowa gorzeje. — 1650 Kartezyusz †. — 1755 Montesquieu †.
11. 1579 wjazd Stefana Batorego do Grodna. — 1814 bitwa pod Montmirail.
12. 1798 Stanisław August, król, †. — 1804 Im. Kant †. — 1834 Fr. Schleiermacher †.
13. 1609 Parnawa zdobyta na Szwedach przez Jana Karóla Chodkiewicza.
14. 1386 chrzest Władysława Jagiełły w Krakowie. — 1817 Onufry Kopczyński †.
15. 1763 pokój zawarty w Hubertsburg. — 1781 Gotfr. Efr. Lessing †.
16. 1241 Tatarzy w Krakowie. — 1386 koronacyja Władysława Jagiełły. — 1497 F. Melanchton urodz.
17. 1564 Michał Angelo Bounarrotti †. — 1827 Jan Henr. Pestalozzi †.
18. 1546 Marcin Luter †. — 1587 Maryja Sztuart †. — 1814 bitwa pod Montereau. — 1700 zaprowadzenie poprawnego kalendarza u protestantów.
19. 1473 Mikołaj Kopernik urodz. — 1594 Zygmunt III. w Upsalu na królestwo szwedzkie koronowany. — 1812 Zygmunt Krasiński ur.
20. 1694 Voltaire ur. — 1790 cesarz Józef II. †. — 1810 Andrzej Hofer zastrzelony.
21. 1584 Koronacyja Zygm. Augusta. — 1677 Bened. Spinoza †. — 1809 zdobycie Saragosy. — 1575 Henryk Walezyusz koronowany.
22. 1382 Częstochowa założona. — 1732 Jerzy Washington ur.
23. 303 początek prześladowania chrześcijan dyoklecyańskiego. — 1766 Stan. Leszczyński †.
24. 1582 poprawienie kalendarza przez Grzegorza pap. — 1848 rewolucya w Paryżu.
25. 1525 bitwa pod Pawią. — 1634 Wallenstein †. — 1713 Fryderyk I., król pruski, †.
26. 1383 Jadwiga, córka Ludwika króla polskiego i węgierskiego, królową polską obrana.
27. 274 cesarz Konstantyn Wielki urodz. — 1531 związek Szmalkaldzki.
28. 1572 Katarzyna Austryacka, małżonka Zygmunta Augusta †. — 1825 Miss Grace Kennedy † (ur. 1782).

## Marzec.

1. 1634 Moskale składają broń pod nogi Władysława IV.
2. 1258 sejm w Korczynie za Bolesława Wstydliwego. — 1840 Wilh. Olbers †.
3. 321 pierwsze rozporządzenie cesarza Konstantyna Wielk. względem święcenia Niedzieli.
4. 1576 ślub i koronacyja Stefana, króla, z Anną Jagiell.
5. 1494 wielki pożar w Gdańsku. — 1534 Correggio †.
6. 1474 Michał Anioł Bounarotti ur. — 1577 Tatarowie zwyciężeni u Skowrodek.
7. 967 Polacy do wiary nawróceni, bałwany pogańskie palą.
8. 1223 Wincenty Kadłubek †. w Jędrzejowie. — 1791 Kazimierz Brodziński ur.
9. 1307 Gedymin książę litewski do Prus wpada i ginie. — 1523 Ulryk Hutten †.
10. 1776 Ludwika, królowa, małżonka Fryd. Wilh. III. ur.
11. 1544 Torquato Tasso ur. — 1646 śmierć Stan. Koniecpolskiego, hetm. wielk. kor.
12. 1333 śmierć Władysława Łokietka. — 1365 założenie uniwersytetu w Wiedniu.
13. 1683 Traktaty podpisane w Warszawie na wojnę turecką za Jana III.
14. 1500 założenie uniwersytetu Alcala. — 1803 Fryd. Bog. Klopstock †.
15. 44 prz. Chr. C. Juliusz Cezar †. — 1514 Smoleńsk zdradą przez Moskali zdobyty.
16. 1329 Jan, król czeski, prawa do Ziemi Dobrzyńskiej Krzyżakom ustąpił.
17. 1238 Henryk Brodaty † — 1846 W. Bessel astronom †. — 1848 powstanie w Wenecyi.
18. 1314 Jak. Molay w Paryżu spalony. — 1852 Ernest Raupach †.
19. 1503 Fryderyk kardynał arcybiskup gnieźnieński †. — 1744 Katarzyna z Opalińskich Leszczyńska †.
20. 1239 Hermann de Salza, mistrz krzyżacki †. — 1726 Izaak Newton †.
21. 1685 Jan Seb. Bach ur. — 1763 Jean Paweł Richter ur.
22. 1656 Wrzeszczowski z Szwedami dobywa Częstochowy. — 1832 J. Wolfgang Göthe †. — 1786 Joachim Lelewel ur.
23. 1589 Marcin Kromer †. — 1849 bitwa pod Novara.
24. 1603 Elżbieta królowa angielska †. — 1844 Bertel Thorwaldsen †.

25. 1683 hołd Fryderyka książęcia kurlandzkiego. — 1801 Novalis †.
26. 1471 Władysław, syn Kazimierza, królem czeskim obrany. — 1827 Ludw. van Beethoven †.
27. 1629 Toruń przez Gierarda Dönhoffa od Szwedów oswobodzony.
28. 1657 Jerzy Rakoczy, książę siedmiogrodzki, w Krakowie piorunem przestraszony.
29. 1611 Szymon Syreniusz †. — 1656 Szwedzi pod Warką zwyciężeni.
30. 1282 nieszpory sycylijskie. — 1675 sejm elekcyji Jana III. w Warszawie.
31. 1683 przymierze między Janem III. a Leopoldem cesarzem przeciw Turkom uczynione. — 1814 wjazd związkowych do Paryża.

---

## Kwiecień.

1. 1732 Józef Haydn ur. — 1750 Hugo Kołłątaj ur.
2. 1658 Andrzej Leszczyński, arcybiskup gnieźnieński †. — 1791 Mirabeau †.
3. 1025 Bolesław Chrobry w Poznaniu †. — 1241 Tatarowie Kraków palą.
4. 1581 Jakób Uchański, arcyb. gnieźnioński, prymas †.
5. 1144 Kazimierz Sprawiedliwy w Krakowie †, panował lat siedmnaście.
6. 1361 pierwsze założenie akademii krakowskiej. — 1483 Rafael ur. — 1520 Rafael †.
7. 1347 założenie akademii w Pradze. — 1574 początek elekcyji Henryka Walezyusza.
8. 1835 Wilhelm Humboldt †. — 1850 Prusy nabywają Hohenzollern-Hechingen.
9. 1241 klęska Polaków pod Lignicą. — 1747 Leopold książę dessawski †.
10. 1741 bitwa pod Mollwitz. — 1814 bitwa pod Toulouse.
11. 1090 Bolesław Śmiały †. — 1713 pokój w Utrecht. — 1814 abdykacya Napoleona.
12. 1457 Malborg przez Kazimierza IV. od Krzyżaków kupiony.
13. 1598 edykt w Nantes. — 1759 Jerzy Händel †.
14. 1524 bitwa pod Sessią; Bayard †.
15. 1528 wjazd uroczysty Bony Sforcyi, małżonki Zygmunta I., do Krakowa.

16. 1676 nadanie przywilejów szlachcie kurlandzkiej. — 1788 Buffon †.
17. 1790 Benj. Franklin †. — 1796 Stanisław Jachowicz ur.
18. 1521 Marcin Luther w Worms. — 1576 wjazd Stefana króla po elekcyji do Krakowa.
19. 1528 koronacyja w Krakowie Bony Sforcyi małżonki Zygmunta I.
20. 1501 śmierć Jana Albrychta króla w Toruniu.
21. 753 przed Chr. założenie Rzymu. — 1545 wesele Zygmunta Augusta w Krakowie.
22. 1488 Ulryk Hutten ur. — 1724 Imm. Kant ur.
23. 1564 i 1616 Wil. Shakspeare ur. i †. — 1660 pokój zawarty w Oliwie.
24. 1528 w Krakowie tysiąc domów i wiele ludzi gorzeje.
25. 1333 Kazimierz W. w Krakowie koronowany. — 1595 Torquato Tasso †.
26. 1606 Mniszkówna Dymitrowi zaślubiona. — 1794 Ludwik Uhland ur.
27. 1506 założenie akademiji w Frankfurcie. — 1814 Napoleon wyjeżdża na Elbę.
28. 1512 Szydłowiecki pod Wiśniowcem zwycięża Tatarów Perekopskich.
29. 1688 Fryderyk Wilhelm Wielki, elektor brandenburski †.
30. 1310 Kazimierz Wielki, król polski, urodz. — 1632 Zygmunt III., król, †.

---

## Maj.

1. 1576 koronacyja królowej Anny, małżonki Stef. Batorego.
2. 1068 wzięcie Kijowa przez Bolesława Śmiałego. — 1813 bitwa pod Lützen.
3. 1660 zawarty traktat w Oliwie. — 1791 na sejmie w Warszawie odmiana rządu.
4. 1631 Gustaw Adolf pod Berlinem. — 1666 Kasper Miaskowski zrywa sejm.
5. 1622 Szymon Szymonowicz †. — 1821 Napoleon na wyspie Helenie †.
6. 1757 bitwa pod Pragą (marszałek Szwerin †). — 1761 Stan. Jundziłł ur.
7. 1574 elekcyja na Królestwo Henryka Walezyusza. — 1574 Lublin gorzeje.
8. 1078 śmierć świętego Stanisława Szczepanowskiego. — 1331 zwycięstwo pod Połowcami.

9. 1805 Fryderyk Szyller †. — 1849 przytłumienie powstania w Dreźnie.
10. 1480 Jan Długosz †. — 1631 Tilly zdobywa Magdeburg. 1667 Ludwika Gozaga †.
11. 1849 powstanie w Baden. — 1661 nadanie Tykocina i Białegostoku Stef. Czarnieckiemu.
12. 1571 śmierć Romana książęcia Sanguszki. — 1670 August II. król Polski ur.
13. 1618 początek wojny trzydziestoletniej. — 1851 Fr. Tieck, rzeźbiarz †.
14. 1792 konfederacyja Targowicka. — 1801 Ignacy Krasicki †. — 1848 powstanie w Neapolu.
15. 1697 sejm elekcyi w Warszawie po śmierci Jana III. — 1848 powstanie w Paryżu i Wiedniu.
16. 1561 Jan Tarnowski hetman †. — 1703 Piotr wielki zakłada Petersburg.
17. 1742 bitwa pod Chotusitz. — 1838 Talleyrand †. — 1612 Dymitr car w Moskwie zabity.
18. 1674 Jan Sobieski królem obrany. — 1800 Suwarow †.
19. 1531 Jan Łaski, arcybiskup Gnieźnieński †. — 1762 J. G. Fichte ur.
20. 1648 Władysław IV. król Polski †. — 1834 Lafayette †. 1841 Jul. Urs. Niemcewicz †.
21. 1571 Stefan Batory księciem Siedmiogrodzkim obrany. — 1809 bitwa pod Aspern.
22. 1775 część nadnotecka przypada do Prus. — 1850 zamach na życie Fryd. Wilhelma IV.
23. 1648 bitwa pod Żółtemiwodami. — 1588 pogrzeb Stefana Batorego.
24. 1543 Mikałaj Kopernik †. — 1807 upadek Gdańska.
25. 1471 Wład. syn Kaz. Jagiełłowicza królem Czeskim obrany.
26. 1569 przywrócenie księstwa Wołyńskiego do Korony Polsk.
27. 1265 Dante ur. — 1568 Polacy ze zdobyczą z Moskwy wychodzą.
28. 1609 Moskwa pod Torczycą przez Krzysztofa Zborowskiego zwyciężona.
29. 1592 koronacyja Anny Austryaczki, małżonki Zygmunta III.
30. 1576 koronacyja Stefana Batorego. — 1778 Voltaire †.
31. 1434 Władysław Jagiełło †. — 1740 Fryderyk Wilhelm I. król †. — 1809 Józef Haydn †.

## Czerwiec.

1. 1694 założenie akademiji w Hali. — 1263 Podlasie do Polski przyłączone.
2. 445 Wandalowie pod Genzerychem zdobywają Rzym. — 1624 Jan III. król Polski ur.
3. 1605 śmierć Jana Zamojskiego w Zamościu.
4. 1102 Władysław Herman †. — 1611 Polacy Smoleńsk biorą. — 1745 bitwa pod Hohenfriedeberg.
5. 1569 księztwo Kijowskie do Polski przywrócone. — 1826 Karól Marya Weber †.
6. 1443 trzęsienie ziemi w Polsce.
7. 1492 Kazimierz Jagiełłowicz †. — 1840 Fryd. Wilhelm III. król Pruski †.
8. 1339 Aldona małżonka Kazimierza Wielkiego †. — 1603 Stanisław Karnkowski †.
9. 1595 Władysław IV., syn Zygmunta III., z Anny Austryaczki ur.
10. 1190 cesarz Fryderyk Barbarosa †. — 1831 Dybicz Zabałkański †.
11. 1451 na sejmie w Piotrkowie pierwszeństwo arcybiskupów Gnieźnieńskich utwierdzone.
12. 1646 Jakób Sobieski, ojciec Jana III. † — 1773 A. Rothschild ur.
13. 1611 Smoleńsk przez Zygmunta III. zdobyty. — 1634 pokój Władysława IV. z Moskalami.
14. 1807 bitwa pod Frydlandem; Francuzi zwyciężyli Rosyan.
15. 1399 śmierć Jadwigi królowej, małżonki Władysława Jagiełły.
16. 1649 śmierć Stanisława Lubomirskiego wojewody Krakowskiego.
17. 1696 śmierć Jana III. króla w Wilanowie. — 1789 początek rewolucyji francuzkiej.
18. 1815 bitwa pod Belle-Alliance. — 1574 Henryk Walezyusz z Krakowa ujechał.
19. 1205 zwycięstwopod Zawichostem nad Romanem księciem Ruskim.
20. 1229 Iwon Odrowąż biskup Krakowski †. — 1566 Zygmunt III. król Polski ur.
21. 1529 klęska Krzyżaków pod Włocławkiem. — 1629 Szymon Zimorowicz †
22. 1264 Bolesław Wstydliwy Jadźwingów do szczętu znosi.
23. 1601 zwycięztwo nad Szwedami pod Kokenhauzen przez Krzysztofa Radziwiłła.

24. 1133 Krzyżacy Nakielską okolicę pustoszą. — 1630 Gustaw Adolf na wyspie Rugiji.
25. 1447 Kazimierz Jagiełłowicz na tron wstępuje. — 1576 zwycięstwo nad Turkami i Tatarami.
26. 1295 koronacyja Przemysława II. — 1660 potwierdzenie traktatu Oliwskiego.
27. 1660 zwycięstwo nad wojskiem moskiewskiem pod Połonką Pawła Sapiehy.
28. 1734 Gdańsk przez Moskali zdobyty. — 1813 Scharnhorst †. — 1849 bitwa pod Muggensturm.
29. 1470 wstąpił na tron Węgierski Władysław, syn najstarszy Kazimierza Jagiełłowicza, króla Polskiego.
30. 1651 zwycięstwo Jana Kazimierza pod Beresteczkiem nad Chmielnickim i Tatarami.

---

## Lipiec.

1. 1569 unia Litwy z Koroną. — 1646 Gotfr. Wilh. Leibnitz ur.
2. 1669 elekcya Michała Wiśniowieckiego na królestwo. — 1724 Klopstock ur.
3. 1649 Jan Kazimierz zwyciężył Kozaków i Tatarów pod Zborowem.
4. 1228 Konrad Krzyżakom Prusy nadaje. — 1715 Gellert ur.
5. 1433 sejm w Korczynie. — 1849 bitwa pod Fryderycyą.
6. 1373 i 1415 Jan Hus ur. i †. — 1476 Jan Regiomontanus †. 1607 bitwa pod Guzowem.
7. 1807 pokój w Tylży zawarty między Francyą a Rosyą.
8. 1610 zwycięstwo pod Kałużynem Stan. Żółkiewskiego. — 1709 bitwa pod Pułtawą.
9. 1807 pokój w Tylży między Francyą i Prusami. — 1330 Krzyżacy zamek Nakło palą.
10. 1509 Jan Kalwin ur. — 1685 zwycięstwo pod Jazłowcem Michała Rzewuskiego.
11. 1536 Erazm Roterdamczyk †. — 1657 zwycięstwo Czarnieckiego pod Magierowem.
12. 1345 Jan Ślepy, król czeski Kraków oblega. — 1806 związek Nadreński ustanowiony.
13. 1660 bitwa pod Mątwami. — 1798 i 1817 Aleksandra, cesarzowa Rosyi ur. i zaślubiona.
14. 1508 zwycięztwo pod Orszą Konstantyna Ostrogskiego. — 1850 Aug. Neander †.
15. 1410 zwycięztwo pod Grunwaldem nad Krzyżakami przez Władysława Jagiełłę.

16. 1632 konfederacya Warszawska po śmierci Zygmanta III. 1664 And. Gryfiusz †.
17. 1490 koronacya na królestwo Węgierskie Wład. Jagiełłowicza.
18. 1373 Franc. Petrarka †. — 1572 Zygmunt August król w Knyszynie †.
19. 1810 Ludwika, królowa, małżonka Fryd. Wilhelma III †.
20. 1304 Franz. Petrarka ur. — 1570 przywileje nadane Gdańskowi od Zygmunta Augusta.
21. 1567 wojska Moskiewskie zwyciężone u Czaśnik przez Romana Sanguszkę.
22. 1812 bitwa pod Salamanka. — 1849 Rasztadt poddaje się.
23. 1612 klęska Polaków nad rzeką Dzieszną, Stefan Potocki od Turków w niewolą wzięty.
24. 1848 zwycięstwo Radetzkiego pod Custozza.
25. 1434 koronacya Wład. Jagiełłowicza na król. Polskie.
26. 1844 zamach na życie króla Pruskiego.
27. 1473 uroczyste przyjęcie w Krakowie posła Papieża Sixta IV.
28. 1742 pokój zawarty w Berlinie, koniec pierwszej wojny Szląskiej
29. 1683 Jan III. idąc pod Wiedeń, znajduje się w Krakowie.
30. 1434 Smoleńsk zdobyty przez Witołda W. Ks. Litewskiego.
31. 1649 Janusz Radziwiłł hetman zwycięża Tatarów i Kozaków.

---

## Sierpień.

1. 1252 założenie miasta Memel. — 1520 Zygm. August ur. 1754 bitwa pod Minden.
2. 1519 klęska pod Sokalem. — 1552 ugoda Pasawska. — 1793 bitwa pod Abukir.
3. 1770 Fryderyk Wilhelm III. król Pruski ur.
4. 1704 zdobycie Gibraltaru przez Anglików. — 1310 Krzyżacy Gdańsk dobywają.
5. 70 spalenie świątyni w Jeruzalem. — 1772 ugoda o pierwszy podział Polski.
6. 1806 Franciszek II. składa koronę cesarstwa Niemieck.
7. 1814 wjazd króla do Berlina. — 1848 Berzeliusz †.
8. 1631 wojska koronne stoją pod Chocimem. — 1658 Tatarzy pod Podhajcami zwyciężeni.
9. 1650 Jerzy Ossoliński †. — 1830 Ludwik Filip królem Francuzów obrany.
10. 1808 Jan Albertrandy †. — 1809 założenie akademii w Berlinie.

11. 1569 potwierdzenie unii Litwy z Koroną na sejmie Lubelskim. 1851 Ludwik Oken †.
12. 1714 królowie z domu Hanowerskiego na tronie Angielskim. — 1759 bitwa pod Kunersdorf,
13. 1849 kapitulacya Gergeja pod Vilagos.
14. 1537 Ignacy Lojola stanowi zakon Jezuitów na Montmartre.
15. 1688 Fryderyk Wilhelm I., król. ur. — 1760 bitwa pod Lignicą. — 1769 Napoleon ur.
16. 1717 zwycięztwo Eugeniusza nad Turkami pod Belgradem.
17. 1544 założenie akademii w Królewcu. — 1786 Fryderyk II., Wielki, król †.
18. 1853 trzęsienie ziemi w Tebach, zniszczenie miasta i okolicy.
19. 1506 śmierć Aleksandra króla Pol. — 1669 elekcya Michała króla Polskiego.
20. 1672 Turcy Kamieniec biorą. — 1691 L. Bourdalone ur.
21. 1838 Adalbert Chamisso †. — 1435 koronacya Władysława Polskiego i Węgierskiego króla.
22. 1531 zwycięstwo pod Obertynem Jana Tarnowskiego. — 1584 Jan Kochanowski †.
23. 1494 klęska Polaków pod Wiśniowcem. — 1813 bitwa pod Gross-Beeren.
24. 1656 Szwedzi zwyciężeni przez Stefana Czarnieckiego pod Trzemesznem.
25. 1744 Jan Gotfr. Herder ur. — 1758 bitwa pod Zorndorf.
26. 1813 Teodor Körner †. — 1850 Ludwik Filip †.
27. 1492 wstąpienie na tron Jana Alberta. — 1770 G. Wilh. Hegel ur.
28. 1514 Moskale zwyciężeni pod Berezyną przez Boratyńskiego. — 1749 Jan Wolfg. Göthe ur.
29. 1523 Ulryk Hutten †. — 1677 Andrzej Olszowski, prymas, w Gdańsku †. — 1756 Jan Śniadecki ur.
30. 1757 bitwa pod Gr. Jagersdorf. — 1813 bitwa pod Culm.
31. 1289 Leszek Czarny w Krakowie †. — 1579 Połock przez Stef. Batorego zdobyty.

## Wrzesień.

1. 1674 Trembowla obroniona przez Jana III. — 1776 Ludw. Henr. Chr. Hölty †.
2. 1621 pierwsze zwycięstwo pod Chocimem Jana Karola Chodkiewicza.
3. 1603 Jan Jonston ur. — 1612 J. K. Chodkiewicz Moskali zwyciężył.

4. 1606 zjazd w Wiślicy. — 1656 wjazd Jana Kazimierza do Krakowa po wypędzeniu Szwedów.
5. 1725 ślub Maryi Leszczyńskiej z Ludwikiem XV. — 1733 Wieland ur. — 1767 A. W. Schlegel ur.
6. 1450 zwycięstwo pod Krasną. — 1580 Wielko-Łuki na Moskwie zdobyte. — 1813 bitwa pod Dennewitz.
7. 1764 Stanisław August Poniatowski królem obrany. — 1812 bitwa nad Moskwą.
8. 1514 Konstantyn Ostrogski nad rzeką Kropiwną Moskali zwycięża.
9. 1596 śmierć Anny królowej, małżonki Stefana Batorego, córki Zygmunta I.
10. 1538 potwierdzenie praw i przywilejów prowincyi Pruskiej.
11. 1621 drugie zwycięstwo nad Osmanem J. K. Chodkiewicza.
12. 1683 zwycięstwo pod Wiedniem Jana III. — 1819 książę Blücher Wahlstatt †.
13. 1382 Ludwik król Polski i Węgierski †. — 1739 Krzysztof Kluk ur.
14. 1769 Fryd. Henr. Aleks. Humboldt ur. — 1794 bitwa pod Herzogenbusch.
15. 1697 koronacya Augusta II. elektora Saskiego. — 1844 Gustaw Hugo †.
16. 1622 zdobycie Heidelberga przez Tillego. — 1668 abdykacya Jana Kazimierza.
17. 1660 zwycięstwo nad Moskwą Stanisława Potockiego pod Cudnowem.
18. 1354 bitwa z Krzyżakami pod Chojnicami. — 1848 powstanie w Frankfurcie nad Menem.
19. 1657 pakta welawskie z Fryderykiem Wilhelmem książęciem pruskim zawarte.
20. 1492 koronacya Jana Alberta króla. — 1794 trzecia bitwa pod Keiserlautern.
21. 1812 Em. Schikaneder †. — 1845 Klementyna Hofmanowa z Tańskich †.
22. 1536 Jan Agricola †. — 1699 Turcy Kamieńca ustępują przez traktaty.
23. 1846 odkrycie planety Neptuna przez dr. Galle w Berlinie.
24. 1621 Jan Karol Chodkiewicz, hetman wielki litewski, wojewoda wileński †.
25. 1744 Fryderyk Wilhelm II., król pruski ur.
26. 1629 Zygmunt III. zwycięża Szwedów pod Trzcianną.
27. 1332 zwycięstwo pod Połowcami nad Krzyżakami Wład. Łokietka. — 1605 zwycięstwo pod Kircholmem nad Szwedami Jana Kar. Chodkiewicza. — 1612 Piotr Skarga †

28. 1334 nadanie herbu Jelitczykom, w osobie Saryusza rannego pod Połowcami.
29. 1669 koronacya Michała Wiśniowieckiego króla polskiego.
30. 1658 przymierze Jana Kazimierza z Danią przeciw Szwedom zawarte w Kopenhadze.

---

## Październik.

1. 1386 założenie akademii w Heidelbergu. — 1756 bitwa pod Lowositz.
2. 1515 śmierć Barbary, małżonki Zygmunta I. — 1853 Franciszek Arago w Paryżu †.
3. 1609 zwycięstwo Chodkiewicza nad Mansfeldem wodzem szwedzkim.
4. 1741 Franciszek Karpiński ur. — 1750 Franciszek Dyonizy Kniaźnin ur.
5. 1720 J. G. Sulzer ur. — 1764 P. K. Buttmannn ur.
6. 1550 Samuel Maciejowski biskup krakowski †. — 1848 powstanie w Wiedniu.
7. 1620 klęska cecorska; St. Żółkiewski ginie, Koniecpolski w niewolę idzie.
8. 1587 przyjazd do Oliwy ze Szwecyi nowo obranego Zygmunta III. i przysięga.
9. 1621 przymierze pod Chocimem zawarte z Osmanem. — 1841 Fr. Schinkel †.
10. 1310 zwycięstwo nad Krzyżakami pod Koronowem. — 1794 klęska pod Maciejowicami.
11. 1506 pogrzeb Aleksandra króla w Wilnie. — Wilhelm Albers, astronom 1758 ur.
12. 1492 Kolumbus odkrył Wschodnie Indye. — 1689 elektor Fryderyk III Bonn zdobywa.
13. 1815 Joachim Murat, król neapolitański zastrzelony.
14. 1809 pokój między Austryą a Francyą w Wiedniu zawarty.
15. 1621 powrót po zwycięstwie pod Chocimem do ojczyzny. 1795 Fryderyk Wilhelm IV. król ur.
16. 1708 Albr. Haller, poeta i badacz natury ur. — 1793 Maria Antonieta, królowa francuzka †.
17. 1797 pokój zawarty w Campo formio.
18. 1502 założenie akademii w Wittenbergu. — 1818 założenie akademii w Bononii.
19. 1595 potyczka pod Cecorą. — 1827 Rosyanie pod Paszkiewiczem zdobywają Erywan.
20. 1676 ur. się we Lwowie Stanisław Leszczyński król polski.

21. 1578 zwycięstwo pod Gawą Andrz. Sapiechy nad Moskalami. — 1805 bitwa pod Trafalgar.
22. 1603 Zamojski Tatarów z Multan wypędza.
23. 1172 Bolesław Kędzierzawy †. — 1842 Wilh. Geseniusz †,
24. 1273 Rudolf I., Habsburski, cesarzem koronowany.
25. 1853 odsłonienie pomnika Mik. Kopernika w Toruniu.
26. 1706 batalia pod Kaliszem między Augustem II. a Szwedami.
27. 1467 Er. Roterdamczyk ur. — 1806 Napoleon w Berlinie.
28. 1423 statut Wład. Jagiełły na sejmie w Warce ogłoszony. — 1760 N. Gneizenau ur.
23. 1524 Władysław Warneński ur. — 1536 Piotr Tomicki biskup krakowski †.
30. 1609 Zygmunt II. oblega Smoleńsk.
21. 1517 Luter przybija swe tezy. — 1607 Wawrzyniec Goślicki w Ciążyniu †.

## Listopad.

1. 1497 Filip Kallimach, nauczyciel synów Kazimierza Jagiełłowicza, †. — 1539 Joachim II., elektor brandenburski przyjmuje wyznanie Lutra.
2. 1777 Aloizy Żółkowski ur. — 1846 Izajasz Tegner †.
3. 1370 Kazimierz Wielki w Krakowie †. — 1632 elekcyja Władysława IV. — 1760 bitwa pod Torgau.
4. 1794 rzeź pamiętna na Pradze. — 1847 Feliks Mendelssohn †.
5. 1668 konfederacyja warszawska po abdykacyji Jana Kazimierza. — 1757 bitwa pod Rossbach.
6. 1632 bitwa pod Lützen: Gustaw Adolf †. — 1807 Karol Antoniewicz ur.
7. 1371 koronacyja Ludwika króla węgierskiego i polsk. — 1773 F. W. Seydlitz, jenerał kawaleryji †.
8. 1726 korektura praw i sposób sądownictwa w Polsce poprawiony.
9. 1674 Jan III., hetman wielki koronny, Turków pod Chocimem zwycięża.
10. 1444 klęska pod Warną. — 1483 Marcin Luter ur. — 1513 Stan. Orzechowski ur. — 1756 Scharnhorst ur.
11. 1227 Leszek Biały w Gąsawie zabity. — 1759 Fryderyk Schiller ur.
12. 1424 Ziska na morową zarazę †.
13. 1550 koronacya Barbary Radziwiłłównej. — 1782 Izaj. Tegner ur. — 1801 królowa Elżbieta ur.

14. 1716 Godfr. Wilh. Leibnitz †. — 1768 Jerzy Sam. Bandtkie ur. — 1831 G. W. Hegel †. — 1852 Karol Antoniewicz †.
15. 1741 Jan Kasp. Lavater ur. — 1796 bitwa pod Arcole.
16. 1611 hołd Jana Zygmunta na księstwo Pruskie. — 1797 Fryderyk Wilhelm II., król †.
17. 1558 śmierć Bony królowej polskiej, matki Zygmunta Augusta. — 1787 Gluck †.
18. 1955 Szwedzi Częstochowę oblegają. — 1851 Ernest August, król hannowerski †.
19. 1370 pogrzeb Kazimierza W. — 1770 Thorwaldsen ur.
20. 1454 statut w Nieszawie Kazimierza Jagiełłowicza potwierdzony.
21. 1694 Voltaire ur. — 1768 Fryderyk Schleiermącher ur.
22. 1535 śmierć Bernarda Wapowskiego, pisarza dziejów polskich. — 1767 Andrzej Hofer ur.
23. 1764 Gustaw Hugo ur. — 1798 Klementyna z Tańskich Hofmanowa ur.
24. 1632 Bened. Spinoza ur. — 1700 bitwa pod Olkiennikami, śmierć Fr. Sapiehy,
25. 1764 koronacyja, 1795 abdykacyja Stanisława Augusta, ostatniego króla polskiego.
26. 1702 rada w Toruniu z okoliczności wojny szwedzkiej.
27. 1654 Fr. Rud. Ludw. Canitz ur. — 1840. Kar. Rotteck †.
28. 1059 pogrzeb Kazimierza I. w Poznaniu. — 1855 Adam Mickiewicz †,
29. 1780 Maryja Teresa †. — Józef II. na tron wstępuje.
30. 1645 Mateusz Bembus †. — 1768 Jędrzej Śniadecki ur.

## Grudzień.

1. 1640 rewolucyja w Portugaliji. — 1825 Aleksander I., ces. rosyjski †.
2. 1804 koronacya Napoleona. — 1852 proklamacyja cesarstwa w Paryżu.
3. 1582 ustanowienie biskupstwa inflanckiego,
4. 1409 założenie akademiji w Lipsku. — 1563 zakończenie koncylium trydenckiego.
5. 1384 zjazd elekcyjny pod Wiślicą. — 1757 bitwa pod Leuthen. — 1791 W. A. Mozart †.
6. 1315 bitwa pod Morgarten. — 1829 Jan Paw. Woronicz †.
7. 1516 Tatarowie pod Międzyborzem od Polaków porażeni. — 1824 bitwa pod Ayacucho w Peru.
8. 1507 wybranie na tron Zygmunta I. w Piotrkowie.

9. 1653 Kazimierz pod Zwańcem gromi Tatarów. — 1636 Fabian Birkowski †.
10. 1848 obór Ludw. Napoleona prezesem republiki franc.
11. 1501 Aleksander król koronowany przez brata swojego kardynała arcybisk. gnieźnieńskiego.
12. 1653 Cromwell protektorem Angliji mianowany. — 1777 Albr. Haller †.
13. 1545 początek koncylium trydenckiego. — 1586 Stefan Batory †. — 1761 Moskale zdobywają Kołobrzeg.
14. 1349 Baryczka, kapłan utopiony. — 1431 koncylium w Bazylei, — 1799 Jerzy Washington †.
15. 1595 Jerzy Ossoliński, kanclerz ur. — 1745 bitwa pod Kesselsdorf.
16. 1642 żupy solne w Wieliczce gorejąą. — 1742 książę Blücher de Wahlstatt ur.
17. 1697 śmierć Eleonory Austryaczki, małżonki Michała króla polskiego,
18. 1773 początek powstania w północ. Ameryce.. — 1786 K. M. Weber ur. — 1803 Jan Gotfr. Herder †.
19. 1658 Toruń na Szwedach zdobyty przez Jana Kazimierza.
20. 1332 przymierze między Wład. Łokietkiem a Bolesławem książęciem szląskim.
21. 1658 zwycięztwo pod Goldyngą w Holzacyi Stefana Czarnieckiego nad Szwedami.
22. 1394 Hen. książę opolski †. — 1530 Wilib. Pirkheimer †.
23. 1597 Martin Opitz w Bolesławie ur. — 1666 Łukomski Litwin sejm zrywa.
24. 1715 wzięcie Stralsundu. — 1798 Ad. Mickiewicz ur. — 1857 Stanisław Jachowicz †.
25. 1620 Reinhold Heidenstein, pisarz dziejów polskich †.
26. 1522 Soliman zdobywa Rodus. — 1655 Müller, Szwed pod Częstochową.
27. 1555 Jan Arndt ur. — 1571 Jan Keppler ur. — 1587 Zygmunt III., król szwedzki koronowany.
28. 1524 Jan Staupitz †. — 1532 Krzysztof Szydłowiecki †. 1608 Fab. Seb. Klonowicz †.
29. 1801 Grzegórz Piramowicz †. — 1850 H. C. Schuhmacher, astronom †,
30. 1812 konwencya zawarta między Yorkiem a Dybiczem.
31. 1384 Jan Wiklef †. — 1435 pokój w Brześciu zawarty z Krzyżakami.

# ORGANIZACYJA

## Władz szkólnych w państwie pruskiem.

### Ministeryjum spraw duchownych, szkólnych i lekarskich:

1. Wydział spraw zewnętrznych kościoła ewangielickiego.
2. „ spraw kościoła katolickiego.
3. „ spraw szkólnych i naukowych.
4. Naczelna rada kościoła ewangielickiego.

Szef: Jego Excelencya Dr. thel. et jur. Mühler, minister państwa.
Podsekretarz stanu: Dr. med. Lehnert, rzeczywisty tajny nadradzca rejencyjny.
Radzcy ministeryjum: Keller, rzeczywisty tajny nadradzca rejenc.
Stiehl, tajny nadradzca rejenc.
Knerk, tajny nadradzca rejenc.
Bindewald, tajny nadradzca rejenc.
Dr. Wiese, tajny nadradzca rejenc.
Kühlenthal, tajny nadradzca rejenc.
Thielen, nadradzca konsystoryjalny.
Dr. Pinder, tajny radzca rejenc.
Dr. Olshausen, tajny radzca rejenc.
De la Croix, tajny radzca rejenc.
Dr. Stieve, tajny radzca rejenc.
Kretschel, dyr. semin. w Weissenfels.

### Inspektór jeneralny zakładu głucho-niemych w państwie Pruskiem.

Sägert, tajny radzca rejencyjny i referujący radzca ministeryjalny.

**Władze szkolne w pojedyńczych prowincyjach.**

1. Naczelny prezes.
2. Konsystorz prowincyjonalny.
3. Prowincyjonalne kolegium szkólne.
4. Wyższa komisyja egzaminacyjna.

## I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

### A. Prowincyjonalne kolegium szkólne.

Naczelny prezes: v. Horn.
Dyrektor: Willenbücher, prezes rejencyjny,
Członkowie: Dr. Mehring, konsyst. i ewang. radz szkólny.
Rödenbeck, radzca konsyst. i justycyjaryusz.
Dr. Milewski, radz. rejenc. i szkólny katol.

### B. Wyższa komisyja egzaminacyjna.

(ob. Szląsk.)

#### 1. Rejencyja w Poznaniu.

Naczelny prezes: v. Horn.
Prezes: Willenbücher.
Dyrygent wydziału: v. Bünting, nadradzca rejencyjny.
Członkowie: Dr. Milewski, radzc. rejenc. i szkólny katol.
Jäckel, radzca konsyst. i szkólny ewang.
Hauptstock, radzca rejenc. i szkólny katol.

#### 2. Rejencyja w Bydgoszczy.

Prezes: Naumann.
Dyrygent wydziału: Schubring, nadradzca rejenc.
Członek honorowy: Runge, tajny radzca i radz. szkól. ewang.
Członkowie: Taube, radz. kons., Schmidt, radz. rejen. i szkól. kat., Jungklass, radz rejen. i szkól ewang.

## II. Prusy.

### A. Prowincyjonalne kolegium szkólne.

Naczelny prezes: Jego Excel. Dr. Eichmann, rzeczywisty radzca tajny.
Dyrektor: v. Ernsthausen, prezes rejencyjny.
Członkowie: Hohenfeld, radz. kons. i justycyaryusz, Dr. Schrader, prowincyjonalny radzca szkólny ewang.,
Dr. Goebel, prowincyjonalny radzca szkólny kat.

## B. Wyższa komisyja egzaminacyjna.

Dyrektor: Dr. Swader, prowincyjonalny radzca szkólny, zarazem członek komisyi filologiji i pedagogiki klasycznej.
Członkowie: Dr. Richolet, profesor matematyki i fizyki.
Dr. Ueberweg, profesor filozofiji,
Dr. Nietsch, prof. jeografiji i historyji,
Dr. Zaddach, prof. nauk przyrodzonych,
Dr. Werther, prof. chemiji i mineralogiji,
Dr. Cosack, prof. i ksiądz teologiji ewang. i hebrajskiego,
Dr. Thiel, prof. w Brunsbergu teologiji katol. i hebrajskiego,
Dr. Herbst, prof. angielskiego i francuzkiego.

### 1. Rejencyja w Królewcu.

Naczelny prezes: Jego Exc. Dr. Eichmann,
Prezes rejencyjny: v. Ernsthausen,
Dyrygent wydziału: Krossa, nadradzca rejencyjny,
Członek honorowy: Dr. Dieckmann, tajny radzca i radz. szkólny ewang.
Członkowie: Dr. Woike, rejenc. i szkólny radzca ewang.
Bock, rejencyjny i szkólny radzca ewang.

### 2. Rejencyja w Gumbinie.

Prezes: Maurach.
Dyrygent wydziału: Siehr, nadradzca i tajny radz. rejenc.
Członkowie: Tyrol, rejencyjny i szkólny radzca ewang.

### 3. Rejencyja w Kwidzynie.

Prezes: Hrabia Eulenburg, szambelan.
Dyrygent wydziału: v. Diedericlis, nadradzca rejencyjny.
Członkowie: Wanjura, rejencyjny i szkólny radzca katol.
Henske, rejencyjny i szkólny radzca ewang.

### 4. Regencyja w Gdańsku.

Prezes: v. Prittwitz-Gaffron.
Dyrygent wydziału: v. Anerswald, nadradzca rejencyjny
Członkowie: Dr. Ditki, rejenc. i szkólny radzca katol.
Ohlert, regencyjny i szkólny radzca ewang.

## III. Szląsk.

### A. Prowincyjonalne kolegium szkolne.

Naczelny prezes: Jego Exc. Dr. baron v. Schleinitz, rzeczywisty tajny radzca.
Dyrektor: v. Götz, prezes rejencyjny.
Członkowie: Dr. Dillenburger, tajny radzca i prowincyjonalny radzca szkólny katol.
Dr. Schneider, radzca konsyst. i justycyaryusz.
Dr. Scheibert, prowincyjon. radz. szkólny ewang.
Weigelt, radzca konsystoryalny.

### B. Wyższa komisyja egzaminacyjna dla W. Ks. Poznańskiego i Szląska w Wrocławiu.

Dyrektor: Dr. Friedlieb, profesor, zarazem członek komisyi teologiji katolickiej i hebrajskiego.
Członkowie: Dr. Elvenich, tajny radzca rejenc. i prof. filozofiji i pedagogiki.
Dr. Schuth, prof. teologiji ewang. i hebrajskiego.
Dr. Schmölders, prof. nowszych języków.
Dr. Schröder, prof. matematyki i fizyki.
Dr. Grube, cesarsko-rosyjski radzca stanu i profesór nauk przyrodzonych.
Dr. Rossbach, profesor filologiji klasycznej.
Dr. Junkmann, prof. historyji i jeografiji.
Dr. Rückert, prof. języka niemieck. i literatury.
Polskiego (vacat).

#### 1. Rejencyja w Wrocławiu.

Naczelny prezes: Jego Exc. Dr. bar. v. Schleinitz.
Prezes rejencyji: v. Götz.
Dyrygent wydziału: v. Willich, nadradzca rejencyjny.
Członkowie: Bellmann, radz. kons. rejenc. i szkólny ew.
Jüttner, radzca rejencyjny i szkólny katol.

#### 2. Rejencyja w Opolu.

Prezes: Dr. v. Vibahnn.
Dyrygent wydziału: v. Eichorn, nadradzca rejencyjny.
Członkowie: Połomski, radzca rejenc. i szkólny katol.
Baron, radzca konsyst. rejenc. i szkólny ewan.
Wittig, radzca rejencyjny i szkólny kat.

3. Rejencyja w Lignicy.

Prezes: Hrabia Zedlitz, zwany Trützschler v. Falkenstein.
Dyrygent wydziału: v. Perbandt, nadradzca rejencyjny.
Członkowie: Bady, radzca rejencyjny i szkólny katol.
Ranke, radzca rejencyjny i szkólny ewang.

---

## Wyższe zakłady naukowe w państwie Pruskiem.

### Królewska akademija naukowa w Berlinie.

Założona r. 1700 przez Fryderyka Wilhelma III.; zreformowana w r. 1812. Protektor: Panujący król pruski. Etat 20,743 talary.

### Uniwersytety w Prusiech.

#### 1. Uniwersytet Fryderyka Wilhelma w Berlinie.

Założony 10 sierpnia 1809 r. Obejmuje: 1. Fakultety: teologiczny, jurystyczny (prawniczy), medecynalny (lekarski), filozoficzny. 2. Seminaryja: teologiczne (utworzone 15 maja 1828), filozoficzne.

#### 2. Uniwersytet nadreński Fryderyka Wilhelma w Bononiji.

Założony 18 października 1818 r. 1. Fakultety: ewangielicko-teologiczny, katolicko-teologiczny, prawniczy, lekarski, filozoficzny. 2. Seminaryja: ewangielicko-teologiczne, ewangielickie homiletyczno-katechetyczne, konwiktoryum dla uczniów fakultetu katolickiego, katolickie homiletyczno-katechetyczne, filozoficzne, nauk przyrodzonych.

#### 3. Uniwersytet w Wrocławiu.

Powstał z uniwersytetów frankfurtskiego i wrocławskiego w roku 1811. 1. Fakultety: ewangielicko-teologiczny, katol.-teolog., prawniczy, lekarski, filozoficzny. 2. Seminaryja: teologiczne, filologiczne, historyczne.

### 4. Uniwersytet w Gryfiji.

Założony 17 października 1456 r., potwierdzony przez papieża Kalixta III. 29. maja 1456. 1. Fakultety: teologiczny, prawniczy, lekarski, filozoficzny. 2. Seminaryja: teologiczne, instytut teologiczno-praktyczny, filologiczne.

### 5. Uniwersytet Fryderyka w Halli.

Powstał z połączenia uniwersytetów w Halli i Wittenbergu. W Halli założony był uniwersytet na końcu 17 wieku przez elektora Fryderyka III.; w Wittenbergu założył uniwersytet Fryderyk Mądry r. 1502. Po przyłączeniu Halli i Wittenberga do Prus, złączono obydwa w jeden. — 1. Fakultety: teologiczny, prawniczy, lekarski, filozoficzny. 2. Seminaryja: teologiczne, pedagogiczne, filologiczne, matematyczne, nauk przyrodzonych.

### 6. Uniwersytet w Królewcu.

Założony przez Albrechta, margrabiego brandenburskiego w roku 1543. — 1. Fakultety: teologiczny, prawniczy, lekarski, filozoficzny. 2. Seminaryja: teologiczne, litewskie, polskie, homilityczne, prawnicze, filologiczne, historyczne, matematyczno-fizyczne.

## Akademije teologiczne i filozoficzne.

### 1. Akademija teologiczna i filozoficzna w Monasterze.

Założona 16 kwietnia 1780. Papież Klemens XIV. potwierdził ją już 12 lipca 1773, a cesarz Józef II. 8 październ. 1773. — 1. Fakultety: katolicko-teologiczny, filozoficzny. 2. Seminaryja: pedagogiczno-filologiczne.

### 2. Filozoficzno-teologiczny zakład w Paderbornie.

(Seminarium Theodorianum).

W roku 1593 założył książę-biskup Teodor Furstenberg gimnazyjum jezuickie, które roku 1616 do rzędu akademiji. wyniesione zostało.

### 3. Lyceum Hosianum w Brunsbergu.

Najważniejszy wyższy zakład naukowy dla duchowieństwa warmińskiego. Założył go kardynał St. Hozyusz w r. 1564.

## Seminaryja duchowne.

1. Seminaryjum duchowne w Brunsbergu założone 1565 roku.
2. " klerykalne dla dyecezyi chełmińskiej w Pelplinie.
3. " praktyczne w Gnieźnie.
4. " teoretyczne w Poznaniu.
5. " klerykalne (Alumnat) w Wrocławiu.
6. " duchowne w Monasterze.
7. " " w Paderbornie.
8. " arcybiskupie w Koloniji.
9. " duchowne w Trewirze.

## Seminaryja dla szkół wyższych.

1. Seminaryjum królewskie dla szkół wyższych w Berlinie przysposobia nauczycieli do wyższych zakładów naukowych monarchiji.
2. Instytut przysposabiający nauczycieli matematyki i fizyki do gimnazyjów i szkół realnych w Berlinie.
3. Seminaryjum dla nauczycieli nowszych języków w Berlinie.
4. Królews. pedagogiczne seminaryjum w Wrocławiu, zał. 1813 r.
5. Królewskie pedagogiczne seminaryjum w Getyndze.
6. Królews. pedagogiczne seminaryjum w Królewcu, otw. 1861 r.
7. Konwikt kandydatów w Magdeburgu kształci nauczyc. religiji.
8. Seminaryjum dla nauczycieli wyższych szkół obywatelskich w Szczecinie.

## Medyczno-chirurgiczne zakłady naukowe.

1. Królewski medyczno-chirurgiczny zakład Fryderyka Wilhelma w Berlinie.
2. Akademija medyczno-chirurgiczna dla wojska w Berlinie (Collegium medico-chirurgicum).

## Zakłady naukowe dla budowniczych i przemysłowców.

1. Królewska akademija budownicza w Berlinie.
2. Królewska akademija dla przemysłowców w Berlinie.
3. Wyższy zakład leśny w Neustadt-Eberswalde.
4. Królewska akademija górnicza w Berlinie.
5. Królewska szkoła politechniczna w Hanowerze.
6. Królewska akademija górnicza w Clausthal.

## Zakłady naukowe agronomiczne.

1. Akademija rolnicza w Eldenie.
2. " " w Möglin.

3. Wyższy zakład agronomiczny w Poppelsdorf pod Bononiją.
4. " " " w Pruszkowie na Szląsku.
5. Wyższa akademia agronomiczna w Regenswalde w Pomeraniji.
6. Królewska szkoła ogrodnicza w Neu-Schönebergi Poczdamie.

### Szkoła weterynarska w Berlinie.

Zakład centralny gimnastyki w Berlinie.

### Zakłady naukowe dla żeglarzy.

1. Zakład dla majtków królewskiej marynarki w Szczecinie.
2. Królewska szkoła nawigacyjna i budowy okrętów w Grabowie pod Szczecinem.
3. Królewska szkoła nawigacyjna w Gdańsku.

### Akademije sztuk pięknych.

1. Królewska akademija sztuk w Berlinie, założona 1699.
2. " " " w Królewcu.
3. " " " w Dusseldorfie.
4. Królewski zakład muzyki kościelnej w Berlinie.

---

## Gimnazyja i prywatne szkoły filologiczne.

### I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

#### A. Obwód rejenc. poznański.

**1. Krotoszyn.** Gimnazyjum Wilhelma, ewangielickie; w r. 1836 jako szkoła powiatowa założone, 1847 do rzędu szkół realnych wyniesione, od r. 1854 gimnazyjum; od 12 grudnia 1864 królewskie gimnazyjum. 7 klas. 20 tal. szkolnego, 1 tal. za turnieje. Biblioteka liczy 1140 tom.; etat przeszło 8000 tal.

Dyrektór: prof. August Gładysz. Wyżsi nauczyciele gimn.: prorektor prof. Schönborn I., Nielander i Eggelin. Nauczyc. etatowi: Bleich, Dr. E. Schönborn II. i Göbling. Nauczyc. pomoc.: Schwalbach, Dr. Radtke i Dr. Trawiński. Nauczyc. religiji: Füllkrug ewang., wikary Springer katol. Nauczyc. polskiego: Pfan; naucz. rysunków: Schlange.

**2. Leszno.** Gimn. ewang., 13 listop. 1555 założone. Bibl. przeszło 7000 tomów; 8 klas, 20 tal. szkól. etat 11,238 tal.

Dyrektór: prof. A. Ziegler. Wyż. naucz. gimn.: prof. Olawsky, prof. Tschepke, prof. Matern, prof. Karwowski i Martens. Naucz. etat.: Dr. Stensloff, Dr. Nesemann i Fleischer. Naucz. pom.: Töplitz i kandydat Pockrandt. Naucz relig.: superintendent Grabig (lut.), Fromberger (reform.), wik. Lic. Chyżyński (kat.). Naucz. rys. Gregor.

**3. Ostrowo.** Gimn. katolickie, założone 14 kwiet. 1845. 10 klas, 16 tal. szkolnego, 1 tal. za turnieje; etat 12,077 tal. (7820 tal. dodatku rządowego).

Dyrektór: prof. W. Tschackert. Wyż. naucz.: Dr. Bronikowski, Regentke, Cywiński, naucz. relig. kat. Dr. theol. Warmiński i Dr. Zwolski. Naucz. etat.: wyższy naucz. Polster, Thomczek, Kotliński, Marten, Jagielski i Dr. Wawrowski. Naucz. pomoc.: Paten i Dr. Kolanowski. Naucz pis., rys., śpiewu i turnieji: Roil. Naucz. rel. ewang. Schubert.

**4. Poznań.** Gimn. katol. Maryji Magdaleny, 25 czerw. 1573 jako szkoła jezuicka otworzone. W alumnacie połączonym z gimnazyjum ma bezpłatne pomieszczenie 60 uczniów z 3 klas wyższych, którzy się teologiji poświęcić zamierzają. Biblioteka naucz. przeszło 8000 tom., bibliot. uczn. przeszło 2400 tom. 16 klas, 20 tal. szkóln. i 1 tal. za turnieje. Etat gimn.: 17.553 tal., etat alumnatu: 5280 tal. Nauczyciele gimn. trzemeszeńskiego do tegoż zakładu przeniesieni zostali.

Dyrektór: Dr. R. Enger. Wyż. naucz.: prof. Wannowski, prof. Schweminski, prof. Dr. Rymarkiewicz (pomocnik dyrektora), prof. Dr. Jerzykowski, Dr. Steiner, 1 naucz. religiji: regens Bilewicz, Dr. Ustymowicz, 2 naucz. rel. Lic. Michalski. Naucz. etat.: wyższy naucz. Figurski, Szulc, Dr. Wituski, Teod. Jakowicki, Dr. Nehring, Dr. Łazarewicz i Laskowski. Naucz. rel. ew.: pastor Schönborn. Naucz. pom.: Dr. Brutkowski, Wegner i rektor Ziętkiewicz. Naucz. rys. i śpiewu: Szön. Naucz. szkoły przygotowawczej: Jenike. — Nauczyciele gimnazyum trzemeszeńskiego: Dyrektór: prof. Dr. Szóstakowski, wyższy nauczyc. Moliński, Dr. Sikorski i Kłosowski. Naucz. etat.: wyższy naucz. L. Jakowicki, Dr. Krzesiński, Szymański i Łukowski.

**5. Poznań.** Królewskie gimn. Fryderyka Wilhelma, założone 15 paźdz. 1834 roku. 13 klas, 20 tal. szkóln. 1 tal. za turnieje i 15 sgr. bibliot.

Dyrektór: prof. Dr. Sommerbrodt. Wyższ. naucz. prof. Dr. Neydecker, Muller, Dr. Tiesler, Dr. Starke, Pohl i Dr. Moritz. Naucz. etat.: Heidrich, Dr. Brieger, Dr. Wachsmuth, Dr. Klapp, Dr. Barthold, v. Morstein, Dr. Voretzach, Schmidt,

Dr. Bubendey i Dr. Pluss. Cand. prob.: Dr. Eschenburg i Dr. Seebeck. Naucz. rel. ew.: Herwig, rel. kat. Wurst, naucz. polskiego: Woliński. Naucz. rys. Huppe. Naucz. szkoły przygotowawczej: Friedrich i Schipke.

**6. Śrem.** Gimn. symult., 15 kwietnia 1858 jako wyższy zakład naukowy otworzone, 14 września 1864 do rzędu progimn. wyniesione, a od św. Michała 1865 gimnazyjum. 6 klas, 22 tal. szkóln., 16 sgr. bibliot. Etat: 6400 tal.

Dyrektor: Stephan. Wyż. naucz.: Dr. Szenic, Sempiński, Śluzinski i Ulkowski. Naucz. etat.: Dr. Krause, Cand. prob. Scholze i Voigt. Naucz. relig. katol.: Dr. teol. Stablewski; naucz. rel. ew. pastor Balcke.

**7. Rogoźno.** Progimn. symult. od Wielkiejnocy 1862. 5 klas, 12, $20^3/_4$ tal. szkóln. Etat: 3200 tal. — Dyrygent: Dr. Schaefer. Naucz. etat.: Dr. Herrmann, Dr. Beckhaus, Dr. Bernheim i Jaskulski. Naucz.: Ratsch. Naucz. rel. kat.: prob. Wojczyński. Naucz. śpiewu i turnieji: Ehrhardt.

## B. Obwód rejencyjny Bydgoski.

**1. Bydgoszcz.** Gimn. ewang., 30 lipca 1817 r. założ. 11 klas, 21 tal. 11 sgr. szkóln. Etat: 15,460 tal.

Dyrektor: (vacat.) Wyż. naucz.: prof. Breda, prof. Fechner, Januskowski i Dr. Schönbeck. Naucz. etat.: wyż. naucz. Dr. Hoffmann, Lomnitzer, Heffter, Marg, Dr Günther i Dr. Sturm. Naucz. pom.: Leuchtenberger. Cand. prob.: C. Schmidt i Eichler. Naucz. techn.: (vacat) (rachun. pisan. i turnieje). Naucz. rel. kat.: prob. Turkowski. Naucz. rel. ew.: pastor Serno; naucz. rys.: Wolff; naucz. śpiewu: Steinbrunn. Naucz. szkoły przyg.: Braun, Hintz i S. Schmidt.

**2. Gniezno.** Gimn. symult.; od 15 październ. 1863 wyższa szkoła chłopców, od 14 wrześn. 1864 progimnazyum, 16 wrześn. 1865 do rzędu gimn. wyniesione. 8 klas, 21 tal. szkóln. Etat: 8825 tal., włącznie 2500 tal. dodatku rządowego.

Dyrektor: Dr. J. Methner (ew.). Wyższy naucz.: Dr. Teichmüller (ew.); Dr. Kozłowski (kat.), Dr. Müller (kat.). Naucz. etat.: Dr. Praetorius (ew.). Naucz. pom.: Polster (kat.), Roeder (ew.). Naucz. rel. ew.: Fliess; naucz rel. kat.: prob. Ołyński; naucz. rys. i pis.: Krzyminiewski (kat.); naucz. śpiewu: kantor Kopitsch (ew.); naucz. szkoły przygotow.: Schultz (kat.).

**3. Inowrocław.** Gimn. symult.; od 8 paźdz. 1858 progimn., od 1 kwietnia 1863 gimn. Biblioteka: 1000 tom., 6 klas. Szkólne: w szkole przygotow. 12 tal.; w klasach gimn.: 16 tal. miejscowi, 20 tal. zamiejscowi. Etat: 7685 tal.

Dyrektor: Teod. Bern. Günther (ew.). Wyż. naucz.: Schmidt (kat.), Dr. Czaplicki (kat.). Naucz. etat.: Schwartz (kat.), Dr. Goleński, Dr. Jung (ew.), Dr. Jahns (ew.), Schäfer (kat.) i Gortz kat. Naucz. szkoły przygotow. i turn. Kreidelhoff (ew.). Naucz. rel. kat.: wik. Garsztka; naucz. rel. ew:: superintendent Schönfeld; śpiewu: Stolpe.

**4. Piła.** Progimnazyjum symult., od 18 października 1858. 5 klas, 12 do 18 tal. szkolnego.

Rektor: O. J. Hanow. Naucz. etat.: Zielke, Dr. Ebel, Neus i Dr. Nagel. Naucz. element.: Rathke; naucz. pomoc. Kotelmann; rel. kat.: wikar. Eichstädt; rel. żyd.: rab. Brann.

**5. Nakło.** Wyższa szkoła chłopców (progimn. symult.) powstała z założonej 28 lut. 1862 szkoły prywatnej. 3 klasy gimn. (VI—IV), 12, 20 tal. szkolnego.

Rektor: Dr. C. W. Wolff. Naucz. etat.: Hirt, Dr. Weiss, Cohn, Kraatz, Kaeding i Duckrau. Naucz. pom.: kaznodz. Serno.

**6. Ostrowo** .pod Wieleniem. Pedagogium, w r. 1852 otworzone. Zakład ten przysposabia uczniów do prymy gimnazyjum lub szkoły realnej. 3 klas, 50 tal. szkolnego. Pensyjonarze 200 tal., włącznie ze szkolnem.

Dyrektor i założyciel zakładu: Dr. Beheim-Schwarzbach sen. Naucz. etat.: Dr. M, Beheim-Schwarzbach, Dr. Wissowa, Dr. Preusse, Drager, Spritulla, prof. Carriére, Shaw, Rudziński i Schmidt I. Naucz. rel. ew. kazn. Pratorius; rel. kat.: wik. Górecki; naucz. muzyki: Kunze i Borchard; naucz. turn. major Frosch. Adjunkci: Schmidt II., Lorenz i Schindler.

**7. Trzemeszno.** Wyższa szkoła chłopców symult., 15 stycznia 1866 otworzona. Ma trzy klasy, które VI—IV gimnazyjalnej lub realnej odpowiadają; przysposabia uczniów do III. wspomnionych zakładów. Szkolne: 4 tal. etat: 2880 tal.

Dyrygent: Dr. Sarg (ew.). Naucz. etat.: Biskupski (kat.), Erfurth (ew.), Buzalski (kat.). Naucz. rel.: pastor Werner (ew.), wikaryusz Niedbalski (kat,). Naucz. śpiewu: Clause (kat.).

## II. Prusy.

### A. Obwód rejencyjny Królewiecki.

**1. Brunsberg.** Gimn. katol., założone 21 sierpn. 1565, zreorganizowane 29 grud. 1811. 8 klas; 14, 16, 18 tal. szkól.; etat: 10,800 tal.

Dyrektor: Prof. Braun. Wyż. naucz.: prof. Dr. Saage, prof. Dr. Otto, Dr. Funge i Tietz. Naucz. rel. kat.: Dr. Wollmann. Naucz. etat.: wyższy naucz. Lindenblatt, wyż. n. Kawczyński, Dr. Malina, Dr. Königsbeck i Dr. Pratorius. Naucz. technicz.: Rohde. Naucz. rel. ew.: Dr. Herrmann.

**2. Holsztynek** (Hohenstein). Gimn. ewang., od 3. kwiet. 1845 progimn., w roku 1857 do rzędu gimn. wyniesione. 7 klas, 13 do 21 tal. szkóln., etat: 7186 tal.

Dyrektor: Dr. M. Toppen. Wyż. naucz.: prof. Dr. Krausse, Blümel, Dr. Gervais. Naucz. etat. Dr. Siebert, Dr. Heinicke, Dr. Szeliński, kand. Weise (prow.) i Baldus (techn. naucz.). Naucz. pom.: Skierlo. Naucz. rel. kat.: prob. Dinder z Grieslienen.

**3. Królewiec.** Kolegium Fryderyka, ewan.; pod tym nazwiskiem od 10. maja 1703 r. Biblot.: 2350 tom. 10 klas, 24 tal. szkóln. 1 tal. za turn.; etat: 19,294 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. G. Wagner. Wyż. naucz.: prof Dr. Lewitz, Dr. Zander (zarazem docent prywatny przy akademiji), prof. Dr. theol. et phil. Simson (zarazem Prof. extr. przy akademiji), Dr. Hoffmann i Dr. Eckardt. Naucz. etat.: Dr. Lincke, Dr. Grosse, Dr. Sohncke, Dr. Kammer, Clemens, Ungewitter i Dr. Ellendt. Naucz. pom. Dr. Ludwich. Członek seminar. pedagogicznego: Lucht. Naucz. rel. kat.: prof. i dziekan Namszanowski; naucz. rys.: Kreutzberger. Naucz. szkoły przygotow.: Behrendt, Neumann i Büttner; naucz. turn.: Dr. med. Müttrich.

**4. Królewiec.** Gimn. staromiejskie ewan., około r. 1350 założone. 9 klas, 25 tal. szkóln.: w szkole przygotow. 24 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. R. Müller. Wyż. naucz.: Schumann, Dr. Richter, Dr. Retzlaff i v. Drygalski. Naucz. etat.: Fabricius, Witt, Dr. Bujack, kaznodz. Grämer, Dr. Schwidop i Momber. Naucz. pomoc.: Dr. Muller. Naucz. szkoły przygot.: Richert i Klein; naucz. rys. malarz Stobbe; naucz. śpiewu Hamma; naucz. języka angielsk.: Dr. Arnoldt; naucz. turn.: Dr. med. Müttrich.

**5. Królewiec.** Gimn. ewang. zwane Kneiphofsches, około r. 1304 jako szkoła katedralna założone. 8 klas, 24 tal. szkóln., 1 tal. za turn.; etat: 9954 tal.

Dyrektor: Dr. Rud. Ferd. Leop. Skrzeczka. Naucz. wyż.: prof. Dr. Schwidop, Dr. Lentz, prof. Dr. Cholevius I. i Weyl. Naucz. etat.: Dr. Knobe, Dr. Diestel, Dr. Müttrich I. i Dr. Viertel. Naucz. pom. Dr. Darnmann i Dr. Cholevius II. Członek semin. pedagogiczn. Nowack. Naucz. rel. kat.: prob. i dziekan Namszanowski; naucz. języka angielsk.: Dr. Arnoldt; naucz. śpiew.: dyrektor muzyki Pabst; naucz. rys.: malarz Dennehl; naucz. turn.: Dr. med. Müttrich II.; naucz. szkoły przygot.: Deubler.

**6. Memel czyli Kłejpeda.** Gimn. ewang.; założoną 19 grud. 1838 szkołę realną zamieniono reskr. minister. z dnia 18 sierpn. 1860 r. na gimn. 7 klas, 18 tal. szkóln.

Dyrektor: Prof. Dr. Düringer. Naucz. wyż.: Sanio, Dr

Paulzen, Dr. Schmidt i Dr. Storch. Naucz. etat.: Dr. Genthe, Waldhauer, Graef, Moll i Dr. Kretschmann. Naucz. śpiew.: Edel; naucz. szkoły przygotow.: Rohse.

**7. Rastenburg**. Gimn. ewang.; w r. 1546 przez księcia Albrechta jako szkoła łacińska założ.; od r. 1816 królew. gimnazyjum. 8 klas; 12, 16, 20 tal. szkólnego.

Dyrektor: Prof. Dr. Techow. Naucz. wyż. prorekt, Polter, Clausen, Jansch i Dr. Schottmüller; Naucz. etat. Dr. Richter I., Dr. Richter II., Dr. Raths, Dr. Bercio i Scharffenberg. Naucz. pomoc. i kandyd.: Talke i Dr. Wilde. Naucz. techniczny: elementarny naucz. Kalanke.

**8. Reszel (Rössel)**. Gimn. katol.; w roku 1631 jako kolegijum jezuickie, od r. 1833 progimn. a rozporządz. minister. z dnia 25. wrześn. 1865 do rzędu gimn. wyniesione. 6 klas; 8, 10, 12 tal. szkóln.; stał. etat: 4697 tal.

Dyrygent: dyrektor progimnazyjalny prof. D. Lilienthal. Naucz. wyż.: Dr. Laws i Friebe. Naucz. etat.: Oestreich, naucz. rel. kat. Dr. Korioth. Dr. Prill, Ranterberg i Dr. Romahn. Naucz. rys., pis,, śpiew. i turn.: Wionka; rel. ewang.: superintendent Lehmann.

## B. Obwód regencyjny Gumbiński.

**1. Gumbin**. Gimn. Fryderyka, ewang.; założ. 3 listop. 1812 roku. Bibliot,: 3140 tom.; 6 klas; 16, 18, 20 tal. szkóln. i 1 tal. za turn.; etat 9950 tal.

Dyrektor: prof. Dr. Jul. Arnoldt. Naucz. wyż.: prof. Sperling, prof. Dewischeit, Dr. Kossak i Dr. Basse. Naucz. etat.: naucz. rel. Trosien, Dr. Witt, Hoppe, Dr. Küsel i Schwarz. Naucz. szkoły przygotow.: Klein.

**2. Instruć** (Insterburg). Gimn. ewang. z klasami realnemi; 15 październ. 1860 założ., klasy realne od 15 grudn. 1862. 6 klas gimn. i 4 klasy realne (od IV—I.). Szkólne: 12, 18, 24 tal. 1 tal. za turn,, 20 sgr. za bibl.; etat: 12,550 tal.

Dyrektor: Dr. Krah. Naucz. wyż.: Fischer I., Dr. Lange, Preuss, Dr. Rumpel, Dr. Schwarzlose. Naucz etat.: Dr. Meissner, Dr. Schafer, Dr. Wiederhold, Koch, Büttner, Urban, Schenk i Dr. Fischer II. Naucz. rys. i element.: Kistlatis; naucz. szkoły przygotow.; Sackersdorff i Eggert; naucz. śpiewu: Metz.

**3. Ełk** (Lyck). Gimn. ewang., założone 1587. 8 klas; szkólne: 12, 16, 20 tal.

Dyrektor: Dr. Kar. Schaper. Wyż. naucz,: prof Kostka, Gortzitza i Dr. Horch. Naucz. etat.: Kuhse, Kopetsch, Laves I., Dr. Ebinger, Dr. Laves II., kandydat kaznodz. Kalanke, Bock iKrüger. Naucz. szkoły przygotow.: Schwarz.

**4. Tylża.** Gimn. ewang., założone przez Jerzego Fryderyka z Anspach, opiekuna niedołężnego Albrechta Fryderyka. Pierwszego rektora tegoż zakładu mianowano 6 listop. 1536. Bibliot.: 3624 tom.; 12 klas. Szkólne: w klasach przygotow. 12 tal., w klasach gimn. 14. 18, 24 tal. Etat: 11,809 tal.

Dyrektor: Profesor Fabian. Naucz. wyż. Dr. Kossinna, Pöhlmann, Meckbach, Schiekopp. Naucz. etat.: Skrodzki, Dr. Fischer, Hech, Milinowski, Feyerabendt, Ludwig i Plew. Naucz. pomoc.: Dr. Hachtmann i Salkowski. Insp. Pauper. Gisevius. Naucz. rys. i pis.: Rehberg; naucz. śpiew.: kantor Kollin; naucz. szkoły przygotow.: Kleinschmidt i Herholz.

## C. Obwód regencyjny Kwidzyński.

**1. Chojnice** (Conitz). Gimn. katol., powstało z założonego w r. 1620 a zniesionego 1773 kolegijum jezuickiego. 10 klas; 12, 14, 16 tal. szkóln., 1 tal. za turn. i 10 sgr. za używanie biblioteki. Etat: 13,000 tal.

Dyrektor: Dr. Aug. Uppenkamp. Naucz. wyż.: prof. Wichert, prof. Dr. Moiszisstzig, Dr. Stein i Dr. Meinertz. Naucz rel. kat.: Lic. Lüdtke (inspektor konwiktu). Naucz. etat.: naucz wyż. Haub. naucz. wyż. Heppner, Gand, Dr. B. Schulz I., Dr. P. Schulz II. i Paszetta. Naucz. pomoc. Gólski i Mey; naucz. techn.: Ossowski; naucz. rel. ewang. superintendent Annecke.

**2. Chełmno** (Culm). Gimn. katol., otworzone 3 sierpn. 1837 a założone przez króla Fryderyka Wilhelma III. Bibliot. przeszło 2500 dzieł. 10 klas; szkolne: 15, 17, 19 tal. włącznie z wynagrodz. za tur.; etat: 14,310 tal.

Dyrektor: Dr. Łożyński. Naucz wyż.: prof. Dr. Funck, prof. Hegele, Węclewski, naucz. rel. kat.: Lic. Okrój, Wentzke i Dr. Frey. Naucz. etat.: naucz. wyższy Raabe, Laskowski, Dr. Peters, Rochel, Andrzejewski, Schröder, Löns i Luke. Naucz. rys. i pis.: Długosz; naucz. śpiewu: Ogurkowski; naucz. relig. ewang.: Consentius. Cand prob. Müller i Redner.

**3. Wałcz** (Deutsch-Crone). Gimn. katol., dawniej gimn. jezuickie; od r. 1823 progimn. a 25 wrześn. 1855 do rzędu gimn. wyniesione. 7 klas; szkolne: 14, 16, 18 tal. i 1 tal. za turn.; etat 9200 tal.

Dyrektor: Prof. A. Łowiński. Naucz. wyż.: Martini, Weierstrass. Naucz. rel. kat.: Lic. Laskowski. Naucz. etat.: wyż. naucz. Altendorf, Dr. Bludau, Dr. Schneider, Löffler. Naucz, techn.: Hartung; naucz. rel. ew.: ksiądz Weise.

**4. Grudziądz** (Graudenz). Gimn. ewang.; w r. 1832 jako szkoła realna założone a 1865 do rzędu gimn. wyniesione. 6 klas gimn.; szkolne dla miejscowych 12, 14, 16, 20, 24 tal.; dla zamiejscowych 4 tal. więcej. Etat: 8300 tal.

Dyrektor: Dr. Hagemann. Naucz. wyższy: Dr. Lentz, Röhl, Krusemarck i Cuno. Naucz. etat.: Henning, Dr. Lortzing. Naucz. pomoc.: Melzer i Böttcher. Element. naucz. gimn.: Zander; naucz. szkoły przyg.: Strumpf i Aust.

**5. Kwidzyna** (Marienwerder). Gimn. ewang.; w 13. wieku jako szkoła katedralna założ., od r. 1800 gimn. 7 klas; szkolne od 12—23 tal.; etat: 10,073 tal.

Dyrektor: Dr. Teod. Breiter. Naucz. wyż.: protektor prof. Dr. Gützlaff, prof. Dr. Kühnast, Reddig i Dr. Zeuss. Naucz. etat.: Gräser, Dr. Künzer, Dr. Zielcke i Krause. Naucz. pomoc.: Dr. Zschech. Naucz. śpiew.: dyrektor muzyki Leder; naucz. rys. i pis.: Berendt:

**6. Toruń.** Gimn. ewang. z klasami realnemi; jako gimn. 8. marca 1568 założone; klasy realne przydano 13 marca 1861. Biblioteka założ. 1594 r. liczy 15,000 tomów. 9 klas gimn. i 4 klasy realne (IV—I.). Szkolne: 12, 16, 18, 20 tal. i 20 sgr. za turnieje. Etat: 16,989 tal.

Dyrektor: A. Lehnert. Naucz. wyż.: pr. Dr. Fasbender, pr. Dr. Janson, pr. Dr. Hirsch, Dr. Prove, Dr. Bergenroth i Dr. Bothke Naucz. etat.: Miller, Dr. Winckler, Reichel, Dr. Gründel, Curze, Dr. Boodstein, Hoffmann, Dr. Riter i Lewus. Naucz. pomoc.: kandat kaznodz. Gonell, Olck i Hossenfelder. Naucz. rel. kat.: wik. Dr. Borrasch; naucz. rys.: Völcker i Templin. Naucz. turn. konrektor szkoły obywatelskiej: Ottmann.

**7. Kurzętnik** (Kauernik). Progimn. kat., zał. 1 paźdz. 1858 przez proboszcza Hundt. Na 9 klas (VII do wyż. II,).

Dyrygent: prob. Hundt, naucz. rel. kat. Lic. Sartowski. Naucz. i kand. Filologiji: Obudziński, Garhoff, Fiege i Blanke. Naucz.: Eywik i Heidrich. Naucz. rel. ew.: Gertz.

**8. Pelplin.** Zakład naukowy biskupi dla chłopców (Coll. Marianum). 6 klas; nowi uczniowie przyjmują się w drugiej połowie września każdego roku. Wstępujący płaci szkolnego, za stół i aptekę rocznie 52 tal., w kwartalnych ratach naprzód. Uczniów 160.

Regens: ks. Michał Sieg. Wyż. naucz.: ks. Felix Morawski, Dr. fil., ks. Pobłocki, Dr. ks. Ignacy Ograbiszewski. Nauczyciele: ks. ks. Fr. Rąbca, Józef Mazurowski, Herm. Kościemski, ks. Konstanty Załuski i ks. Hipolit Trętowski. Naucz. elem. Herm. Fischer, Paweł Jankowski.

## D. Obwód regencyjny Gdański.

**1. Gdańsk.** Gimn. ewang., założone 13 czerwca 1558. Biblioteka gimn. założ. r. 1817, obejmuje przeszło 8000 tom., po większej części dzieła uczone i bardzo szacowny gabinet numizm. około 10,000 tal. wartości, w którym monety polskie, pruskie, osobliwie zaś gdańskie szczególniej zastąpione. 9 klas; szkolne wynosi w szkole przygotow. 12 tal., w klasach gimn. 16, 20, 24 tal. i 2 tal. półrocznego dodatku. Etat: 15,000 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Fryd. Wilh. Engelhardt. Naucz. wyż.: prof. Herbst, Czwalina, Dr. Brandstäter i Dr. Roeper. Naucz. etat.: Dr. Stein, Dr. Bresler, Dr. Lampe, Dr. Eichhorst, *Dr.* Prutz i *Dr.* Korn. Naucz. pom.: *Dr.* Schultz i *Dr.* Kreutz. Naucz. rel. ew.: kaznodz. Blech; naucz. rel. kat.: prob. *Dr.* th. Redner; naucz. śpiew.: dyrektor muzyki Markull; naucz. pis.: Gerlach; naucz. rys.: Troschel; naucz. szkoły przygotow.: Wilde.

**2. Elbląg.** Gimn. ewang. założ. 1536. Bibliot. 400 tom. 7 klas; szkolne: 12, 14, 16, 18, 20 tal. włącznie z wynagr. za turn. Etat: 9700 tal.

Dyrektor: Prof *Dr.* Benecke. Naucz. wyż. i prof.: *Dr.* Reusch, *Dr.* Hampke, *Dr.* Schindler. Naucz. etat.: *Dr.* Stenke, *Dr.* Heinrichs, *Dr.* Volckmann, *Dr.* Anger i *Dr.* Nicolai. Naucz. pomoc.: *Dr.* Loch; naucz. śpiew.: dyrektor muzyki Döring; naucz. rys.: Müller. Przełożony bibliotheki gimn.: a. D. Lindenroth.

**3. Malborg** (Marienburg). Gimn. ewang. 11 październ. 1860 otworzone. Bibliot.: 1280 dzieł; klas 7; szkolne: 8, 12, 16, 20, 24 tal. Etat: 7950 tal.

Dyrektor: *Dr.* Frydr. Strehlke. Naucz. wyż.: prof. Doerk, Dr. Botzon i Dr, Reichau. Naucz. etat.: naucz. wyż. Lastig, Dr. Eckerdt, Dr. Braut, Dr. Gerss, v. Lühmann i Fuchs. Naucz. szkoły przygotow.: Look i Semrau; naucz. rys.: Maudieth; naucz. śpiewu: kantor Grabowski.

**4. Wejherowo** czyli Nowemiasto (Neustadt) Gimn. katol., 15 październ. 1857 jako progimn. otworzone, od 24 czerw. 1861 gimn. 9 klas; szkolne: 13½, 15½, 17½ tal. i na półzwolnione miejsca: 7, 8, 9 tal.; szkoła przygotow. 12 tal., na półzwolnione 6 tal. Etat: 9800 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Jan Seemann. Naucz. wyż. Fahle, Maroński i Samland. Naucz. rel. kat.: Konitzer. Naucz. etat:: naucz. wyż. Dr. Thomaszewski, Barthel, Schnitz, Hoffmann i Bock. Naucz. rel. ew.: ksiądz Lebermann; naucz. techn.: Prengel; naucz. szkoły przygotow.: Habowski.

# III. Szląsk.

## A. Obwód rejencyjny wrocławski.

**1. Wrocław.** Gimn. ewang. św. Elżbiety, r. 1293 założone a 1562 zreformowane. Biblioteka istnieje od r. 1773 i utworzoną została z pozostałych książek, po większej części historycznych, rektora Krantz; liczy 6000 tomów. 12 klas; szkólne dla miejscowych 17 tal., od pozamiejscowych 25 tal. Etat 14,000 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Karol Rud. Fickert. Profesorowie: prorektor Dr. Kampmann i Dr. Kambly. Koledzy: wyż. naucz. Stenzel, wyż. naucz. Guttmann, wyższy naucz. Rath, wyż. naucz. Hänel, prof. Dr. Körber, wyż. naucz. Neide, Dr. Wieszner, Kunstler, Ulrich, Dr. Pach i Suckow. Kolab.: *Dr.* Fedde, Herodes i *Dr.* Weniger. Naucz. szkoły przygot. Seltzsam, Mittelhaus i Lehmann. Naucz. rys. malarz Bräuer; naucz. śpiewu: Thoma.

**2. Wrocław.** Gimn. ewang. św. Maryi Magdaleny, w r. 1267 pod nazwą szkoły łacińskiej założone; od r. 1643 gimn. 15 klas; szkólne od miejscowych 18 tal., od zamiejscowych 24 tal.; w szkole przygotow. płacą miejscowi 12 tal. zamiejscowi 18 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Kar. Schönborn. Naucz. wyż. prorektor prof. Dr. Beinert, prof. Dr. Sadebeck, Dr. Palm, Dr. Schück, Dr. Beinling i Dr. Roseck. Koledzy: Dr. Meister. Oberdieck, Simon, Dr. Lindner, Peiper, Dr. Dzialas, Suckow, Dr. Eitner I, Dr. Schulze, Tardy. Kolab.: John, Dr. Guttmann, Dr. Winter, Dr. Mayhoff, Dr. Förster, Taschner, Dr. Zimmermann i Engler. Naucz. szkoły przygotow. Seltzsam, Sturm, Krames, Liewald, Joachim i Strauwald. Naucz rys. malarz Eitner II; naucz. śpiewu: Schönfeld; naucz. pis. Watzold i Pannenberg.

**3. Wrocław.** Gimn. Fryderyka, reformowane, założ. 24 stycznia 1765. 7 klas; szkólne: w klasach przygotow. 12 tal., w klasach gimn. 27 tal. włącznie z wynagrodz. za turnieje. Etat: 9415 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Ludw. Gadke. Naucz. wyż.: Prof. Dr. Lange; prof. Dr. Anderssen i Hirsch. Naucz. etat: Dr. Markgraf, Dr. Menzel, Dr. Krause i Rehbaum. Naucz. pomoc.: Dr. Kruger; naucz. rel.: kaznodz. Dr. Knoch; naucz. języka hebrejskiego: prof. publ. przy akademiji Dr. Magnus; naucz. rys. malarz Bayer; naucz. szkoły przygotow.: Adamy i Tschache.

**4. Wrocław.** Gimn. kat. św. Macieja. 1638 założone. 13 klas; szkolne: 16 tal. i 1 tal. za turnieje; etat 20,000 tal.

Dyrektor: Dr. Aug. Wiessowa. Naucz. wyż.: Janske, Winkler, Dr. Pohl i Dittrich. Naucz. etat.: Idzikowski, naucz. wyż. Dr. Schedler, naucz. wyż. Dr. Baumgart, Dr. Görlitz, naucz rel. Dr. Knobloch, Schnek, naucz. wyż. Dr. Resler, Ludwig, naucz. rel. Dr. Weber, Mohr i Meiwald. Naucz. pomoc.: Dr. Gottschlich; naucz śpiewu: dyrektor muzyki Bröer; naucz. rys.: Schneider; naucz. szkoły przygotow.: Gebauer i Galle.

**5. Brzeg.** Gimn. ewang.; kamień węgielny założono 21 marca 1564, poświęcone 10 sierpnia 1569 przez księcia Jerzego II. 8 klas; szkolne w pierwszych 3 klasach 10—12 tal. w 5 następnych 14 i 20 tal.; etat: 10,385 tal.

Dyrektor: Prof. Jan Jul. Guttmann. Naucz. wyż.: prof. Schönwälder, prof. Dr. Tittler, Dr. Döring i Küntzel. Naucz. etat.: Prifich, Duda, Hubner, Göbel, Zopf i Holzheimer. Naucz. pomoc.: Zwirnmann; naucz. śpiewu: kantor Jung; naucz. rel. katol.: kap. Hauke; naucz. rel. żyd.: Liebermann.

**6. Kłacko** (Glatz). Gimn. katol., założone 17 lipca 1626. 7 resp. 9 klas; szkolne: $8^1/_3$, $10^1/_3$, 14 tal.; etat: 8350 tal.

Dyrektor: Dr. Schober. Naucz wyż.: prof. Dr. Schramm, Dr. Wittiber i Rosner. Naucz. etat.: Beschorner, Glatzel, naucz. rel. Schiel (regens konwiktu), Dr. Schreck, Dr. Proske. Naucz. rel. ewang.: superintendent Richter; naucz. pomoc.: Dr. Jahnel (subregens konwiktu) i kand. Köhler; naucz. rys. i pis.: malarz Richter.

**7. Oleśnica** (Oels). Gimn. ewang.. 5 grudnia 1594 r. przez księcia Karola II. założone. 7 klas; szkolne 12, 16, 20 tal.; etat: 9356 tal.

Dyrektor: (vacat). Prorektor: Dr. Bömer. Konrektor: Dr. Kammerer. Koledzy: naucz. wyż. Rehm, Dr. Anton, naucz. wyż. Rahe, Keller i kantor Barth. Kolab. J. Ernst I. Naucz. pomoc. Kornek i W. Ernst II. Naucz. relig. katol. proboszcz v. Schalscha-Ehrenfeld.

**8. Świdnica.** Gimn. ewang. 26 stycznia 1707 otworzone. Biblioteka przeszło 12,000 dzieł liczy. 9 klas; szkolne od miejscowych 12, 16, 18, 24 tal., od zamiejscowych 14, 18, 20, 22, 24 tal.; etat: 8465 tal.

Dyrektor: Friede. Naucz. wyż. prorektor prof. Dr. Schmidt, konrektor Rösinger i Dr. Golisch. Koledzy: Dr. Hildebrand, *Dr.* Schäfer, Schirrmann, Aust, Hüttig i Dr. Altenburger, Dr. Tanzmann i kand. Scholz. Naucz. relig. ewang. archidyakon Rolffs; naucz. relig. katol. kapelan Puschel; naucz. techn. Bischoff (zarazem naucz. śpiewu); naucz. turn. Amsel.

## B. Obwód rejencyjny Opolski.

**1. Gliwice.** Gimn. katol., 29 kwiet. 1816 otworzone. 11 klas; szkolne 14 tal. i 15 sgr. za turn.; etat 12,277 tal.

Dyrektor: K. Niederding. Naucz. wyż. prof. Heimbrod, Liedtki i Polka. Naucz. etat. Steinmetz, Sockel (1. naucz. rel. kat.), Schneider, Hawlitschke, Dr. Völkel, Dr. Benedix, Dr. Schuppe i Dr. Taube. Naucz. pomoc. Baranek, Schink, Dr. Matzner i Woitylak; naucz. rel. ew. pastor Beer; naucz. rel. żyd. rabin Dr. Hirschfeld; naucz. śpiew. Lindner; naucz. rys. Ullmann.

**2. Głupczyce** (Leobschütz). Gimn. katol., 1752 roku założone. Biblioteka liczy 7128 dzieł; 9 klas; szkolne 10, 12, 16 tal.; etat: 10,000 tal.

Dyrektor: Dr. Henr. Kruhl. Naucz. wyż. prof. Dr. Fiedler, Dr. Winkler i naucz. rel. Kirsch; naucz. etat. Tiffe, Dr. Webe, Dr. Stephan, Kleiber, Meywald, Schönhuth i Dr. Gudermann; naucz. pomoc. Dr. Lehmann i Nawrath; naucz. rel. ewang. kaznodz. Neumann; naucz. rys. Kariger.

**3. Nissa.** Gimn. kat., 4 listop. 1624 jako kolegijum jezuickie założone a 1787 na gimn. zamienione. Bibliot. naucz. 11,834 dzieła, uczni 5104 dzieła; 10 klas: szkolne 8, 10, 14 tal.; etat 9773 tal.

Dyrektor: Dr. Jul. Zastra; naucz. wyż. Dr. Kolmhorn, prof. Dr. Hoffmann i prof. Kastner; naucz. etat. wyż. naucz. Schmidt, Seemann, naucz. rel. Gotschlich, Teuber, Wutke, Dr. Jung I. Dr. Krause, Dr. Stawitzke i Dobroschke; naucz. pomoc. Seichter; naucz. rel. ew. superintendent Mehwald; naucz. śpiewu Jung II.; naucz. rys (vacat).

**4. Opole.** Gimn. katol., 1671 r. przez Jezuitów założ. 10 klas; szkolne 10, 12, 16 tal. i 1 tal. za turnieje.

Dyrektor: Dr. Aug. Stinner; naucz. wyż. Dr. Ochmann, Dr. Kayssler i naucz. relig. Huss; naucz. etat: Dr. Wagner, naucz. wyż. Peschke, Dr. Wahner, Rohr, Dr. Wentzel, Ziron i Soholz; naucz. rel. ew. kaznodz. Vangerow; naucz. pomoc. Langner, Cand. prob. Dr. Franke, Dr. Larisch i Dr. Zupitza; naucz. języka polsk. kapelan Citronowski; naucz. rys. i pis. Buffa; naucz. śpiewu: dyrektor muzyki Kothe; naucz. szkoły przygotow. Baumann; naucz. turn. Hielscher.

**5. Raciborz.** Gimn. ewang., 2 czerw. 1819 r. założone. Bibliot. 2480 dzieł; 11 klas; szkolne 16 i 20 tal.; etat 13,343 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Scheibel. Naucz. wyż. prorektor Keller, konrektor Fülle, Kinzel i Reichardt; naucz. etat. Wolff, Menzel, Dr. Levinson, Dr. Werkmeister, Lippelt i Dr. Karbaum; naucz. rel. ew. superintendent Redlich; naucz. kat.

ksiądz Dr. Grimm; naucz. pomoc. Bock i Wiesner. Cand. prob. Dr. Zickler; naucz. języka polskiego proboszcz Krahl; naucz. rysunk. Porske.

## C. Obwód rejencyjny Lignicki.

**1. Bolesław** (Bunzlau). Gimn. ewang. 15 kwietnia 1858 otworzone. Biblioteka 335 dzieł; 9 klas; szkólne od miejsc. 8, 10, 14, 16, 20, 24 tal.; od zamiejsc. 10, 12, 16, 18, 24 tal.

Dyrektor Dr. F. W. Beisert. Naucz. wyż. prorektor Hess, Fährmann i Dr. Meyer. Naucz. etat. Dr. Schmidt, Dr. Rhode, Luchterhand, Dr. Adler, Mroczek. Kolab. Heinrich, Hering i Dr. Scholtz; naucz. techn. Schwartz; naucz. relig. kat. wik. Bautz; naucz. szkoły przyg. Engmann.

**2. Głogów.** Gimn. ewang., 1 listop. 1708 jako seminaryjum założ, od 12 listop. 1812 gimn. Bibliot. 4850 tom. 8 klas; szkólne 13 do 19 tal. i 1 tal. za turn.; etat 10,580 tal.

Dyrektor Dr. G. A. Klix. Naucz. wyż. prorektor prof. Dr. Petermann, Dr. Liersemann, Stridde i Beissert; naucz. etat. Adrian, naucz. wyż. Schultz, Scholtz, Binde i Dr. Meves. Kolab. Karnauke. Cand. prob. Dr. Mattern i Kunzendorf; naucz. turn. Haase; naucz. szkoły przygot. Leutloff.

**3. Głogów.** Gimn. kat., przez Jezuitów 20 maja 1626 założone, a przez cesarza Ferdynanda II. potwierdz. 9 klas; szkólne 10, 12, 16 tal.; etat 13,252 tal.

Dyrektor: Dr. Edw. Wentzel. Nacz. wyż. prof. Uhdolph. Dr. Muller, Eichner, v. Raczek i Padrock; nauczyc. etat. Knötel, Dr. Franke, naucz. rel. kat. Lic. Arnold i Schröter. Nauczyc. pomoc.: Dr. Nauke, Dr. Scholz i Simon; nauczyc. szkoły przygotow., pis., rach. i jęz. polsk. Murrmann; naucz. relig. ewang. past. Schmuckert; naucz. śpiewu: Strauchman: nauczyc. turnieji Haase.

**4. Zgorzelice** (Görlitz). Gimn. ewang., od 22 czerwca 1565 Gymn. Augustum. Bibliot. 20,000 tom.; 9 klas; szkólne od miejscowych 12 do 24 tal., od zamiejscow. 16 do 30 tal. Etat: 11,523 tal.

Dyrektor: Dr. J. K. G. Schütt. Naucz. wyż. konrektor prof. Dr. Liebig, prof. Kögel, Dr. Wutzdorff i Dr. Wilde; naucz. etat. Dr. Störmer, Urban, Dr. Joachim, Wild, Dr. Buchwald i Kabstein; naucz. szkoły przygotow, Röhr, Gohr i Sachs; naucz. rel. kat. prob. Stiller; naucz. śpiewu. dyrekt. muzyki Klingenberg; nauczyc. rysunków Kadersch; naucz. turnieji Böttcher.

**5. Hirschberg.** Gimn. ewang. założone 29 września 1712. 6 klas; szkólne 16 do 20 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. A. Dietrich. Naucz. wyż. prorektor Dr. Grautoff, Dr. Mossler, konrektor Krügermann, Dr. Exner i Dr. Haacke. Kol. Dr. Werner: naucz, pomoc. Nowak; naucz. techn. Müller; naucz. relig. ew. superintendent Werkenthin; naucz. relig. katol. kapelan Budler.

**6. Jawór** (Jauer). Gimn. ewang., było w zeszłym stuleciu lyceum, z którego uczniowie na akademiją odchodzili; od r. 1811 trzyklasowa wyższa szkoła obywatelska, a od 9 październ. 1865 gimn. Bibliot. 3000 tom.; 5 klas (VI.—II.) i 2 klasy przygotow.

Dyrektor: Dr. R. Volkmann. Naucz. wyż. prorektor (vacat), konrektor Dr. Scheiding i subrektor Dr. Noss; naucz. etat. Brauer, Dr. Lilie i Treu; naucz. techn. Bekker i kantor Fischer. Candt. prob. Weyrauch; naucz. szkoły przygotow. Schön i Beyer.

**7, Lubań** (Lauban). Gimn. ewang. w 10. stuleciu założone, 1825 zreorganizowane, od 17 października 1827 gimn. Bibliot. 1205 dzieł; 5 klas; szkolne od miejscow. 8 do 18 tal. zamiejscowych 12 do 24 tal.; etat 6328 tal.

Dyrektor: Dr. K. Edw. Guthling. Naucz. wyż. prorektor Haym, konrektor Faber i Dr. Gasda; naucz. etat. Dr. Peck, Dr. Konitzer; naucz. pom. kantor i dyrektor muzyki Böttger. Kandyd. Aust i Wollmann; naucz. rel. kat. kapel. Dollmann.

**8. Lignica.** Akademija rycerska ewang., 19 kwietnia 1708 założona. Bibliot. 15,000 tom., 6 klas, szkolne 30 tal. i 6 tal. za turn., etat 35,000 tal.

Dyrektor: Dr. Stechow. Profesorowie: Gent, Dr. Schönermark; naucz. wyż. Dr. Pröller, Dr. Baron v. Kittlitz-Ottendorf, Weiss, Dr. Pfudel i Fröhde. Inspektorowie: Dr. Brosin, Dr. Lilie i Cand. min. Dressel; naucz. rel. kat. kapel. Dohn; koniuszy Baron v. Grimmenstein; naucz. szermierstwa, i turn. Scherpe; naucz. rysunk. malarz Blätterbauer: naucz. śpiewu, kantor Dorn.

**9. Lignica.** Gimn. ewang.; szkoła u św. Piotra początkiem była gimn., jako wyższy zakład naukowy od 31 grudn. 1309. 8 klas, szkolne 10, 12, 16, 18, 20 tal. etat 6666 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. Edw. Müller. Naucz. wyż. prorektor Dr. Brix, konrektor Dr. Bermann i Dr. Kraffert; naucz. etat. Harnecker, Brier, Dr. Rummler, Dr. Preuss i Ilse; naucz. pomoc. Degen; naucz. rel. kat. kapelan Jentsch; naucz. rys. Matthias; naucz. śpiew. kantor Franz; naucz. turn. Scherpe; naucz. szkoły przygotow. Kösler i Berger.

**10. Żegan** (Sagan). Gimn. katol. założone przez Wallensteina a w roku 1628 jezuitom oddane. 9 klas; szkolne 13 do 19 tal.; etat 8546 tal.

Dyrektor: Dr. Flögel. Naucz. wyż. prof. Dr. Kayser, Franke i Dr. Hildebrand; naucz. etat. Leipelt, Schnalke, naucz. relig. katol. Heinrich, Kössler i Hansel. Cand. prob. Rothkegel; naucz. rel. ewang. kaznodzieja i rektor Altmann: naucz. śpiewu, pis. i rys. Hirschberg.

**11. Bolesław** (Bunzlau). Król. zakład sierót i progimnazyjum, założ. 14 marca 1754 przez mistrza mularskiego Godofr. Zahn, a w r. 1803 w poczet zakładów rządowych przyjęte; przysposabia uczniów do sekundy gimn. lub szkoły realnej. 6 klas, 18 tal. szkóln. pensyjonarze 100 tal.

Dyrektor: Dyrektor seminaryjum Watzoldt. Naucz. wyż. Kunth i Klemens, naucz. etat. Hilgenfeld, Rudolph, Deckert, Neumann i Baumann; naucz. muzyki, naucz. semin. Drath, naucz pomoc. Becker, Süssenbach i Springer.

**12. Bukowa** (Lüben). Ewang. szkoła wyższa chłopców, resp. szkoła przygotowawcza do gimn., 2 maja 1859 otworz. 3 klasy (VI.—IV.), szkolne 6 tal.

Rektor: Hinz (zarazem rektor szkoły obywatelskiej). naucz. etat. A. Heinrich I. i konrektor Reiche, naucz. pom. kantor Günther, organista B. Heinrich II., naucz element. Wolf, Vierling i Herrmann.

**13. Nisky.** Pedagogijum założone 1740. 5 klas (V.—I.), pensyjonarze płacą 150 tal.

Dyrektor: Fr. Müller. Konr. Reichel, naucz. etat. Wiegering, Mentzel, Schultze, Erxleben i Bauer, naucz. pom. Stolz.

---

## Szkoły realne i wyższe szkoły obywatelskie.

### I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

#### A. Obwód rejenc. Poznański.

**1. Międzyrzecz.** Szkoła realna 7 maja 1833 założona. Bibliot. 1300 dzieł, 6 klas, szkolne 20 tal., etat 7500 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. H. Loew, naucz. wyż. Holzschuher, Hahnrieder, Dr. Schäfer i Dr. Assmus, naucz. etat. Dr. Ney, Kühn i Sturtewant, naucz. pomoc. Dr. v. Bernard, naucz. rel. ew. superint. Vater, naucz. rel. kat. prob. Gogol, Cand. prob. Dr. Bocksch i Collmann.

**2. Poznań.** Szkoła real. symult. 15 paźdz. 1853 otworz. 12 klas, 3 klasy przygotow., szkolne od miejsc. $21^3/_{10}$ tal. od zamiejsc. $25^3/_{10}$ tal., etat 17,960 tal.

Dyrektor: Dr. W. H. Brennecke, naucz. wyż. prof. Dr. Motty, prof. Dr. Haupt, Dr. Magener, Dr. Gruszczyński i Dr. Breysig, nauczyciel religiji katolickiej: ksiądz Licenc. Kubowicz, naucz. etat. Studniarski, Plehwe, Dr. Rzepecki, Dr. Jutrosiński, Dr. Schmidt, Braun, Fabisz, Knothe, Dr. Krug, Dr. Müller I. Cand. prob. Dr. Warschauer i Jerzykiewicz; naucz. relig. żyd. Dr. Rosenstock; naucz. rys. Jaroczyński, naucz. śpiew. dyrektor muzyki Greulich, naucz turn. Więzewski i Kloss, naucz. szkoły przygotow. Pracht, Hechler i Müller II.

**3. Wschowa.** Szkoła realna symult. 19 kwietnia 1853 otworzona, 6 klas, w szkole przygot. 12—14 tal. szkólnego, w klasach realnych 16 tal. od miejsc., 20 tal. od zamiejsc. etat 6680 tal.

Dyrektor: A. Krüger, naucz. wyż. Dr. Seidler, Dr. Blindow i Dr. Merschmann, naucz. etat. Graupner, Knorr, Wagler i Hahn, naucz. pomoc. Jorke, naucz. rel. ew. wyż-zy kaznodz. Specht, naucz. rel. kat. wikary Maliski; naucz. śpiew. Brade.

**4. Rawicz.** Szkoła realna symult. 27 lipca 1852 założona, 7 klas, szkólne od miejscowych 16 tal od zamiejscowych 20 tal., etat 6290 tal.

Dyrektor: Wilib. Rodowicz. Naucz. wyż. Sachse, Dr. Geisler i Dörry. Naucz. etat. kaznodz. Tecklenburg, André, Bischoff, Lizak i Krüger. Naucz. rys. malarz Baer; naucz. rel. ew. pastor Kaiser; naucz. rel. kat. prob. Gaertig; naucz. rel. żyd. rekt. Cohn; naucz. śpiew, Linke; naucz. turn. Jordan.

**5. Poznań.** Szkoła średnia 11 październ. 1858 założ. Bibliot. 1925 tom.; 7 klas; 8 tal. szkólnego; etat 8500 tal.

Rektor: K. Hielscher. Naucz. etat. Kasprowicz, Kupke, Buchowski, Graeter, Hubert, Pawelitzki, Hecht, Heinze, Weymann, Gentz, Bienwald, Franke. Naucz. rel. żyd. Dr. Hirschfeld; naucz. rys. Schön; nacz. ręcznych robót: pani Knappe, Pawelitzka, Graeter i Wenster.

## B. Obwód rejencyjny Bydgoski.

**1. Bydgoszcz.** Szkoła realna. 12 maja 1851 założona. Bibliot. 2200 tom. 11 klas; szkólne od miejsc. 14 do 18 tal. od zamiejsc. 22 tal.; etat 13,183 tal.

Dyrektor: Dr. Gust. Gerber. Naucz. wyż. Lehmann, Dr. Weigand, Hetzel i Dr. Schultz. Naucz. etat. Dr. Kleinert, Dr. Boning, Dr. Dubisław, Boehck, Pelzer, Dr. Menzel, Schmidt, Bundschu, Pfefferkorn, Rohnke i Weigmann. Naucz. pomoc. Dr. Eichner, Hertel; naucz. rys. Wolff; naucz. jęz. polsk. Betkowski, kaznodzieja Serno i wikar. Jaskólski.

**2. Bydgoszcz.** Szkoła obywatelska symult. od 11 czerw. 1860; 5 klas; szkólne od miejscowych 6 do 8 tal., od zamiejscowych 12 tal.; etat 2864 tal.

Rektor: Koehler (inspektor szkół miejskich). Naucz etat. Bartsch, Röschen, Betkowski, Schmidt i Westphal.

## II. Prusy.

### A. Obwód rejencyjny Królewiecki.

**1. Królewiec.** Szkoła realna na zamku, 17 sierpnia 1664 założona. 10 klas: szkólne 24 tal.; etat 14,000 tal.

Dyrektor: Henryk Schieferdecker. Nauczyc. wyż. Dr. Ohlert, Wechsler, v. Behr i Dr. Schirmacher. Naucz. etat, Rupp, Büttner, Schultz, Fuhrmann i Müller. Naucz. elemnt. Witt I. i Erdmann. Naucz. pomoc. i członkowie seminaryjum pedagogicznego Dr. Rindfleisch, Dr. Heubach i Hutt. Cand. prob. Zimmermann. Naucz. rys. Kreutzberger; naucz. śpiew. Witt II.; naucz. turn. Dr. med. Muttrich.

**2. Królewiec.** Szkoła realna miejska roku 1525 jako ewangielicko-łacińska szkoła założ. 8 klas; 25 tal. szkólne; etat 10,680 tal.

Dyrektor: Dr. A. Schmidt. Naucz. wyż. prorektor Dr. Schwidop, konrektor Dr. Michaelis i Dr. Bernhard. Naucz. etat. Dr. Meyer, wyż. naucz. Dr. Böttcher, Dr. Wegener i Dr. Krosta. Nauczyc. pomoc. Czwalina; naucz. elementarny Herrmann i Hittcher; naucz. rys. Knorr; naucz. rel. ewang. kaznodz. Jakobi; naucz. śpiew. kantor Richter.

**3. Welawa** (Wehlau). Szkoła realna ewangielicka, 4 paźdz. 1848 otworzona, a 16 listop. 1865 do szkół realnych I. rzędu wyniesiona. 6 klas; szkólne 12, 18, 24 tal.

Dyrektor: W. Friederici. Nauczyc. wyż. Fritsche, Dr. Schmitz i Schwarz. Naucz. etat. Dr. Kluetz, Dr. Reichau, kandydat kaznodz. Kaufmann, subrektor Born, kantor Walter i Liedke. Naucz. turn. Winkelmann.

**4. Bartoszyce** (Bartenstein). Wyższa szkoła obywatelska, r. 1840 zreorganizowana, w październiku 1866 za wyższą szkołę obywatelską uznana. 5 klas realnych i 1 przygotow.; szkólne od miejc. 2 do 10 tal., od zamiejsc. 8 do 12 tal.

Dyrygent: rektor A. Kissner. Naucz. etat. rektor Weishaupt, Bartsch, Kiy, konrektor kantor Kolbe i Sambol. Naucz. klasy przygot. Wolff; naucz. pomoc. ksiądz Sommer.

**5. Piława** (Pillau). Wyższa szkoła obywatelska, jako taka 25. czerwca 1864 uznana. 5 klas i 1 klasa przygotow. szkólne 8, 12, 16 tal.; etat 4000 tal.

Rektor: A. Zander. Prorektor Dr. Kretzschmar. Konrektor Dr. Lampe. Naucz. etat. kand. kaznodz. Lange, Lau i Reimer. Naucz. szkoły przygotow. i turn. Klaudtky.

**6. Nibork** (Neidenburg). Wyższa szkoła obywatelska, 1864 r. na nowo zorganizowana. 4 klasy realne; etat 5000 tal.; z tą szkołą połączona jest wyższa szkoła panieńska.

Rektor: Kohrt. Prorektor: Wutke. Konrektor: Duwalt i Bajohr. Literat: naucz. realny Moesta. Naucz. element. etatowi: kantor Arbeit, Klentzan, Martschinowski, Kubert, Fradel, Weichert i Borchert. Nauczycielki: panna A. Dennert i pani Nietzki.

## B. Obwód rejencyjny Gumbiński.

**1. Instruć** (Insterburg). Klasy realne połączone z gimnazyjum tamtejszem.

**2. Tylża.** Szkoła realna miejska 30 paźdz. 1839 otworzona. 7 klas i 3 klasy przygotow.; szkolne 12 do 20 tal. etat 9477 tal.

Dyrektor: L. Koch. Naucz. wyż. Hohmann, Fleischer, Dr. Francke i Dr. Ellinger. Naucz etat. Mogk, Jackstein, Völkel, Thomas i kantor Kohrt. Naucz. pis. i rys. malarz Thiel; naucz. szkoły przygotow. Preuss i Lange.

## C. Obwód rejencyjny Kwidzyński.

**1. Toruń.** Klasy realne w połączeniu z tamtejszem gimnazyjum.

**2. Chełmno.** Wyższa szkoła obywatelska. 5 klas; szkolne 10, 12, 15 tal.; etat 5206 tal.

Rektor: Dr. Jul. Kewitsch. Naucz. etat.: naucz. wyż. Mothill, Fischer i Totz. Naucz. pomoc. kandydat kaznodz. Schuur; naucz. techn. Ewert; naucz. relig. katol. dziekan Lic. Bartoszkiewicz.

**3. Kwidzyna.** Szkoła Fryderyka, 11 marca 1865 do rzędu wyższych szkół obywatelskich wyniesiona. 5 klas realnych i 3 klasy szkoły średniej; szkolne 4, 5, 6, 8, 10, 12, 14, 16 tal.

Rektor: A. v. d. Oelsnitz. Naucz. etat.: naucz. wyższy Zschech, Diehl, Wacker, Jonathas i Protzen. Naucz. etat. szkoły średniej: Funk, Christ i Dissner.

## D. Obwód rejencyjny Gdański.

**1. Gdańsk.** Szkoła realna u św. Piotra i Pawła, istniała już 1457 jako szkoła łacińska. 10 klas; szkolne 14, 18, 22, 26 tal.

Dyrektor: Prof. Dr. T. Strehlke. Naucz. wyż. prof. Tröger, Menge i Dr. Cosak. Naucz. etat. Boeszoermeny, Dr. Sonnenburg, Dr. Pfeffer, Dr. Wulckow, Dr. Möller, Dr. Neumann i Grüning. Naucz. rel. ew. pastor Schaper; naucz. rel. kat. prob. Dr. th. Redner. Naucz. pomoc. Cand. th. Rothe i Braunschweig; naucz. rys. Rodde; naucz. element. i śpiewu Zur; pomocny naucz. element. Gerlach.

**2. Gdańsk.** Szkoła realna u św. Jana, istniała już 1552 roku jako szkoła łacińska; 13 paźdz. 1849 jako szkoła realna otworzona. 10 klas.

Dyrektor: (vacat). Tymczasowy dyrygent naucz. wyż. Dr. Panten. Naucz wyż. Küster, prof. Gronau i Dr. Panten, Naucz. et. Stobbe, Dr. Laubert, Dr. Bail, Dr. Brandt, Möhler. Schmidt i Schultze. Naucz. pomoc. kandydat kazn. Hardt i Lohmeyer. Naucz. rel. ew. kazn. Collin; naucz. relig. katol. prob. Dr. th. Redner; naucz. pis. i rys. Krahn; naucz elem. Hugen i Reinke; naucz. języka polsk. Makowski.

**3. Elbląg.** Szkoła realna 3 kwietnia 1837 otworzona. 9 klas; szkolne 12, 15, 17, 18 tal.

Dyrektor: Dr. Fr. Kreyssig. Naucz. wyż. Dr. Büttner, Schilling i Dr. Friedländer. Naucz. etat. Dr. Butz, Dr. Nagel, Dr. Dorr, Genrich i Kutsch. Naucz. pomoc. kandydat Pietsch; naucz. szkoły przygotow. Hermanowski, Döpner i Albrecht; naucz. rys. malarz Müller; naucz. rel. kat. kap. Hohendorf.

**4. Jenkau** pod Gdańskiem. Zakład wychowawczy Conrada, 12 lipca 1798 założony a na św. Michał 1863 do rzędu wyższych szkół obywatelskich wyniesiony. 5 klas: szkolne 12 tal., etat 12,000 tal.

Dyrektor: Otto Edw. Ferd. Neumann. Naucz. wyższy Dr. Eggert i Schulz. Naucz. etat. Dr. Lion, Dr. Crone, Haine i Lange. Naucz. śpiew. pis. i turn. Bartel.

**5. Gdańsk.** Najstarsza miejska ewang. szkoła średnia św. Katarzyny; od r. 1564 protest. szkoła, 1791 niemiecko-łacińska szkoła obywatelska, od 1830 niemiecka szkoła obywatelska, o 3 klasach; 1862 o 4 klasach i teraz szkołą średnią zwana. Szkolne 6 i 8 tal.

Dyrygent: Naucz. wyż. Besser. Naucz. etat. Henning, Neumann i Eggert

**6. Starogard.** Wyższa szkoła obywatelska i wyższa szkoła panieńska; pierwsza z 4 klasami realn., ostatnia z 3 klasami.

Rektor: Dr. Hintz. Kaznodz. Stadie. Konrekt. Kuhls, naucz. et. kand. wyż. st. naucz. Rossberg, Appel, Klotz i Pieske. Nauczycielki: panna Eggers i Gizicka; naucz. ręcznych robót: panna Hinzen.

## III. Szląsk.

### A. Obwód rejencyjny Wrocławski.

**1. Wrocław.** Szkoła realna 15 paźdz. otworzona. 14 klas realnych; szkólne: od miejsc. 16 tal., od zamiejsc 24 tal. i 1 tal. za turn.

Dyrektor: Dr. Alb. Kletke. Naucz. wyż., prorek., prof. Trappe, Müller, Reiche, Dr. Adler, Dr. Henn i Dr. Szottky. Naucz. etat. Dr. Plucker, Dr. Rabe, Dr. Bensch, Lendin, Dr. Stenzel, Dr. Wosidło, Gnerlich, Auras i Thiemich. Kollab. Mehnert i Dr. Ludwig. Naucz. rel. kat. kuratus Redlich; naucz. jęz. francuz. Jäger, naucz. jęz. polsk, Fritz, naucz. rys. Haberstrohm i malarz Karsch, naucz. pis. Nickel, naucz. śpiew. kantor Thoma.

**2. Wrocław.** Szkoła realna u św. Ducha; założenie nie wiadome, jednakże przed rokiem 1549. 10 klas realnych, 3 klasy przygot.; szkólne, w klasach realnych od miejsc. 16 tal. i 1 tal. za turn., w klasach przygot. 12 tal., od zamiejsc. 24 tal., a w klasach realn. 1 tal. za turn.

Dyrektor: Frydr. Aug. Kamp. Naucz. wyż., prorek., prof Dr. Marbach, Dr. Reimann, Füger i Dr. Friese. Naucz. etat. Dr. Milde, Dr. Grosser, Domke, Dr. Fiedler Schmidt, Bertram i Dr. Bobertag. Naucz. pomoc. Gauhl i Dr. Engler. Naucz. szkoły przygot. Zahn, Kappel i Propfer. Naucz. rel. kat. kuratus Schneider; naucz. rys. Rosa i Nippert; naucz. śpiew. dyrektor muzyki Siegert; naucz. pis. Hoffmann.

**3. Wrocław.** Wyższa szkoła kupiecka, na Wielkanoc 1863 otworzona; 2 dodziały: kurs wyższy i kurs dla uczni kupieckich; kurs trzyletni. W wyższym kursie 100 tal., w niższym kursie 30 resp. 20 tal. szkólnego.

Dyrektor: Dr. Steinhaus. Naucz. Battig, Dr. Fidler, Hähne, Schmidt, Weigelt i Kornatzki.

**4. Brzeg.** Wyższa szkoła chłopców ewang., 1862 otworzona. 3 klasy; 4 tal. szkólnego.

Rektor: Kurts Konrekt. Dr. Maser. Naucz. etat. Matern i Fundner (zarazem naucz. turn.).

### B. Obwód rejencyjny Opolski.

**1. Nissa.** Szkoła realna 8 paźdz. 1832 otw., 6 klas.

Dyrektor: Dr. K. Sondhauss. Naucz. wyższy Webebauer, Dr. Bauer, Theissing i Oberdick. Naucz. etat. Ad. Pohl I., Dr. Stier. Brilka i Lic. Langer (naucz. rel. kat). Kollab. Aug. Pohl II. Naucz. pomoc. Dr. Poleck; naucz. rys. Vogt; naucz. śpiewu Kuschel.

**2. Kluczbork** (Kreuzburg). Wyższa szkoła obywatelska, 2 paźdz. 1860 otworz. 5 klas; szkólne od miejsc. 10, 12, 14, 16, 18 tal., od zamiejsc. 12, 14, 16, 18, 20 tal.

Rektor: Fr. Jarklowski. Naucz. etat., Dr. Stürmer, Völkerling i Dr. Kretschmer. Naucz. pomoc. Figulus. Naucz. element. Frendel; naucz. rel. kat. kuratus Lic. Swientiek; naucz. rys. v. Werenbach; naucz. turn. Waniek.

**3. Prądnik** (Neustadt). Wyższa szkoła obywatelska katol. 1 paźdz. 1860 założ.: 7 klas; 12 tal. szkólnego.

Rektor: Józef Kleineidam. Naucz. etat. Kachel, Dr. Scholz; naucz. rel. Weiss, Dr. Erxner i Oyen. Naucz pomoc. Holitzschky. Naucz. rel. ew. pastor Rampold; naucz. rys. Hauptstock; naucz. śpiew. Kuntzel; naucz. turn. Heukeshoven.

## C. Obwód rejencyjny Lignicki.

**1. Zgorzelice.** Szkoła realna 4 paźdz. 1837 otworzona. 11 klas, 3 klasy przygot.; szkólne od miejsc 10, 12, 16. 20, 24 tal.; od zamiejsc. 12, 16, 20, 22, 26, 30 tal.

Dyrektor: Prof. F. W. Kaumann. Naucz. wyż. Fechner, Heinze, Fritsche, Jehrisch. Naucz. etat. Dr. H. Schmidt, Dr. Blau, Dr. Frahnest, Dr. Schwarzlose, Stubenvoll. Naucz. element. etat. Krause i Weidner. Naucz. szkoły przygotow. Hennig, Lehmann i Preus. Naucz. pomoc. Dr. Grabow i Cand. prob. Thorer. Naucz. rel. ew. archidyak. Haupt i dyak. Schuricht. Naucz. rel. kat. ksiądz Stiller; naucz. rel. żyd. Dr. Freund; naucz. rys. Kadersch; naucz. śpiew. dyrektor muz. Klingenberg; naucz. turn. Böttcher; naucz. pomoc. rys. Schäfer.

**2. Zielonagóra** (Grünberg). Szkoła realna (szkoła Fryderyka Wilhelma) 1 kwietnia 1853 otworz. 6 klas; szkólne od miejsc. 12, 15, 18 tal., od zamiejsc. 20, 24 tal.

Dyrektor: Dr. Ernest Brandt. Naucz. wyż prorek. Aumann, Dr. Staupe i Mathai. Naucz. etat. Dr. Kuntze, Dr. Helmich, Atzler, Decker, i Malitius. Naucz. śpiew. Paschke; naucz. rel. ew. kaznodz. Gleditsch; naucz. rel. kat. kapelan Kosche. Przełożony szkoły przygot. Durdant; naucz. pom. Rothe.

**3. Landeshut.** Szkoła realna; w r. 1709 jako szkoła łacin. założona, na św. Michał 1836 zreorganizowana, a 2 marca 1865 do szkół realnych I. rzędu wyniesiona. 6 klas; szkólne od miejsc 12, 15, 18 tal., od zamiejsc 24 tal.; etat 6200 tal.

Dyrektor: Dr. Janisch. Naucz. wyż. prorekt. Schwarzkopf, konrektor Höger. Naucz. etat. Wagner, Dr. Thiemann,

Dr. Rössler, Nocht i Mechter. Naucz. etat. rel. kat. prob. Hauffe; naucz. rys. Meyer.

**4. Goldberg.** Szkoła łacin. ewang.; zakład ten był od r. 1531 do 4 listop. 1622 gimnazyum. 4 klasy; szkólne od miejsc. 4 tal. od zamiejsc 6 tal.

Rektor: Groche. Naucz. etat. kand. kazn. Peters, kantor Voelkel i Reimann. Naucz. pomoc. Fiedler.

**5. Neusalz.** Pensyonat v. Crousaza, na ś. Michał 1862 do Neusalz przeniesiony; przysposabia uczniów do tercyi gimn. lub realnej szkoły. 3 klasy; pensyonarze płacą 160 tal.

Dyrygent i założyciel zakładu v. Crousaz.

**6. Sprotawa.** Wyższa szkoła obywatelska 10 kwiet. 1866 otworzona. 4 klasy (VI. — III.); szkólne od miejsc. 12 tal., od zamiejsc. 18 tal., etat 5400 tal.

Rektor: Dr. Simon. Naucz. etat. Dr. Mass, Dieckmann i Dr. R. Müller. Naucz. rel. kat. kapelan Grollmus; naucz. rys. Meyer. Naucz, element. Glauer; naucz. śpiew. kantor Zimmer; naucz. turn. Rothenburg.

---

## Seminaryja nauczycielskie.

### I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

#### A. Obwód rejenc. Poznański.

**1. Koźmin.** Seminaryjum naucz. ewang. 20 wrześ, 1865 otworzone. 3 klasy; bibliot. liczy przeszło 300 tom.; etat. 5690. tal.

Dyrektor: Stoll. Naucz. etat. Weiland. Naucz. muzyki Berger i Isemer. Naucz. normalny Lämmchen.

**2. Paradyż.** Sem. naucz. katol. 14 lipca 1836 założ. 3 klasy; etat seminaryjum 7499 tal.; etat połączonego z seminaryjum zakładu sierót, 1122 tal.

Dyrektor: Ks. Rob. Samberger. Naucz. etat. Ks. Lic. Radziejewski, Kiszewski, Kretschmer (muz.), Zoellner. Naucz. norm. Janecki.

**3. Poznań.** Sem. naucz. kat.; kurs trzyletni: etat 6683 tal,

Dyrektor: Nitsche. Naucz. Baeck, Klonowski, Malczewski, Biedermann. Naucz. norm. Kasiński.

**4. Poznań.** Sem. guwernantek i nauczycielek po familijach, jako i nauczycielek przy szkołach miejskich roku 1840 założ. 2 klasy; etat 2685 tal.

Dyrektor: Dr. Barth. Naucz. etat. rektor Hensel, rekt. Vanselov, Schonke, Woliński i Krumbhorn. Naucz. rel. kat. regens Bilewicz; naucz. rel. ew. radzca konsyst. i senior Dr. Goebel. Naucz. pomoc. Favre, dyrekt. muz. Greulich. Nauczycielka konwers. francuz. Mnlle. Robert; naucz. rys. pani Hüppe.

## B. Obwód rejencyjny Bydgoski.

**1. Kcynia.** Sem. naucz. kat. internat, 15 paźdz. 1865 otworzne; urządzone na 70 uczniów. Etat zupełny wynosi 5900 tal., na co rząd płaci 5600 miasto Kcynia 300 tal., za co seminaryjum utrzymuje szkołę miejską katolicką.

Dyrektor: Ksiądz Licen. Fr. Speers. Naucz. Szafrański, Kielczewski, Nitschke, Jonas. Naucz. norm. Kukułka.

**Bydgoszcz.** Sem. naucz. ewang.; w r. 1820 jako sem. symult. założone. od r. 1826 ewang. 3 klasy; bibliot. 2193 tom.; etat 5243 tal.

Dyrektor: Giebe. Naucz. Dr. Kriele, Steinbrunn (naucz. muz.), Binkowski (naucz. turn. i norm.) Freyer i Ortlipp.

# II. Prusy.

## A. Obwód rejencyjny Królewiecki.

**1. Brunsberg.** Sem, naucz. katol. internat; 2 lipca 1811 założone. 3 klasy; etat 5805 tal. (dodatku rządowego 5066 tal.).

Dyrektor: Dr. A. Arendt. Naucz. etat. Schütze, Rohn, M. Arendt i Hohendorf. Naucz. głuchoniemych Schoensee.

**2. Iława** (Pr. Eylau). Sem. naucz. ewang. r. 1774 w Klein Dexen założone a 1834 do Jeławy przeniesione. 3 klasy; etat 8174 tal.

Dyrektor: Schorn. Naucz. etat. kandydat kazn. Fischer, Waldbach, Grunau (przełożony szkoły normalnej) i Lettau. Naucz. pomoc. Nowack.

**3. Królewiec.** Sem. naucz. ewang. i dom sierót 18 stycznia 1701 przez króla Fryderyka I. założone. 3 klasy; w zakładzie sierót 4 klasy gimnazyjalne; etat 16,000 tal.

Dyrektor: Dembowski. Naucz. wyż. Vetter. Naucz. etat. ksiądz Maass, Muller, organista Heidler, kandydat kazn. Titius i Lackner. Naucz. pomoc. Haseler. Naucz. normalny Radtke.

**4. Królewiec.** Sem. prywatne guwernantek i nauczycielek 1853 r. założone. Dyrygent: Roquette, kaznodz. francuzko-reform. gminy.

## B. Obwód rejencyjny Gumbiński.

**1. Węgobork** (Angerburg). Seminar. naucz. ewang., utrak. (mazursko-niemieckie), externat 9 czerwca 1829 założ. 3 klasy; etat 6784 tal.

Dyrektor: Kahle, Naucz. etat. kandydat kazn. Skrodzki, Tobias, Grossmann i Ignée.

**2. Karalene.** Sem. naucz. ewang., założone 17 listop. 1811. 3 klasy; 18 stypendyjatów litewskich; etat 7718 tal., na co rząd płaci 6855 tal.

Dyrektor: Zacharias. Naucz. etat. kaznodz. Rudat, Laupichler, Glage, naucz. muz. Fehr i Knop.

## C. Obwód rejencyjny Kwidzyński.

**1. Grudziądz.** Sem. naucz. kat., dawniej kolegijum jezuickie 1 września 1816 założone. 3 klasy; etat 7862 tal.

Dyrektor: Ks. Lic. Jul. Zucht. Naucz. etat. dyrektor. muz. Szefrański, Prengel, Konsalik, Schmidt. Naucz. norm. Myśliwski.

**2. Grudziądz.** Sem. ewang. guwernantek i nauczycielek (zakład prywatny przy szkołach panien). Kurs $2^1/_2$ letni. Egzamin dojrzałości odbywa się pod przewodnictwem komisarza król. tylko na Wielkanoc.

Dyrygent: Dyrektor Bormann. Naucz. Rausch, Dr. Kregenberg i Scharlok. Naucz. muz. Holder-Egger; naucz. rys. Hindorf. Nauczycielki panny Mathies i Lorentz.

## D. Obwód rejencyjny Gdański.

**1. Pr. Frydland.** Sem. naucz. ewang., założone 1 października 1864. Bibliot. około 400 tom.; etat 6390 tal.

Dyrektor: Schultz. Nauczyciele etat. Triebel, Karaszek i Grässner (zarazem naucz. muz.). Naucz. norm. Nowack.

**2. Kościerzyna** (Berent). Sem. naucz. katol., otworzone w paźdz. r. 1866.

Dyrektor: Ks. Wodecki. Naucz. Kiewicz i Spohn (naucz. normalny).

**3. Malbork** (Marienburg). Sem. naucz. ewang., 1 maja 1813 otworzone. Externat. 3 klasy; etat 6391 tal.

Dyrektor: Borowski. Naucz, wyższy Heyl. Naucz. etat. Dagott, Lettau i Reiter (zarazem naucz. norm. i bibliot.).

## III. Szląsk.

### A. Obwód rejencyjny Wrocławski.

**1. Wrocław.** Sem. nauczyc. katol., założone 4 listop. 1765 r. Biblioteka: 2360 tom. 3 klasy; etat 5375 tal. (na co rząd płaci 3074 tal.).

Dyrektor: Marks. Naucz. etat. Schmidt i Battig. Naucz. muz. Kothe; naucz. normal. Franz. Schmidt i Rauhut.

**2. Ziębice** (Münsterberg). Sem. naucz. ewang. 22 list. 1847 w Löwen pod Brzegiem założone a 1849 do Ziębic przeniesione. 3 klasy; etat 5550 tal.

Dyrektor: Menges. Naucz. wyż. Fr. Scholz. Dyrek. muz. Mettner. Naucz. etat. Förster; naucz. normal. Rose; naucz. pomoc. Lehmann.

**3. Ścinawa** (Steinau). Sem. naucz. ewang., z którem połączony hrabiego v. Schlaberndorffa dom sierót. Semin. otworzone 15 paźdz. 1849, zakład sierót 14 paźdz. 1858. 3 klasy sem.; etat sem. 5418 tal. zakładu sierót 4800 tal.

Dyrektor: Wendel. Naucz. główny Sobolewski; dyrekt. muz. Richter. Naucz. etat. Müller; naucz. sem. i inspektor zakładu sierot Kern; naucz. turn. Borchardt; naucz. pomoc. sem. Blumenthal i Kleiner; naucz. zakł. sierót: Stiller.

### B. Obwód rejencyjny Opolski.

**1. Kluczborek** (Creuzburg). Semin. naucz. ewang., utrakw., założone 30 kwietnia 1858. 4 kursy: 2 preparandów i 2 seminaryjne. Etat 4414 tal.

Dyrektor: Semorak. Naucz. etat. Suprian, Rostalski i naucz. muz. Reichelt. Naucz. pomoc. i normalny: Steuer.

**2. Głogówek.** Sem. naucz. katol. internat., założone 7 kwietnia 1802 w Opolu a 1 grudn. 1803 do Głogówka przeniesione. 3 klasy; etat 7024 tal.

Dyrektor: Schaefer. Naucz. wyż. Besta. Naucz. etat. nauczyc. muzyki Heinze i Weiss. Nauczyc. pomoc. kuratus Hauschke, Kreis; naucz. norm. Cygan.

**3. Pyskowice** (Peiskretscham). Semin. naucz. katol. 4 listop. 1849 r. jako externat otworzone, od 1 październ. 1862 internat. 3 klasy; etat 5950 tal.

Dyrektor: Schylla. Naucz. etat. Nachbar, Nagel i naucz. muz. Metzner. Naucz norm. Bernatzky i Pastuschyk.

### C. Obwód rejencyjny Lignicki.

**1. Bolesław.** Sem. naucz. ewang., r. 1816 z Lignicy do Bolesławia przeniesione i z założonym w r. 1754 zakła-

dem sierót połączone. 3 klasy; etat 5254 tal., na co rząd daje 794 tal.

Dyrektor: Dr. K. Schneider. Naucz. wyż. Holtsch i Stubba; naucz. muz. Drath. Naucz etat. Richter I., Wehner; pomoc. naucz. muz. Richter II.

**2. Liebenthal.** Sem. naucz. katol. 18 październ. 1863 otworzone. 3 klasy; 40 tal. za stołowanie; etat 5110 tal.

Dyrektor: Lic. Hirschfelder. Naucz. etat. Dorn (bibliot. i nauczyc. turn.), naucz. muzyki Kothe i Nakel. Nauczyc. normal. Frobel.

**3. Reichenbach.** Sem. naucz. ewang., 15 paźdz. 1862 otworzone. 3 klasy; etat 5840 tal., na co rząd daje 4874 tal.

Dyrektor: Schumann. Naucz. etat. Menzel, Göbel, naucz. muz. Baumert i naucz. norm. Diesner. Naucz. pom. Herzog.

---

## Zakłady dla głuchoniemych.

### I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

**Poznań.** Zakład prowincyjonalny dla głuchoniem., 28 stycznia 1832 otworzony, a w r. 1864 rozprzestrzeniony. 40 głuchoniemych kosztem zakładu utrzymywanych bywa. 3 polskie i tyleż niemieckich oddziałów. Kto się starać chce o przyjęcie głuchoniemego na fundusz zakładowy, powinien pisać pod adresem: „An die ständische Commission zur Verwaltung der Taubstummenanstalt zu Posen.“

Dyrektor: dyrektor seminar. Nitsche. Naucz. etat. Toparkus, Matuszewski i Brzeski (naucz. turn.). Naucz. pomoc. Stiller. Nauczycielka ręcznych robót pani Toparkus.

### II. Prusy.

**1. Węgobork.** Zakład prowincyjonalny dla głuchon. dla Prus wschodnich, założony 3 maja 1832, otworz. 1 kwietnia 1833. Kurs czteroletni; szkólne 48 tal.; etat 5025 tal. 18 sgr. 9 fen.

Przełożony zakładu: Radau. Naucz. Fenslau. Naucz. pomoc. Bloss i Zabbe. Naucz. robót ręcznych panna Radau.

**2. Brunsberg.** Szkoła katol. głuchoniem. dla biskup. Warmińskiego założona r. 1840.

Dyrygent: Dyrektor semin. Dr. Arendt. Naucz. etat. Schonsee.

**3. Krolewiec.** Król. Zakład głuchoniem., externat.,

r. 1817 założony. Kurs sześcioletni; 3 klasy; co dwa lata przyjmują i wypuszczają uczniów. Etat. 3105 tal.

Przełożony: Zimmermann. Naucz. Peters, Muller i 1 nauczycielka.

**4. Malbork.** Zakład prowincyjonalny głuchoniem. dla Prus zachodnich, założony 1 kwietnia 1833, Kurs 4—5 letni; miejsc funduszowych 84. Ucznie funduszowi umieszczeni u rzemieślników i płaci się za nich 30 tal. za stół. Szkólne 48 tal.; etat 6600 tal.

Przełożony: Dr. Haase. Naucz. etat. Stockmann, Miehlke, Oltersdorf i Spohn. Nauczycielka robót ręcznych panna Kummer.

## III. Szląsk.

**1. Wrocław.** Zakład głuchoniem. prywatny. Założony r. 1821. Kurs 4—7letni. Etat 15,000 tal.

Dyrektoryjum: Dyrektor gimn. prof. Dr. Fickert, subsenior Weingartner (zastępca dyrektora) i kupiec Moritz Schreiber (kasyjer). Naucz. wyż. Scholz; naucz. etat. Klose, Leist, Arlt, Henschel i Bergmann. Naucz. pomoc. Hartelt i Seydel. Nauczycielka etat. panna Regent; naucz. pomoc. panna Kaul. Doktor: Dr. G. Joseph; rachmistrz Hoffmann; 4 mistrzów rzemieślników.

**2. Lignica.** Zakład głuchoniem. prywatny, założony 1 lipca 1831 przez dyrektora Schröter; 4 klasy; etat 3800 talarów.

Dyrektor: Kratz. Naucz. Hartel i Bnrndt. Nauczycielka pani Hartel.

**3. Racibórz.** Zakład głuchoniom. prywatny, założony w maju roku 1830. 3 klasy; kurs 6 letni. Dochód zakładu 8811 tal. 18 sgr. 2 fen.; Wychód 8471 tal 11 sgr. 4 fen.

Inspektor i główny naucz. Schwarz. Naucz. Roth, Kretschmer, Hahn. Nauczycielka panna Hoffmann. Kasyjer rendant Hornung; gospodyni domu wdowa Heisig; naucz. rękodzieł Kaluza.

---

## Zakład dla ociemniałych.

**1. Wolsztyn.** Prowincyjonalny zakład ociemn., założ. 6 lipca 1853 r. Biblioteka 180 tom.: 1 klasa; etat 2115 tal.

Dyrygent: inspektor i naucz. Kienel. Naucz. rel. ew. Berger; naucz. industr. Rudolph.

**2. Królewiec.** Prowincyjonalny zakład ociemniałych, 7 paźdz. 1847 otworzony. 1 klasa; etat 5000 tal.

Inspektor i naucz. Born. Naucz. muzyki Wurst; koszykarz Weiss; powroźnik Schlup. Nauczycielka robót ręcznych pani Schilfert.

**3. Wrocław.** Szląski zakład ociemn., założ. 11 listop. 1818 przez towarzystwo prywatne, pod którego zarządem dotąd stoi.

Dyrektor: dyrektor gimn., prof Dr. Schoenborn. Przełożony: radzca sądu miejskiego Schwürz i kupiec J. J. Müller. Naucz. wyż. Seltmann. Inspektor: rendant Hoffmann. Naucz. etat. Klose i Bürke. Naucz. pomoc. Paul; naucz. gry na arfie Marx; powroźnik Breitbach; koszykarz Hammacher. Nauczycielki ręcznych robót panna Priedemann i p. Fechor.

## Wyższe szkoły żeńskie.

### I. Wielkie Księstwo Poznańskie.

#### A. Obwód rejencyjny Poznański.

**1. Poznań.** Szkoła Ludwiki, symult., założona 1830 roku. 7 klas; szkólne 13, 21, 25 tal.; etat 7000 tal.

Dyrektor: Dr. Barth. Naucz. etat. rektor Hensel, rekt. Vanselow, Schonke, Wolinski i Krumbhorn. Naucz. rel. kat. regens Bilewicz. Naucz. jęz. Favre; naucz. śpiew. Flux. Nauczycielki: pani Otto, panna Jonscher, Krupska i Kutzner. Naucz. ręczn. robót pani rekt. Krupska i panna Sommerfeld.

**2. Poznań.** Wyższa szkoła żeńska, prywatna p. Poplińskiej. Wzięła początek swój z pensyjonatu panien założonego r. 1814 przez panią Teklę Hervigową. Roku 1848 zakład ten zamieniony został na szkołę, której kierunek naukowy objął profesor Jan Motty. Po śmierci pani Hervigowej r. 1855 objęła zarząd i opiekę nad zakładem pani profesorowa z Hervigów Poplińska, wdowa po prof. w Lesznie Janie Poplińskim, a po śmierci profes. Jana Mottego nadana temuż 9 lutego 1856 koncesyja rządowa, udzieloną została 21 stycznia 1857 synowi jego profesorowi Dr. Marcelemu Mottemu, który dotychczas ma dozór nad biegiem nauk w tej szkole i odpowiedzialnym jest za nią w obec rządu. Klas jest cztery. Do czwartej klasy przyjmują się dziewczęta, umiejące już czytać i pisać po polsku i po niemiecku, i mające już pierwsze początki języka francuskiego.

Nauczyciele i nauczycielki: Ks. peniten. J. Pędziński, prof. Dr. M. Motty, nauczyciel przy szkole realnej, Dr. Wituski, naucz wyż. przy gimn. Maryi Magdal. Dr. Brejsig,

naucz. wyż. przy szkole real. Studniarski, naucz. przy szkole real. Sosnowski, naucz. jęz. polsk., Dr. Rzepecki, naucz. przy szkole realnej, Dr. Jakowicki, naucz. przy gimn. Mar. Magd. Łukowski, naucz. przy gimn. Mar. Magd. Kasiński, naucz norm. przy sem. naucz. Starck, naucz ;przy szkole miejsk. Nauczycielki panna Magd. Gex. panna Radońska, panna Krupska, panna Teresa Gex, panna Pawłowicz.

**3. Poznań.** Wyższa szkoła żeńska prywat. pani Estkowskiej, założ. 1 paźdz. 1860. 5 klas. Liczba naucz. udzielających lekcyje wynosi ośm, nauczycielek pięć. Szkoła liczy obecnie uczennic 100.

**4. Poznań.** Wyższy zakład żeński Sercanek, wziął początek w r. 1857. Pensyjonat liczy 60 panien. Język wykładowy polski. Uczą prócz tego niemieckiego, francuzkiego, jako obowiązkowych przedmiotów; język włoski i angielski pozostawiony ad libitum w godzinach nadzwyczajnych. Kapelanem i nauczycielem rel. ks. Koźmian. Obok pensyjonatu istnieje szkoła bezpłatna dla ubogich dziewcząt.

**5. Poznań.** Wyższy zakład żeński i pensyjonat Urszulanek założony 2 lipca 1857. Pensyjonarek 100, externów z miasta na naukę przychodzących 100, w szkole dla ubogich 200, razem 400. Język wykładowy polski; uczą języków polskiego, niemieckiego, francuskiego i angielskiego. W selekcie kształcą się uczennice na guwernantki. Kapelanem i nauczycielem rel. jest ks. Wojczyński.

**6. Wschowa.** Wyższa szkoła panieńska prywat. ew., koncesyjonowana 11 stycznia 1858. 3 klasy; szkolne 8. 12, 18 tal. Przełożona panna Matylda Classen.

**7. Krotoszyn.** Wyższa szkoła panien miejska, symult., założona 3 paźdz 1836, zreorganizowana 1865 r. 4 klasy; szkólne 16 do 18 tal,

Rektor: Naucz. wyż. Belcke; naucz. etat. Hirte i Heinze; nauczycielka etat. Dürbandt; naucz. rel. kat. kapelan Sprenger. naucz. polsk. Łuczkowski. Naucz. robót ręcz. p. Hildt.

**8. Leszno.** Wyższa szkoła panien prywatna, koncesyjonowana 5 kwiet. 1824. 4 klasy; szkólne 16 tal.

Przełożona panna Killer. Do pomocy p. Fleischer.

**9. Skwierzyna.** Wyższa szkoła panien ew. i żydów., 14 maja 1861 otworzona. 1 klasa: 18 tal. szkólu. Przełożony ks. Philipp.

## B. Obwód rejencyjny Bydgoski.

**1. Bydgoszcz.** Wyższa szkoła panien miejska, symult., założona na św. Michał 1824 r., zreorganizowana na Wielka-

noc 1863 r. Bibliot. 1700 dzieł; 8 klas i selekta, w której nauczycielki i gowernantki sposobią; szkólne 12 do 20 tal. od miejscowych, 16 do 24 tal. od zamiejscowych.

Rektor: R. Fischer. Naucz. wyż. Dr. Becker i Henkel. Naucz. etat. Zumpe, Klass i Scheithauer. Nauczycielki etat. panna Keber, Rösener i Fechner. Naucz. pomoc. Kallina: naucz. śpiew. Grahn; naucz. rys. Wolff. Naucz. selekty: naucz. wyż. Dr. Weigand, Becker i Kallina; nauczycielka: panna Beuclair.

**2. Bydgoszcz.** Średnia szkoła panien, symult., na Wielkanoc r. 1863 otworzona. 5 klas; szkólne od miejc. 6 do 8 tal., od zamiejsc. 8 do 12 tal.

Rektor: R. Fischer. Naucz. etat. Kallina, Columbus, Krienke i Müller. Nauczycielki: panna Sadowska i Huch.

**3. Wieleń.** Wyższa szkoła panien i pensyjonat. 4 klasy; 5 naucz. i 2 nauczycielki. Zakład ten przysposabia panienki na przyszłe nauczycielki i guwernantki tak zarazem, iż chłopcom niezbędną w niższych klasach gimnazyalnych łacinę udzielać są zdolne. Dyrygent; Dr. Menzel.

**4. Gniezno.** Wyższa szkoła panien ewang. prywatna, koncesyjowana 28 maja 1864. 3 klasy; szkólne 18, 24, 30 tal.

Przełożona: Pani rektorowa Emil. Pankow. Naucz.: naucz. gimn. Dr. Teichmüller, Dr. Müller i rekt. Pankow. Naucz. rel. ewang. rekt. i kaznodz. Fliess; naucz. rel. żyd. rabin Dr. Zuckermandel; naucz. śpiewu: kantor Kopitsch. Nauczycielki: panny Besch i L. Pankow.

**5. Gniezno.** Wyższa szkoła panien prywatna katolic., założ. 1 maja 1857. 3 klasy; szkólne 12, 18, 24 tal. 7 naucz. i 3 nauczycielki. Przełożona: panna Wahle.

**6 Nakło.** Wyższa szkoła panien miejska, symult. 3 klasy. 12 do 20 tal. szkólne.

Rektor: Dr. C. W. Wolff. Nauczycielka panna Denneke. Naucz. etat. Kratz; naucz. pomoc. kaznodz. Serno; naucz. ręcznych robót: pani rektorowa Richter.

**7. Piła.** Wyższa szkoła panien miejska, założona 18 październ. 1858 r. 2 klasy: szkólne 12 do 16 tal. i 10 sgr. za używanie książek z biblit. zakładu.

Dyrygent: Siegesmund. Naucz. etat. Werner. Nauczyc. ręcznych robót pani Wilss. Naucz. rel. kat. wik. Eichstaedt; naucz. rel. żyd. rabin Braun.

**8. Trzemeszno.** Wyższa szkoła panien i pensyjonat otworzona 5 październ. 1865. Dyrygent: Hempel.

## II. Prusy.

### A. Obwód rejencyjny Królewiecki.

**1. Królewiec.** Wyższa szkoła panien, miejska, założona 22 listop. 1816. 5 klas i 1 klasa przygotow. szkolne 25 tal., etat 3700 tal.

Dyrektor: Dr. Sauter. Naucz. etat. Elditt, prof. Dr. Herbst, Eichler i Witt. Naucz. rys. malarz i akademik Nisius. Nauczycielki pomoc. panna Calame; naucz. ręcznych robót: panna M. Hilbert, Barnik, Jul. Hilbert, Towiańska i Schielin.

**2. Królewiec.** Wyższa szkoła panien prywatna i pensyjonat; od 1 paźdz. 1860 szkoła Nebelunga zwana. 7 klas i selekta; szkolne 12 do 36 tal.; pensyjonarki płacą 250 tal. rocznie.

Przełożona: Panna C. Nebelung. Specyjalny nadzorca i naucz.: prowinc. radzca szkolny Dr. Schrader. Nauczyciele: naucz. wyż. Dr. Bernhard, Dr. Grosse, Dr. Hoffman, Dr. Krosta, naucz. wyż. Ungewitter, pleban Troje, dyakon Lackner, Richter, Stobbe, Bodszun, Witt i Behrendt. Nauczycielki: panna Nebelung, Berta i Anna Erdmann, v. Hasenkamp i Christiani.

**3. Królewiec.** Wyższa szkoła panien prywatna panny Blechschmidt. 5 klas.

**4. Królewiec.** Wyższa szkoła panien francuzka prywatna. 4 klasy. Przełożony: Roquette, kaznodzieja francusko-reform. gminy.

**5. Królewiec.** Wyższa szkoła panien prywatna, panien Fanny i Lina Schweitzer. 6 klas; 9 nauczycieli i 8 nauczycielek.

**6. Kłajpeda.** Wyższa szkoła panien, miejska, z którą połączony zakład dla nauczycielek; 1836 r. założona. 6 klas; szkolne 18, 24 tal; etat 3250 tal.

Dyrektor: Dr. Heinrici. Naucz. etat. Willms, Langhans i Schiemann. Nauczycielki etat. panna Wutzdorf i Weinreich. Nauczycielki pomoc. panna Scharlota Franz i panna Ida Heinrici.

**7. Nidbork.** Wyższa szkoła panien miejska, ewang. 5 klas; rektor Kohrt.

**8. Wielawa.** Wyższa szkoła panien miejska, ewang.; założona 1 stycznia 1865. 3 klasy; szkolne 8, 12, 18 tal.. etat 1550 tal.

Rektor: Dabel. Naucz. etat. Scheffler. Nauczycielki etat. panna v. Bergen i Rückwardt.

## B. Obwód rejencyjny Gumbiński.

**1. Instruć.** Wyższa szkoła panien i zakład guwernantek. 6 klas; szkólne 8, 10, 12, 18 tal. 6 nauczycieli i 3 nauczycielki.

Dyrektor: Dr. Lentz. Naucz. etat. kandydat kaznodz. Strech, Müller i Supplie. Nauczycielki etat. panna Gatzke i Ottersdorff. Naucz. rob. ręczn. panna Walter; naucz. śpiewu Metz; naucz. rys. Kislatis.

**2. Tylża.** Wyższa szkoła panien, miejska, założona 1 października 1861 r. 6 klas i 1 klasa przygotow.; szkólne 12 do 24 tal.; etat 3962 tal.

Dyrektor: Adolf Witt. Naucz wyż. Fortsch. Naucz. etat. kandydat kaznodz. Nawitzky i Schulz. Nauczycielki panna Wilm. Pilgrim i Collin. Nauczyc. klasy przygotow. panna Mackelburg; naucz. rys. malarz Thiel; naucz. pomoc. kandydat Schischamowitz.

**3. Tylża.** Wyższa szkoła panien Breinig'a; 5 klas; 6 nauczycieli, 7 nauczycielek.

Przełożona: panna Em. Breining. Naucz. kaznodz. Behr; naucz. wyż. Pöhlmann, Meckbach, Dr. Ellinger, naucz. gimn. Mogh i rektor Gebauer. Nauczycielki: panna Schoen, Kaffcke, Kempfer, Merkelbach, Klein i v. Ellern.

## C. Obwód rejencyjny Kwidzyński.

**1. Grudziądz.** Wyższa szkoła panien, miejska, założ. 21 październ. 1844. 6 klas; szkólne 12, 14, 16, 18, 20 tal. Z zakładem tym połączona czteroklasowa szkoła żeńska średnia; etat pierwszej i drugiej 4380 tal.

Dyrektor: Borrmann. Naucz. etat. Rausch, Dr. Kreyenberg, Holder-Egger, Scharlok, Herrmann i Greger. Nauczycielki panna Matthies, Lorentz i Andres, Naucz. ręcz. robót panna Storch.

**2. Kwidzyna.** Wyższa i średnia szkoła panien, miejska, ewang. od r. 1857. 8 klas; szkólne 4, 5, 6, 12, 14, 16, 18 tal. 6 nauczycieli, 4 nauczycielki.

Dyrektor: Prof. Carl. Naucz. etat. Kunzmann, Kleiber, Herrmann i Simons. Nauczycielki panna Elditt i Seidel. Naucz. klasy przygotow. Droese. Nauczycielki ręcz. robót p. Heinrich i Wagner.

**3. Toruń.** Wyższa szkoła panien. miejska, założona 1 listop. 1820 r. 7 klas i selekta wyższej szkoły; szkólne 8, 10, 12, 14, 16, 18, do 24 tal.; 5 klas średniej szkoły; szkólne $2^1/_2$, $3^1/_2$, 4, $4^1/_2$ tal.; 3 klasy elementarne; szkólne 1 i 2 tal. Etat 6439 tal.; 15 naucz., 10 nauczycielek.

Dyrektor: Dr. A. Prowe. Naucz. wyż. Dr. M. Schulze. Naucz. etat. Krafft, Nadzielski, kantor Hass i Wunsch. Naucz. element. etat. Zittlau, Bannasch i Gramse. Nauczycielki etat. panna Fischer, Hamilton, v. Kulazynska, Muller, Siemssen, Brohm, Sudau, Berendt i Bayer. Naucz. rel. ew. pleban Gessel; naucz. rel. żyd. rabin Dr. Rahmer, Cohn i Stern; naucz. śpiew. Sammet; nauczycielka turn. panna Koch.

**4. Chełmno.** Wyższy zakład żeński pod zarządem Sióstr miłosierdzia. 4 klasy; 71 uczennic. Zakład żeński również pod zarządem tychże Sióstr; 5 klas; uczennic 310. Przełożona Balbina Hanke.

**5. Lubawa** (Löbau). Zakład żeński pod zarządem Sióstr miłosierdzia św. Wincentego; 4 klasy, 80 uczennic, pomiędzy temi 25 pensyjonarek. Przełożona Tekla Wężyk.

**6. Pelplin.** Zakład żeński i ochronka w domu św. Józefa; 60 uczennic. Przełożona Anna Turkowska.

## D. Obwód rejencyjny Gdański.

**1. Gdańsk.** Wyższa szkoła panien, miejska, na Wielkanoc r. 1817 założona. 7 klas; szkólne 12, 24, tal.; 6 nauczycieli i 6 nauczycielek.

Dyrektor: Dr. Grübnau. Naucz. wyż. Kaiser. Nauczycielki panna Wagner, L. Höpfner, Rhodin, W. Höpfner, Seyffert i Krüger. Naucz. element. Sommerfeldt; naucz. pomoc. kazn. Müller i Dr. Bail; naucz. rys. Troschel.

**2. Elbląg.** Wyższa szkoła panien, miejska, 22 paźdz. 1852 r. otworzona. 8 klas; szkólne 12, 18, 24 talarów; etat 5836⅔ tal.

Dyrektor: Dr. H. R. Schmidt. Naucz. wyż. Raths. Naucz. rel. superintendent Kruger. Nauczycielki panna van Benningen i Plaumann. Naucz. etat. Lingenberg, Doering, Boldt i Augustin. Naucz. robót ręcz. panna Elliger, pani Nuecklaus, panna Ruffmann i Brauser.

**3. Malbork.** Wyższa szkoła panien, miejska, ewang. 5 klas; szkólne 5, 6, 12, 16, 20 tal.; zamiejsc. płacą w V. i VI. rocznie 4 tal., w III. do I. 2 tal. więcej.

Dyrektor Dr. Tietz. Naucz. wyż. Rosenheyn. Naucz. etat. organista i kantor Grabowski i Floegel. Naucz. rys. Naudieth. Nauczycielka panna v. Massenbach. Naucz. robót ręcz p. Eckstein.

**4. Kościerzyna** (Berend.) Wyższy zakład żeński i pensyj. pod zarządem Sióstr miłosierdzia. 4 klasy i ochronka. Przełożona Aniela Meszyńska.

## III. Szląsk.

### A. Obwód rejencyjny Wrocławski.

1. **Wrocław**. Wyższa szkoła panien, miejską na ulicy zwanej Taschenstrasse; w roku 1767 jako szkoła żeńska u św. Maryji Magdaleny założona, roku 1850 zreorganizowana a 25 paźdz. 1863 do nowego budynku na Taschenstrasse przeniesiona. 9 klas; szkolne 24, do 30 tal.; etat 8550 tal. 13 naucz. i 10 nauczycielek.

Rektor: Dr. Ferd. Gleim. Nauczyciel. etat. Dr. Rumpelt, Dr. Schönermark, Friderich, Schubert I., Tillert i Schubert II. Naucz. rys. malarz Bayer. Nauczyciel religiji ewang. pastor Letzner; naucz. rel. kat. kuratus Schade; naucz. rel. żyd. prof. Dr. Levy; naucz. turn. Gillert. Nauczycielki etat. panna Zof. Gleim i Krause. Naucz. ręcz. robót panna Moritz I., Peuker, Moritz II., Hager, Baron i pani Gabel. Nauczycielka rys. pani sędzina Hammer.

2. **Wrocław**. Wyższa szkoła panien, miejska, na placu rycerskim, na św. Michał r. 1863 założona. 8 klas; szkolne 13 do 16 tal. Za zezwoleniem wyższej władzy utrzymuje rektor tego zakładu selektę, w której panienki do egzaminu nauczycielek i guwernantek przysposabia. Etat 8500 tal.

Rektor: Dr. Luchs. Naucz. etat. Dr. Weisser, Schlicht, Asser i Hanke. Naucz. rel. kat. kuratus Freundt; naucz. rel. ew. kaznodz. Lange; naucz. rel. żyd. Dr. Samuelsohn. Nauczycielka etat. panna Steiner. Naucz. śpiew. Schubert; naucz. pis. Penkert. Nauczycielki rob. ręcz. panna Neutzlich, pani Reymann, panna Primer, Zapner, Stenzel, Neumann, Priebsch i Dietrich. Naucz. turn. Henschel; nauczycielka turn. panna Lischke.

3. **Brzeg**. Wyższa szkoła dziewcząt, miejska, ewang. 2 klasy; szkolne 4 tal.

Rektor: Kurts. Naucz. etat. Loeber i Gürtler. Nauczycielki etat. panna Krummer i pani Lange.

4. **Brzeg**. Wyższa szkoła panien, prywatn., ewang., 13 sierpnia 1860 r. założona. 5 klas; szkolne 8 do 24 tal.; 9 nauczycieli i 4 nauczycielki.

Przełożona: pani E. Prüfch. ur. Klopsch.

5. **Freyburg**. Zakład naukowy dla dziewcząt, 31 października 1856 koncesyjonowany; 3 klasy; 12 do 24 talarów szkolnego; 7 nauczycieli i 2 nauczycielki.

Przełożona: panna Cecylia Subirge. Nauczycielka p. Stanke.

6. **Oleśnica**. Wyższa szkoła panien, prywatna, na św.

Michał 1853 otworzona. 4 klasy; szkólne 12, 18, 24, 36 tal. Przełożona: panna Emil. Spruth.

## B. Obwód rejencyjny Opolski.

**1. Lubczyce.** Wyższa szkoła panien, prywatna, w lipcu 1857 r. otworzona, a w grudniu 1861 koncesyjonowana. 3 klasy. Przełożona panna Heimann.

**2. Prądnik.** Wyższa szkoła panien, prywat. katol., pod przewodnictwem tak zwanych sióstr szkólnych, 1 paźdz. 1863 otworzona. 3 klasy; szkólne 12 tal.

**3. Prądnik.** Wyższa szkoła panien, symult.. r. 1856 założona. 3 klasy; szkólne 18, 24, 36 tal., 5 nauczycieli i 2 nauczycielki.

Przełożona: panna Berta Witte. Naucz. Dr. Exner, Oyen, kantor Paschke, Kober i Küntzel. Nauczycielki p. Knapp i Schirmer.

**4. Opole.** Wyższa sz ła panien i pensyjonat, prywat. 3 klasy; szkólne 24 tal., 1 ta . wstępnego i 1 tal. na drzewo. Pensyjonarki 120 tal., wyłącznie szkólnego; za pranie, lekcyje na fortepijanie i lekcyje w malarstwie płaci się odrębnie. Rewizor szkoły superintendent i pastor prim. Krieger. Przełożona panna Maryja Weiss.

**5. Racibórz.** Wyższa szkoła panien, prywat., ewang., założona 1827 r. 4 klasy i selekta; szkólne 18, 20, 24 tal.; 5 naucz. i 6 nauczycielek.

Przełożony: Henr. Rudolph. Naucz. pomoc. Thomas, Schaube, Becker i Fiegler. Nauczycielki etat. Marta Rudolph i panna Krügermann. Nauczycielki pomoc. panna König, Simon, Schöne i A. Klopsch.

**6. Racibórz.** Wyż. szkoła panien, prywat. katol. Urszulanek, koncesyjonowana 1830 r. 4 klasy; szkólne 10 do 20 tal. 2 naucz. i 5 nauczycielek.

**7. Tarnowiec.** Wyż. szk. panien, pryw. koncesyjonowana 15 kwietn. 1860 r. 3 klasy; szkólne 24 tal. 2 naucz. i 3 nauczycielki. Przełożona p. Mittelstadt.

## C. Obwód rejencyjny Lignicki.

**1. Bolesław.** Wyż. szkoła panien, miejs., na Wielkanoc 1858 założ. 5 klas; szkólne 8, 10, 14, 18 tal. 4 naucz. i 3 nauczycielki.

Rektor: Eckersberg. Naucz. etat. Menzel, Limpricht, i Breyer. Nauczycielki etat. panna Glogner i Mentz. Naucz. ręcz. robót p. Buchwald,

**2. Głogów.** Wyż. szk. panien sióstr miłosier. św. Ka-

róla Boromeusza. W sierpniu 1864 r. z 2 klasami otworz. 1 naucz. i 2 nauczycielki.

**3. Zgorzelice.** Wyż. szkoła panien, miejsk., z dwuklasowem sem. dla nauczycielek i guwernantek, 11 klas; szkólne 10 do 20 tal. Etat 8587 tal.

Rektor: Victer. Naucz. wyż. Tzschaschel i Thiemann. Naucz. etat. Kauffmann, Dr. Linn, Graf, Pinkwart i Nettermann. Naucz. etat. panna Hirche i Achterberg. Naucz. rel. superintendent. Bürger. Naucz. pomoc. Dr. Schmidt. Naucz. ręcz. robót. p. Brotze i Hertel. Naucz. turn. Werner.

**4. Zielonagóra.** Wyż. szk. panien, założ. 28 listop. 1853 r. 5 klas; szkólne 24 tal. 6 nauczycieli i 3 nauczycielki. Przełożona: panna S. Thomas.

**5. Zielonagóra.** Wyż. szk. panien, pryw., koncesyj. 21 czerw. 1855. 5 klas; szkólne 14, 20, 26, 30 tal. Rewizorem pleb. Gledisch, Przełoż. panna Lips.

**6. Hirschberg.** Wyż. szk. panien pryw., ew. 5 klas; szkólne 12 do 24 tal. Inspektor: dyrekt. gimn. prof. Dr. Dietrich, Przełożona panna P. v. Gayette.

**7. Lubań.** Wyż. szk. panien. miej.; otworz. 28 listop. 1864. 4 klasy; naucz. 4 i 2 nauczycielki.

Rektor: Hippauf. Naucz. etat. panna Tetz i Hunger. Naucz. pomoc. Seibt, Friederici i dyrekt. myzyki Böttger.

**8. Lignica.** Wyż. szk. panien miej., na św. Michał 1855 założ. 6 klas; szkólne 24 tal.; w klasach element. 12 tal. Z zakładem tym połączone seminaryjum nauczycielek i guwernantek (36 tal. szkólnego). Etat 3300 tal..

Rektor: Ragoczy. Prorekt. Becker. Naucz. etat. Dr. Muller, Greiner, Gärtner i Tzschaschel. Naucz. etat. pani Ullrich i Muller,

**9. Bukowa** (Lüben). Wyż. szk. panien, miej., ew.. otworz. 2 maja 1859. 2 klasy; szkólne 6 tal.

Rektor: Dansel. Naucz. etat. Koschel.

**10. Żegan.** Wyż. szk. panien, pryw., ew., w stycz. 1840 założ. przez księży ewang. 3 klasy; szkólne 18, 24, 30 tal. 5 naucz. i 5 nauczycielek.

Przełożona: panna Helena From. Naucz.: naucz. sem. Korb, adjunkt Schulze, Schneider, Hirschberg i malarz Zimmermann. Naucz. panna Francke, Maryja From, Reymann i Schöncheidt.

**11. Warmbrunn.** Wyższa szk. żeń. pryw. Przełożona panna A. v. Rahmel.

# OBRAZ
## katolickich szkół elementarnych.

## I. Archidyjecezyja Gnieźnieńska i Poznańska.

| Dekanaty. | Liczy szkół, | Nauczyciele. | Dzieci uczęsz. | Język ojczysty dzieci. |
|---|---|---|---|---|
| 1. Borek | 18 | 21 | 2068 | polski |
| 2. Buk | 40 | 44 | 4344 | |
| 3. Bydgoszcz | 43 | 55 | ok. 3300 | przew. pol. |
| 4. Czarnków | 46 | 56 | 3454 | przew. pol. |
| 5. Gniewkowo | 17 | 18 | 1427 | polski. |
| 6. Gniezno (Września) | 28 | 47 | 3904 | polski. |
| 7. Gniezno (Kłekco) | 28 | 29 | 2245 | polski. |
| 8. Gniezno (Trzemeszno) | 18 | 21 | 2245 | polski. |
| 9. Grodzisk | 59 | 71 | 6760 | polski. |
| 10. Inowrocław | 18 | 22 | ok. 1700 | polski. |
| 11. Kcynia | 24 | 27 | ok. 2200 | polski. |
| 12. Kempno | 33 | 38 | 3627 | polski. |
| 13. Kościan | 34 | 40 | 3778 | polski. |
| 14. Kostrzyn | 21 | 24 | 1523 | polski. |
| 15. Koźmin | 67 | 77 | 6955 | polski. |
| 16. Krobia | 49 | 63 | 6242 | przew. pol. |
| 17. Krotoszyn | 17 | 25 | 2191 | pol. i niem. |
| 18. Kruświca | 23 | 25 | 1837 | polski. |
| 19. Lwówek | 65 | 73 | 6953 | pol. i niem. |
| 20. Łekno | 25 | 22 | 2325 | pol. i niem. |
| 21. Miłosław | 19 | 28 | 1088 | polski. |
| 22. Nakło | 23 | 25 | 2495 | pol. i niem. |
| 23. Nowemiasto | 34 | 40 | 3702 | polski. |
| 24. Oborniki | 44 | 50 | 4639 | przew. pol. |
| 25. Ołobok | 25 | 27 | 2327 | polski. |
| 26. Ostrzeszów | 33 | 41 | 3278 | polski. |
| 27. Pleszew | 31 | 36 | 3300 | polski. |
| 28. Powidz | 12 | 13 | 1180 | polski |
| 29. Poznań | 19 | 31 | 2732 | polski. |
| 30. Rogowo | 14 | 14 | 1093 | polski. |
| 31. Rogoźno | 23 | 25 | 2459 | przew. pol. |
| 32. Śmigiel | 23 | 26 | 2580 | pol. i niem. |
| 33. Śrem | 62 | 70 | ok. 5200 | polski. |
| 34. Środa | 41 | 48 | 3900 | polski. |
| 35. Wałcz | 40 | 48 | 3080 | niemiecki. |
| 36. Wschowa | 37 | 49 | 4368 | prz. niem. |
| 37. Zbąszyń | 54 | 62 | 5940 | niem. i pol. |
| 38. Żnin | 32 | 35 | 2636 | polski. |
| Ogółem | 1239 | 1446 | 125,975 | |

## II. Dyjecezyja Chełmińska.

| Dekanaty. | Szkoły. | Nauczyciele. | Dzieci katolic. | Dzieci ewang. | Język ojczysty dzieci. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. Brodnica . | 14 | 17 | 1500 | 324 | pols. i niem. |
| 2. Człuchów . | 45 | 45 | 4032 | 534 | pols. i niem. |
| 3. Fordon . . | 18 | 21 | 1556 | 109 | polski. |
| 4. Gdańsk . . | 45 | 60 | 6038 | 883 | przew. niem. |
| 5. Gniew . . | 34 | 41 | 3104 | 246 | polski. |
| 6. Golub . . | 12 | 16 | 1207 | 362 | polski. |
| 7. Górzno . . | 12 | 13 | 906 | 88 | polski. |
| 8. Chełmno . | 17 | 20 | 1394 | 532 | polski. |
| 9. Chełmża . | 20 | 24 | 2072 | 251 | polski. |
| 10. Kamień . . | 31 | 32 | 2973 | 603 | pols. i niem. |
| 11. Łasin . . | 14 | 18 | 1319 | 287 | polski. |
| 12. Lawenburg | 10 | 10 | 487 | 250 | niem. i pols. |
| 13. Lidzbark . | 14 | 16 | 1382 | 30 | polski. |
| 14. Lubawa . . | 25 | 29 | 2410 | 150 | polski. |
| 15. Mirachowo . | 54 | 76 | 5400 | 498 | polski. |
| 16. Nowe . . | 26 | 30 | 2735 | 326 | polski. |
| 17. Nowemiasto | 27 | 28 | 2754 | 85 | polski. |
| 18. Pomezański | 9 | 9 | 515 | 223 | pols. i niem. |
| 19. Puck . . . | 46 | 54 | 2072 | 177 | polski. |
| 20. Radzyn . . | 8 | 11 | 972 | 314 | polski. |
| 21. Starogard . | 29 | 32 | 5507 | 414 | polski. |
| 22. Świecie . . | 39 | 39 | 3538 | 1900 | polski. |
| 23. Tczew . . | 33 | 43 | 3122 | 430 | przew. polsk. |
| 24. Toruń . . | 14 | 14 | 1227 | 602 | przew. polsk. |
| 25. Tuchola . . | 58 | 64 | 6683 | 344 | polski. |
| 26. Wąbrzeźno | 10 | 12 | 908 | 287 | polski. |
| Ogółem | 664 | 775 | 65,813 | 10,251 | |

## III. Dyjecezyja Warmińska.

| Dekanaty. | Liczba szkół. | Liczba nauczyc | Dzieci uczęsz. | Język ojczysty dzieci. |
|---|---|---|---|---|
| 1. Brunsberg . . | 27 | 43 | 2822 | niemiecki. |
| 2. Elbląg . . . | 8 | 17 | 1795 | niemiecki. |
| 3. Gusztad . . . | 41 | 57 | 4340 | niemiecki. |
| 4. Lidzbark . . | 45 | 56 | 3883 | niemiecki. |
| 5. Malbork . . . | 15 | 19 | 1347 | przeważnie niem. |
| 6. Melzak . . . | 38 | 53 | 3921 | niemiecki. |
| 7. Nytych . . . | 13 | 15 | 1040 | niemiecki. |
| 8. Olsztyn . . . | 39 | 51 | 4271 | polski. |
| 9. Resiel . . | 28 | 34 | 2022 | niemiecki. |
| 10. Sambijski (Królewiec) . . | 8 | 10 | 507 | niem. lit. i pol. |
| 11. Sztum . . . | 46 | 49 | 4107 | przeważn. polski. |
| 12. Wartenburk . | 39 | 46 | 4003 | polski. |
| 13. Zybork . . . | 34 | 46 | 4158 | $^2/_3$ niem. $^1/_3$ polsk. |
| Ogółem | 381 | 495 | 38,215 | |

## IV. Dyjecezyja Wrocławska.

| Dekanaty. | Liczba parafian Polak. | Liczba księży | | Kościoł par. filij. i kaplic. | Liczb. szkół | Liczba nauczycieli. | Liczb. uczni uczęszczających. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | w ogóle. | po pols. mówiąc. | | | | |
| 1. Bytom . . | 76159 | 29 | 28 | 21 | 37 | 93 | 16484 |
| 2. Bodland . | 15347 | 11 | 11 | 12 | 16 | 23 | 2063 |
| 3. Brzeg . . | 9957 | 12 | 2 | 12 | 10 | 15 | 1024 |
| 4. Falkenberg . | 23748 | 13 | 8 | 21 | 31 | 44 | 4485 |
| 5. Gliwice . . | 44015 | 25 | 23 | 24 | 30 | 64 | 6922 |
| 6. W. Dubieńsk | 16804 | 9 | 9 | 12 | 16 | 25 | 3110 |
| 7. W. Strzelce | 34590 | 16 | 16 | 14 | 29 | 42 | 5121 |
| 8. M. Strzelce | 17251 | 11 | 11 | 12 | 14 | 26 | 2600 |
| 9. Kostental . | 21557 | 13 | 12 | 17 | 25 | 34 | 3587 |
| 10. Lohnau . . | 34625 | 17 | 17 | 14 | 25 | 40 | 4772 |
| 11. Wodzisław | 23541 | 13 | 13 | 19 | 19 | 30 | 4065 |
| 12. Lubliniec . | 37249 | 13 | 13 | 20 | 39 | 49 | 6534 |

| Dekanaty. | Liczba katolik Polak. | Liczba księży | | Kościoł. par., fil. i kaplic. | Licz. szkół | Liczba nauczycieli. | Liczb. uczni uczęszczających. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | w ogóle | po pols. mówiąc | | | | |
| 13. Milicz . . | 10122 | 7 | 4 | 16 | 16 | 20 | 1408 |
| 14. Namysłów . | 11057 | 8 | 6 | 20 | 11 | 16 | 1390 |
| 15. Mikołów . | 37939 | 14 | 14 | 14 | 29 | 51 | 6549 |
| 16. Głogówek . | 19576 | 17 | 10 | 17 | 20 | 28 | 2869 |
| 17. Opole . . | 37926 | 17 | 16 | 20 | 39 | 60 | 5946 |
| 18. Pyszczynek | 19844 | 11 | 11 | 19 | 17 | 27 | 3394 |
| 19. Pszczyna . | 19170 | 9 | 9 | 12 | 16 | 25 | 3121 |
| 20. Pogrzebin . | 19880 | 8 | 8 | 12 | 20 | 27 | 3467 |
| 21. Syców . . | 12964 | 11 | 11 | 25 | 24 | 30 | 2267 |
| 22. Prosków . | 15079 | 7 | 7 | 11 | 11 | 21 | 2463 |
| 23. Raciborz . | 33476 | 23 | 22 | 20 | 23 | 48 | 5109 |
| 24. Rychtal . . | 6869 | 7 | 7 | 8 | 14 | 17 | 1085 |
| 25. Oleszno . . | 31380 | 15 | 15 | 26 | 47 | 52 | 5663 |
| 26. Szałkowice | 28259 | 13 | 13 | 12 | 22 | 38 | 4995 |
| 27. Żory . . . | 26742 | 14 | 14 | 13 | 20 | 34 | 4060 |
| 28. Tarnowice | 33610 | 16 | 16 | 14 | 18 | 40 | 5196 |
| 29. Toszek . . | 18484 | 9 | 9 | 14 | 14 | 26 | 3020 |
| 30. Ujazd . . | 34947 | 23 | 20 | 56 | 24 | 45 | 5764 |
| 31. Zyle . . . | 24764 | 15 | 13 | 14 | 23 | 35 | 4781 |
| Ogółem | 796931 | 426 | 388 | 541 | 699 | 1125 | 132714 |

## Historyja szkół w Polsce.

Kiedy pierwszy raz zaprowadzono szkoły w krajach polskich, to trudno wykryć, ale zapewne bardzo dawno, a przynajmniej nie później, jak za Mieczysława I. Przed zaprowadzeniem chrześciaństwa do Polski, nie było u nas szkół; nie mogło też być w kraju naszym wyraźnej oświaty. Przodkowie nasi w czasach przedchrześciańskich posiadali tyle tylko oświaty, ile jej zaczerpnęli przez ścieranie się z oświeconemi już narodami. Chrześcijaństwo na zachodzie rzuciło już pierwsze ziarna ewangieliji pomiędzy narody, a fundament jego już się ustalił. Na ziemię słowiańską, a więc i do Polski, przyszło chrześciaństwo w 10 wieku z zachodu. Jakiem tu było, takiem wstąpiło też do nas. Na zachodzie założyło już wtenczas chrześcijaństwo szkoły zakonu benedyktynów, katedralne i parafialne. Takie też szkoły razem z chrześcijaństwem weszły do nas. Zakładane biskupstwa, opactwa i klasztory były ogniskiem nowej religiji, nowego oświecenia, nowych wyobrażeń, które szczepione były na gruzach dawnej słowiańskiej religiji, słowiańskiego duchowego życia.

Wszelkie światło i nauki księża posiadali. Oni wyłącznie prawie znali sztukę pisania i czytania; oni zakładali i utrzymywali szkoły i młodzież w nich uczyli. — Pierwszy zakon, który za Mieczysława I. do Polski się wprowadził, był zakon benedykty-

nów. Benedyktyni też pierwsze u nas szkoły założyli. Prócz Benedyktynów utrzymywali szkoły Kameduli, kanonicy regularni (szkoła w Trzemesznie sięga czasów Mieczysława I.) i sprowadzeni w 12 i 13 wieku licznie z Niemiec, mianowicie do Wielkopolski, Cystersi. Wspomnione zakony uczyły młodzież przedewszystkiem czytać i pisać po łacinie.

Prócz zakonnych były szkoły katedralne i kilka lub kilkanaście szkół parochialnych. Pierwsze tworzyły się pod wpływem biskupów. Zdaje się, że przy wszystkich ówczesnych katedrach, urządzone były szkoły katedralne. W najdawniejszych kronikach i dokumentach są wzmianki o nauczycielach katedralnych, zwanych scholastici i magistri. O szkole z owego lub mało późniejszego czasu, znajdujemy wzmiankę w pisarzu bezimiennym życia biskupów wrocławskich, który powiada, że biskup Urban II. „przyszedłszy do Polski, aby z polskiego narodu, dzieci i młodzieńce nabierali znajomości nauk łacińskich; w tym celu szkołę w Smogrowie (Smogorzewie) ustanowił, i doktora szkół, jak uczniów samych, ze stołu swego zaopatrywał.“ Kadłubek za Mieczysława starego o żakach bijących żydów wspomina. W Gnieźnie była szkoła około roku 1218, bo w przywileju Przemysława, księcia wielkopolskiego, wzmianka jest o młodzieży szkólnej. — W wieku XIII. Baszko nadmienia o szkole przy katedrze poznańskiej. — W Wrocławiu przy kościele ś. Magdaleny założył szkołę r. 1270. kardynał Guido legat papiezki. Przy katedralnej szkole scholasticum miał wikaryusza, który się rektorem nazywał. Uczono tam gramatyki łacińskiej, loiki, fizyki i filozofiji. Przy innych kościołach były szkoły trywialne mieszczan, a w nich dzieci uczyły się abecadła, Ojcze nasz, Zdrowaś i Wierzę, potem siedm psalmów pokutnych i śpiewu

kościelnego, a nakoniec Donata, Katona i Theodata. Szkoła przy kościele ś. Eżbiety założona była r. 1293. Uczono w niej podobnie i były obie przygotowawczemi dla szkoły katedralnej u świętego Krzyża, założonej r. 1298.

W Krakowie przed założeniem akademiji była szkoła przy kościele P. Maryji. Każdy chłopiec uczący się czytać i początków gramatyki, mistrzowi i jego zastępcy co kwartał płacił po groszu. Chłopcy więksi i wyższych rzeczy się uczący, płacili jednemu i drugiemu po dwa grosze. Chłopcy poczynający śpiewanie, kantorowi po półgrosza, a chłopcy z drugiego śpiewu po groszu. Chłopiec, który nie przyniesie w zimie codziennie drewna, obowiązany jest kupić dobry ucz drzewa, albo dać dwa grosze na drzewo. Na zakupienie pergaminu, chłopiec zastępcy mistrza da cztery pieniążki. Na dzień ś. Galla da mistrzowi koguta albo pół grosza. Każdy na Boże narodzenie za palenie da cztery pieniążki (poroszki). Mieszczanie obierali, ustanawiali mistrza, mistrz zastępców (locatos). Kantora obierali mieszczanie a zatwierdzał mistrz. Magister i kantor obierali signatora i subsignatora.

Synod z r. 1285 pod Jakobem Świnką, arcybiskupem gnieźnieńskim odprawiony, uchwalił, aby cudzoziemców do beneficiów nie przypuszczać i aby nie brano nauczycieli szkólnych, tylko dobrze język polski umiejących. W r. 1303 Andrzej, biskup poznański, pozwolił mieszczanom poznańskim założyć szkołę przy kościele farnym Maryji Magdaleny. „Wolno im, mówi biskup w pozwoleniu, mieć szkołę i rektora szkoły, którego biskup i kapituła mianować powinna; ten uczyć ma dzieci na Donacie i Katonie. Przeczytawszy tych, wolno będzie chłopcom, którzy zechcą, do szkoły wyższej katedralnej albo gdzieindziej, uczęszczać.

Były więc szkoły pod bokiem biskupów, a prowadzili je scholastycy katedralni. Do środka XIV wieku scholastycy katedralni przeszli powoli już do innych obowiązków, a nad szkołami katedralnemi substytuowali sobie magistrów scholae i kantorów. Byli to pospolicie księża niższej godności.

Pomimo, że po szkołach łaciny uczono, każda prawie nauka w polskim języku wykładaną była. Uchwały synodalne 1285, 1315, 1357, wymagały, aby nauczyciele szkół byli Polacy, a przynajmniej dobrze język polski znający. Nareszcie poczęto na piśmie różne dzieła na polski język przekładać i więcej po polsku pisać. — Ale zawsze dla ćwiczenia się w wyższych naukach trzeba było jeździć do włoskich uniwersytetów i tam stopni akademickich szukać. Załatwiając te trudności Kazimierz Wielki postanowił założyć akademiją w Krakowie. Akademia krakowska otworzoną została r. 1347 we wsi Bawole, czyli późniejszym Kazimierzu. Wyrobił król jej zatwierdzenie u papieża Urbana V., który jednak teologiji nauczać nie pozwolił. Za Ludwika, wielki ten zakład naukowy miał pójść w zaniedbanie; zajęła się jego wznowieniem Jadwiga, i ztądto powstanie akademiji krakowskiej niektórzy dopiero na rok 1397 kładą; nauki zaś rozpoczęto dopiero roku 1400 w miesiącu lipcu, wtedy już teologija nietylko została przez Rzym dozwoloną, ale zaczęła być głównym przedmiotem wykładu. Z akademiji krakowskiej przez cały wiek XV i XVI zakładano naukowe kolonije i rozmaite szkoły w Małopolsce pod Lwów, Krzemieniec i Białą na Podlasiu, a w Wielkopolsce aż pod Chełmno w Prusiech.

Jednym z głównych kolonijalnych instytutów akademiji krakowskiej było Collegium Lubran-

scianum, czyli akademija w Poznaniu. Założyciel Jan Lubrański biskup, zaopatrzył tę szkołę przez donacyą dóbr Stawiszyńskich w Kaliskiem. Zygmunt stary r. 1520, przy zatwierdzeniu fundacyi Lubrańskiego, włożył obowiązek na akademią krakowską, aby Collegium Lubranscianum zaopatrywała w nauczycieli. — Dla Gdańska i Torunia były pozwolone osobne lycea, a dla Prus książęcych, na przełożenie książęcia Albrechta, Zygmunt August ustanowił akademiją w Królewcu.

Szesnasty wiek jak był świetny dla literatury polskiej, tak słynął wychowaniem młodzieży; nietylko w Krakowie, ale nawet i w Poznaniu pełno było uczniów z zagranicy, jak Szlązaków, Morawców, Czechów a nawet Niemców. Z napływem cudzoziemców wciskały się do Polski różne nauki nowe i herezyje. Gorliwość naukami wieku napojonych tworzyła liczne szkoły różnowierców, które wielką usilnością uczonych zakwitły. — Ta reformacyja religijna wskazała potrzebę dwojakiego wychowania. Koncylium trydenckie, dla utrzymania przewagi Rzymu nad herezyją, musiało dążyć całemi siłami do rozprzestrzenienia i podniesienia oświaty pomiędzy duchownymi katolickimi. Szkoły katedralne nie odpowiadały już celowi, i ztąd przy wszystkich katedrach otworzono seminaryja duchowne.

Znamienitsze różnowierców szkoły były: Poznań, Ostroróg, Leszno, Szamotuły, Grodzisk, Gdańsk, Chełmno, Toruń, Kraków, Dubieńsk, Pinczów, Raków, Brześć, Wilno.

Zagrożony upadkiem kościół katolicki, wywołał na świat zakon Jezuitów. Zakonnicy ci, wziąwszy za cel utrzymanie jedności kościoła, wyrzekli się względów narodowych. Z początku działali wymową, ale później postrzegli, że chcąc zostać pedagogami rozkazującymi całemu światu, najlepiej

będzie wziąść w swe ręce wychowanie młodzieży. Jezuici sprowadzeni do Warmiji r. 1565, wkrótce rozmnożyli się po całej Polsce, a pierwszą swoję szkołę założyli w Poznaniu r. 1573. Na to miejsce zaczęła upadać akademija czyli Collegium Lubranscianum. Z boleścią patrzał rektor magister Szymon ze Lwowa, jak w ciągu r. 1571 większa część uczniów jego przeszła do szkół jezuickich. W pięć lat później wyjednali sobie Jezuici u Stefana Batorego utworzenie akademiji w Wilnie. Tymczasem w Krakowie zaczęli się tylko pokazywać. Otworzyli swój zakon przy kościele św. Szczepana i werbowali młodzież, a potem i profesorów akademiji. Mieli od papieża bullę gotową do założenia szkół i w Krakowie, ale im przywileje akademiji stały na przeszkodzie. Udawano się aż do Rzymu z protestacyjami, a papieże utrzymywali Jezuitów. W r. 1624 bez względu na zakaz rzymski i na przywileje akademiji, otworzone zostały szkoły jezuickie w Krakowie. Odciągano bardziej jeszcze uczniów od akademiji, która i znacznie słabieć poczęła. Jej kolonije utworzone w liczbie 40, do środka wieku XVII. przeszły w ręce jezuickie, lub upadły, prócz jednego Collegium w Poznaniu. Kwitnęły tedy szkoły jezuickie: w Brunsbergu, Wilnie, Krakowie, Poznaniu, Kaliszu, Toruniu, Gdańsku, w Orszy, Łucku, Kamieńcu, Łomży, Płocku, Przemyślu, Nieświeżu, Lublinie, Jarosławiu, Sandomierzu, Rawie, Lwowie, Warszawie, Brześciu, Malborgu, Barze, Krośnie i innych jeszcze miastach.

Solą w oku były Jezuitom szkoły dysydenckie. Szkoły te były obsadzone nauczycielami bardzo zdolnymi, i w wieku XVI. najstaranniej pielęgnowały język polski. — Mimo opozycyi jezuickiej, kształciło się też niezawisłe od nich wychowanie katolickie. Już to naprzód Jan Zamojski r. 1594

założył akademią w Zamościu z wyraźnem wyłączeniem wydziału teologicznego, co się jednak nie utrzymało. Pokazali się i duchowni świeccy Jezuitom nieprzychylni, tak zwani Pijarzy, i ci roku 1642 otworzyli szkoły w Warszawie i Podolińcu na Spiżu. Powoli zakwitnęły ich zakłady w Rzeszowie, Chełmie, Łowiczu, Piotrkowie, Krakowie, Górze, Radomiu, Warężu, Wieluniu, Łukowie, Szczucinie, Międzyrzeczu wołyńskim, Złoczowie, Rydzynie, Lwowie.

Wypada nam się zastanowić, jakie dawano nauki w rozmaitych szkołach. W szkołach parochialnych i miejskich czyli farskich, zwanych mniejszemi, uczono pisać i czytać, modlitwy pańskiej, pozdrowienia anielskiego. składu apostolskiego, katechizmu, ministrantury, śpiewania psalmów (kantu), cokolwiek rachunków i gramatyki łacińskiej na Donacie, języka łacińskiego na dystychach Katona. „Przy innych kościołach (w Wrocławiu) były szkoły trywialne mieszczan wrocławskich, za zezwoleniem biskupa i kapituły założone — mówi M. Wiśniewski —; tu dzieci uczyły się abecadła, Ojcze nasz, pozdr. anielsk., Wierzę w Boga, psałterza, mianowicie siedmiu psalmów pokutnych i śpiewu kościelnego; nadto Donata, Katona i Thedula; ztąd szły do szkoły katedralnej."

Szkoły katedralne jako też zakonne, dzieliły się u nas równie jak szkoły w reszcie Europy na trivium i quadrivium. Dla tego tak nazywane było trivium, że w niem uczono trzech nauk t. j. gramatyki, retoryki i dyalektyki; quadrivium, że w niem uczono czterech nauk, t. j. arytmetyki, jeometryki, astronomiji (czyli astrologiji) i muzyki. Po szkołach miejskich już w 14. wieku uczono języka polskiego i niemieckiego. Prócz nauk objętych trivium i quadrivium w szko-

łach katedralnych, uczono pisma św. i ojców kościoła, śpiewu, liturgiji, katechizmu i t. p. Szkoły katedralne nazywano u nas także szkołami wyższemi i do nich przychodzili uczniowie ze szkół miejskich, czyli farskich, na wyższe nauki. Właściwem i głównem ich przeznaczeniem było: usposobić młodzież do stanu duchownego. — Szkoły zakonne, obok podziału na trivium i quadrivium, dzieliły się jeszcze na wewnętrzne (interiores) i zewnętrzne (exteriores). Wewnętrzne były w klasztorze, i przeznaczone były dla młodzieży do zakonu wstępującej; zewnętrzne przeznaczone dla młodzieży sposobiącej się na kapłanów świeckich, lub też do innych zawodów życia; były w domu obok klasztoru stojącym, w którym jeden lub kilku zakonników nauki dzieciom wykładało.

Kolonije akademiji krakowskiej także łacinę poczytywały za pierwszy punkt nauki. Od czasów Kazimierza Jagiellończyka, łacina jeszcze bardziej szła w górę, że prawie stawała się drugim językiem narodowym.

W wieku 16. przykładano się i do greczczyzny. Po wznowieniu Collegium Lubranscianum w Poznaniu przez sufragana dyecezyji kujawskiej Rozdrażewskiego, na początku wieku 17., napotykamy następujący rozkład nauk: W klasie najniższej grammatica zwanej, codziennie godzinę zrana czytano listy Cycerona, wykładano prawidła gramatyczne i poprawiano z dnia poprzedniego zadania łacińskie. Drugą godzinę czytano Owidiusza, Tibulla i Properca, ale to tylko w celu nabycia wprawy w czytaniu. W trzeciej była przepisana etymologija i syntaxa. Po południu od 17 do 18 godziny (pierwsza godzina poczynała się od zachodu słońca) powtarzano na pamięć wyimki z Owidiusza i trudniono się początkiem języka greckiego;

od 18 do 19 czytano wybór listów Cycerona, a od 19 do 20 godziny odbywały się dysputy. W każdą sobotę przed południem, tak w gramatyce jak w innych klasach powtarzano nauki z całego tygodnia. W klasie drugiej schola rethorices, odmawiano przez godzinę z pamięci rozmaite wyjątki z Cycerona, godzinę objaśniano prawidła wymowy, godzinę czytano Wirgiliusza, Phaedra i wykładano prozodyją. Po południu od 17 — 18 uczniowie powtarzali z pamięci prawidła retoryki, potem przez godzinę mowy Cycerona, a przez godzinę uczono ich historyji. W sobotę deklamowano mowy Cycerona i czytano Prudensa lub innych chrześcijańskich poetów. — W klasie trzeciej, schola mathematica, od rana uczono dialektyki, matematyki i astronomiji. Po obiedzie raz wykładano kalendarz gregoryjański, drugi raz robiono zadania arytmetyczne, a trzeci obeznawano się z instrumentami matematycznemi. — W klasie następującej, schola philosophica, rano i po obiedzie uczono filozofiji po dwie godziny, a potem wykładano inne nauki przez opowiadanie. — W najwyższej, klasie schola juridica, uczono prawa. Głównie zajmowano się dyplomatyką, to jest czytaniem dokumentów, uczono się obrabiania czynności sądowych, to jest aring, przechodzono instytucyje prawa rzymskiego, czytano filozofiją moralną. Co miesiąc odbywały się wspólnie deklamacyje uczniów wszystkich klas, w tak zwanem oratorium, a raz w rok dawano przedstawienie dramatyczne.

Trudy nauczyciela przy katedrach wynagradzano w następujący sposób. Magistrowi przy szkołach katedralnych wyznaczono w nagrodę za pracę, małe dochody, przywiązane do ółtarzy, tudzież dziesięciny, małdry itp. Uczniowie bowiem szkół katedralnych (w myśl koncilijum lateraneńskiego z r.

1179) nie opłacali nic od nauki. — Zakonnicy trudniący się szkołami, przestawali zapewne na datkach dobrowolnych, któremi ich rodzice uczniów darzyli; uposażeni bowiem znacznemi dochodami od monarchów polskich, nie mieli potrzeby szukania dochodów z uczenia młodzieży. — Po miastach rządzących się prawem magdeburskiem obsadzał i opłacał nauczycieli przy szkołach farskich magistrat; przynajmniej tak było od niepamiętnych czasów w Poznaniu. Po wsiach i miasteczkach na prawie polskiem osadzał i utrzymywał nauczycieli przy kościołach parochialnych pleban miejscowy. Nauczyciele przy szkołach miejskich pobierali za swoją pracę w szkole zapłatę częścią w pieniędzach, co później suchodniówką zwano, z przyczyny, że była co kwartał w suche dni dawana, częścią w żywności i opale; mieli nadto wolne mieszkania. — Żaki (uczniowie) w szkołach farskich opłacali swym nauczycielom tak nazwane szkólne. Do niestałych dochodów nauczycieli miejskich należały od niepamiętnych czasów dochody za chodzenie z uczniami na pogrzeby zamożniejszych obywateli, z widowisk dawanych z uczniami podczas rozmaitych uroczystości itp.

Szkoły jezuickie w środku 17 wieku podniosły się przez przydanie niektórym główniejszym tak zwanych collegia nobilia. Uczono w nich staranniej tylko młodzież szlachecką. W tych kolegijach dawano lekcyje języków niemieckiego i francuskiego, a prywatnie greckiego i hebrajskiego. Zwykłe szkoły jezuickie dzieliły się na wiele klas, i tak była: schola infima, grammatica, syntaxeos, poeseos, rethorices, logicae, physicae, metaphysicae, moralis et experimentalis philosophiae, matheseos, theologiarum controversiae, moralis canonisticae,

sacrae scripturae speculativae. Tak szkoły zostające pod dozorem akademiji, jak szkoły jezuickie, pijarskie, Kanoników regularnych, a nawet niektórych klasztorów żebrzących, miewały swoje fundusze na utrzymanie ubogich uczniów. Przy lepszych kolegijach znajdowały się biblioteki, aparaty, machiny, instrumenta potrzebne do fizyki, matematyki i astronomiji. Profesorowie byli często jeometrami praktycznymi, czynili obserwacyje astronomiczne, obrachowywali południki miejsc, układali kalendarze. Sam sposób nauczania jezuickiego w początkach zakonu łagodny, później niezmiernie był przykry i niekorzystny; często nawet matematyka bywała nauką li pamięciową. Słynie dotychczas z powieści starych gramatyka Alwara, nad którą młodzież przez kilka lat oczy wypłakiwać musiała. — Rozmowa domowa uczniów odbywała się po łacinie, a zmuszało do tego signum; był to kawałek drewna, który dostawał uczeń przemawiający językiem polskim, i tak długo zatrzymywał, aż nie udybał drugiego na podobnem przestępstwie, aby mu signum oddał. W sobotę, kiedy tygodniowe przestępstwa redukowano na kary, mający signum nie uszedł na sucho. Wszelka niepilność, najmniejsza zdrożność, nawet sama niewinna wesołość, były karcone i kilkudziesiąt batami. Młodzież pozbawiona wszelkiej wolności pod okiem nauczycieli, skoro się tylko na bok usunęła, natychmiast okazywała się swawolniejszą, psotniejszą, gorszych obyczajów, jak dzisiaj najzepsutsze chłopcy uliczne, sobie tylko zostawione.

Widzieliśmy wyżej, w jak opłakanym stanie było u nas wychowanie młodzieży w epoce poprzedzającej. Wszystkie bez wyjątku nauki leżały odłogiem. Młodzież sposobiono po szkołach tylko na dewotów; zawiłościami dyalektycznemi, dziwactwami myśli

i stylu, igraszką słów, subtelnościami filozofiji i teologiji scholastycznej, zagważdżano najotwartszę nawet pomiędzy młodzieżą głowy. Z takiego zamętu wyrwał wychowanie młodzieży młody kapłan zgromadzenia Pijarów, Stanisław Konarski ur. r. 1700. Ucząc się we Włoszech i ocierając się o ludzi uczonych, poznał całą nicość i szkodliwość wychowania w Polsce i postanowił je za powrotem do kraju zreformować w zgromadzeniu swojem, a przez nie w narodzie. Znalazłszy w swych dążeniach i przedsięwzięciach opiekę u Stanisława Augusta, a dzielną pomoc u Czartoryskich, przywiódł do skutku reformę szkół w Polsce i wychowanie spaczone i fanatyczne, zwolna przemieniać zaczął w edukacyją narodową. Pojąwszy jednak ówczesne położenie kraju, że tylko ludzie z urodzenia poważani, potrafią przemienić jego myśl w reformę narodową, założył pijarski komitet warszawski pod nazwiskiem Collegium nobilium. Uczono w nim daleko lepiej, jak po innych szkołach, i napełniła go młodzież pierwszych domów, aż nareszcie stał się tak modnym, że akademiji krakowskiej zaszkodził. Tymczasem Jezuici sprzykrzyli się już rządom i przez bullę papiezką zniesieni zostali. Upadły więc liczne ich szkoły. W myśl Konarskiego najzamożniejsi i najoświeceńsi obywatele gorliwie szkołami opiekować się zaczęli. Powstała Izba Edukacyjna, potem Komisyja Edukacyjna i Towarzystwo ksiąg elementarnych. Ustanowiona r. 1779 komisyja edukacyjna bogate fundusze szkólne pojezuickie zabezpieczyła i uporządkowała. Po miastash wojewódzkich i innych zaprowadzono szkoły narodowe o sześciu klasach, w których języki łaciński, francuzki, niemiecki, matematyka, historyja, początki umiejętności przyrodzonych były przedmiotami naukowemi. Towarzystwo ksiąg elementarnych wezwało mężów

znakomitych naukami, do ułożenia książek elementarnych. Tym sposobem powstały fizyka, zoologija, jeometryja, arytmetyka i inne dzieła dla szkół narodowych, które nawet i dzisiaj mają pewną wartość. Nauczycielami byli w części Exjezuici, w części ludzie młodzi, usposobieni w akademiji krakowskiej. Wolne od nauki godziny obracano na ćwiczenie uczniów w sztuce wojennej pod dozorem wysłużonych wojskowych. — Śmiało sądzić można, że gdyby piorun nie był uderzył w gmach ojczysty i narodu naszego nie rozdarł i w trzy różne nie wyrzucił strony, nie byłoby dotychczas w całej Polsce jednej parafiji, a może jednej wioski, gdzieby nie była założona szkółka elementarna, w którejby uczono nie zbyt wiele, ale pożytecznych rzeczy.

## Szkoła realna i jej zadanie.

Jak ludzie jednego narodu różnią się w swoich przyrodzonych skłonnościach i zdolnościach, jak przez zewnętrzne stósunki są sobie nierówni, tak podobnie rozmaite jest ich przeznaczenie, które albo z samej natury albo z różnych okoliczności wypływa. Końcem uskutecznienia tego, częścią różna zdatność według różnicy wiadomości, częścią niejednakowa miara zdatności jest potrzebna. Do tego szczególniej zakłady naukowe są przeznaczone, aby każdemu w nabywaniu oświecenia dopomódz mogły według potrzeby. Stąd wypada, iż jako przeznaczenie ludzkie jest różne, tak podobnie zakłady naukowe i wykładane w nich nauki różne być muszą. Różnorodność potrzeb naukowych wywołała rozmaite zakłady naukowe.

Nie potrzeba nam dowodzić, że i kraj nasz ma różne potrzeby, że więc i u nas koniecznemi są różne instytuty edukacyjne.

Szkoły elementarne przeznaczono wychowaniu i wykształceniu masy ludu. Gimnazyja sposobią młodzież do słuchania ścisłych umiejętności wykładanych po uniwersytetach. Oprócz masy ludu po wsiach i miasteczkach, przestającego na elementarnem wykształceniu i oprócz małej liczby ludności, której synowie poświęcają się zawodowi uczonemu, liczna jeszcze pozostaje się klasa ludzi, składająca się częścią z ziemianinów, częścią z kupców, wyższych rzemieślników i innych przemysłowców, których już samo położenie w społeczeństwie stawia na wyższy stopień wykształcenia. Naukowe przygotowanie, ogólne wykształcenie, jakiego wymaga wyższe miejsce w społeczeństwie oświeconem, specyjalne wiadomości i nauki, uzdalniające młodzieńca do zawodów fachowych, wywołały potrzebę osobnych szkół, wyższych od elementarnych, a innych, aniżeli są gimnazyja. Zaradzając tej potrzebie, pozakładano po wszystkich oświeconych krajach szkoły tak nazwane realne. — W Niemczech już na początku XVIII. wieku żądano szkół, którychby nauki przyrodzone, czyli tak nazwane realija, głównym były przedmiotem wykształcenia. Pierwsza w takim duchu urządzona szkoła powstała w Berlinie roku 1747. Wkrótce przekonano się o użyteczności tego rodzaju zakładów. Szkoły realne zaczęły się przeto mnożyć, i dziś nieomal każde znaczniejsze miasto po prowincyjach niemieckich, posiada szkołę realną, która znaczny wywiera wpływ na podniesienie rzemiosł, przemysłu, rolnictwa i handlu.

Aby wyświecić różnicę, jaka zachodzi pomiędzy gimnazyjum a szkołą realną, przypatrzmy się obydwom zakładom z bliska. — Głównym przedmiotem naukowym w gimnazyjum są nauki starożytne t. j. łacina i greczczyzna, czyli literatura klasyczna, a głównym celem, filologiczne przy-

gotowanie młodzieńca do wykładu uniwersyteckiego, do studjowania nauk ścisłych. Niemasz tu żadnego względu na przyszły zawód uczniów, na ich stanowisko w życiu społecznem. Gimnazyjum osiąga swój cel, jeżeli młodzieńca uczyni umysłowo tak dojrzałym, że tenże poświęcić się może badaniom starożytności, ducha greckiego i rzymskiego, prawa i instytucyji rzymskich, filozofiji, prawa natury i t. p. Literatura klasyczna jest tu kamieniem węgielnym. To też w gimnazyjum od najniższej klasy zaczyna się język łaciński i razem z greckim główną liczbę godzin zabiera. Nauki zaś realne, jako to: historyja naturalna, fizyka, chemija, matematyka zastósowana, jeografia, statystyka, do podrzędnych przedmiotów tu należą. — W szkołach realnych głównym przedmiotem są nauki przyrodzone: zastósowana matematyka, fizyka, chemija, botanika, mineralogija, zoologija, jeografija, statystyka, arytmetyka, historyja powszechna i języki: polski, niemiecki, francuzki i angielski. Szkoły realne tak się okazały użyteczne, że nawet do gimnazyjów coraz więcej wprowadzają nauk przyrodzonych, które je coraz więcej do szkół realnych zbliżają; w wielu nawet miejscach niższe klasy gimnazyalne urządzają na taki sposób, jak niższe klasy realne, a z niektóremi gimnazyjami łączą szkoły realne, jak to n. p. w Toruniu i innych miastach uczynili.

Przechodząc do zadania szkoły realnej, na samem czele stawiamy: podniesienie rólnictwa krajowego. Nasi dotychczasowi właściciele ziemscy, z małemi tylko wyjątkami, odebrali wykształcenie gimnazyjalne, oparte głównie na językach starożytnych. Być może, że ztąd pochodzi, iż tylu mamy łacinników-gospodarzy. Rzucono się wprawdzie i u nas w ostatnich czasach do gospodarowania ekonomiczniejszego, do podniesienia kul-

tury ziemi; lecz zaiste! nie gimnazyjum to zawdzięczamy, ale ogólnemu postępowi rólnictwa, krytycznemu położeniu i przykładom z zagranicy. — Pomyślniejsze skutki dla podniesienia rólnictwa mają wydać nauki realne. Obszernie wykładana historyja naturalna zastósowana, uczy poznawać wszelkie rośliny, ich naturę, sposób rozmnażania i pielęgnowania, korzyści z nich; dalej uczy poznawać ziemię, jej skład, bogactwa, płodność, potem zwierzęta, ich naturę, choroby, użytek z nich; — słowem, historyja naturalna traktuje o rzeczach najbardziej rólnika obchodzących, który ziemię uprawia i obsiewa, z chodowania roślin główne ciągnie zyski, a zwierząt potrzebuje częścią do pomocy, częścią na pokarm. Kto chce być dobrym rólnikiem, koniecznie musi znać botanikę, zoologiją mineralogiją, czyto teoretycznie, czy praktycznie. — Niemniej użyteczną i pomocniczą jest nauka historyji naturalnej dla leśniczych, ogrodników. —

Zastósowana matematyka i rysunki uczą przyszłego rólnika myślenia, porządku, ładu, symetryji, są więc pomocniczemi naukami do budowania domów i zabudowań gospodarczych, — Chemija, przedmiot w szkołach realnych gruntownie wykładany, jak najbliższą ma styczność z rólnictwem. — Fizyka, zwłaszcza mechanika, naprowadza przyszłego rólnika na różne udoskonalenia narzędzi rólniczych. Statystyka wskazuje użyteczność komunikacyji handlowych, ważność dróg, rzek, kanałów, uczy o stósunkach wzajemnych miast, prowincyji, krajów. — Arytmetyka praktyczna uczy tak nam bardzo potrzebnej rachunkowości gospodarczej. Wreszcie historyja powszechna, jeografija, języki, kształcą młodziana w ogóle na oświeconego ziemianina.

Niemniej ważnem zadaniem szkoły realnej jest podźwignienie naszych rzemiosł i rękodzieł. Przy-

szły rzemieślnik, choćby tylko cztery niższe klasy ukończył, przystąpiłby do nauki rzemiosła z wykształconym do pewnego stopnia umysłem i zapasem pomocniczych wiadomości. Zadaniem szkoły realnej więc będzie: przez naukę historyji naturalnej zapoznać młodzieńca z surowemi produktami, które później uczyć się będzie przerabiać; przez naukę rysunków wpoić w niego zmysł estetyczny, upodobania w tem, co jest proste, regularne, kształtne, gustowne; przez naukę matematyki, również fizyki a szczególniej mechaniki, zaostrzyć umysł do zastanawiania się. Uczeń z tak rozwiniętym umysłem, później może stać się wynalazcą niejednej użytecznej rzeczy, i będzie zdolniejszym do udoskonalenia i podniesienia przyszłego swego rzemiosła lub kunsztu, aniżeli przystępując do tego zawodu przemysłowego z umysłem nieprzemyślnym, surowym. Ucząc się choćby tylko początków historyji powszechnej, arytmetyki, języków żyjących, uzdolnić się ma na oświeconego obywatela miasta, iżby z czasem wykształcenie swoje, nauki i wiadomości szkólne coraz więcej uzupełniał. Jeżeli przyszli rzemieślnicy nasi odbiorą więcej niż dotąd przygotowania naukowego, realnego; zamienią się ubogie i nędzne nasze mieściny na miasta porządne, kwitnące, napełnione pracowitymi, przemyślnymi rzemieślnikami, fabrykantami, zamożnymi i oświeconymi obywatelami.

Jak względem rólników i rzemieślników, tak i względem kupców szkoła realna wielkie ma do spełnienia zadanie. Dla czego kupcy nasi często nie mogą wytrzymać konkurencyji z cudzoziemcami? Ręczę, że nie jedynie, jak się niejednemu zdaje, dla posiadania mniejszych funduszów przy rozpoczęciu swego przedsięwzięcia, ale także dla nieznajomości kupiectwa, dla braku pomocniczych nauk i wia-

domości, dla braku ogólnego oświecenia i specyjalnego wykształcenia. Szkoła realna może się więc niepomału przyczynić do wyzwolenia kupiectwa naszego z niemowlęctwa, do podniesienia go w znaczeniu. Nauki szkół realnych, jako to: arytmetyka, statystyka, jeografija, a nawet historyja naturalna, fizyka, chemija, matematyka, są bardzo pomocniczemi i użytecznemi naukami dla przyszłego kupca. W szkole realnej poznać on może tak potrzebne dla niego języki: niemiecki, francuzki i angielski; wykształcić się gruntownie w języku i literaturze ojczystej. Gruntowne poznanie historyji powszechnej w szkole realnej, poda mu prawo obywatelstwa wśród ludzi światłych.

Następnie ważnem zadaniem jest szkoły realnej wykształcić przyszłych chirurgów i formaceutów, czyli aptekarzy, którymi w większej części są dotąd cudzoziemcy. Cała ich sztuka polega głównie na specyjalnej znajomości nauk przyrodzonych. I tak aptekarz doskonale znać potrzebuje zioła, kory, potaże, sole, spirytusy, kwasy i tym podobne rzeczy, należące częścią do historyji naturalnej częścią do chemiji.

Wielkie więc jest zadanie szkoły realnej, gdyż oprócz młodzieży poświęcającej się naukom ścisłym, jako to filologiji, prawu, teologiji, medycynie i głębszym badaniom nauk przyrodzonych, dla których gimnazyjum najwłaściwszym jest instytutem przygotowawczym, reszcie społeczeństwa li tylko szkoła realna stósowne dać może przygotowanie. Szkoła realna młodzieńca chcącego się poświęcić agronomiji, wyższym rzemiosłom itp. przygotowuje do najwyższych czyli specyjalnych szkół realnych, jakiemi są: szkoły agronomiczne, kupieckie, fabrykantów, techniczne, akademije sztuk pięknych, szkoły politechniczne itp.

## Wychowanie fizyczne młodzieży.

Ciało jako narzędzie rozwijania się i udoskonalania danych nam od natury przymiotów; jako rzeczywistego duszy ludzkiej działania, tem bardziej zasługuje na szczególniejszą uwagę, im mniej w początku dla szlachetniejszej części ludzkiej natury czynić można, i im więcej na tem zależy, aby zaraz w pierwszych latach, co owo narzędzie zepsuć może, ustrzedz się, a wynaleść i nastręczyć, co je stósownie do przeznaczenia użyteczniejszem uczynić zdoła. To jest właściwie przedmiotem dozórcy wieku młodego; leczenie bowiem wad i ułomności ciała, jest celem zatrudnień lekarza.

Od dawnych już wieków ważność wychowania fizycznego była znajomą. U starożytnych narodów, wychowanie dzieci zasadzało się na samych prawie rożnych ćwiczeniach ciała, co gimnastyką nazywano. Wszyscy pedagogowie czasów późniejszych i lekarze uznali, iż ścisły związek między ciałem i duszą zachodzi, i że obie te różne od siebie istoty wzajemnie na się działają. Przekonali się zarazem, że zdrowie ciała wielki ma wpływ na ukształcenie rozumu i wychowanie moralne, i postrzegli, iż większa część wad duszy od złej organizacyi, czyli stanu ciała pochodzi. Sama moralność nie bez fundamentu dobrego, oszczędzanie zdrowia, przez wzgląd na potomstwo zaleca.

Staranność o szczęśliwą organizacyją, a zatem o siłę i zdrowie dziecięcia, rodzice przejęci świętością swych obowiązków ku tym, którym życie dają, jeszcze przed ich urodzeniem, gdy są w macierzyńskim żywocie rozpocząć mają. Ci, którzy starali się o zachowanie swych sił i zdrowia w młodości, mogą bezpiecznie zdrowego spodziewać się potomstwa. Dopóki matka płód nosi w swoim żywocie,

na wolne jego rozwijanie się, zdrowy posiłek, pilne strzeżenie się wszelkich fizycznych i moralnych szkodliwych wrażeń, wzgląd mieć powinna. Ma ona czuwać sama nad sobą, ile możności siebie oszczędzać, strzedz się wszelkich namiętności gwałtownych, któreby szkodliwe dla potomstwa skutki na zawsze sprowadzić mogły.

Pomijając uwagi względem pokarmu, powietrza, przyodziewku i innych potrzeb dziecka, zatrzymuję się osobliwie przy jednej z najważniejszych, a tą jest poruszenie dziecka. Im młodsze są dzieci, tem więcej poruszać się powinny; i tem niesłuszniej się dzieje, jeśli od nich spokojnego zachowania się, milczenia, dłuższej nieco na jednem miejscu zabawy żądamy. Owszem ich ruchliwość i częstą odmianę miejsca i przedmiotów za najpewniejszy znak ich zdrowia uważać potrzeba, bez którego wszystkie najpiękniejsze przymioty duszy nic nie znaczą. Wprzód, nim się same chodzić nauczą, pożyteczną będzie rzeczą pozwolić im, aby na ziemi, zwłaszcza pod gołem niebem na murawie, pierwsze poruszenia czyniły, niżeli nosić je na ręku i okryciem jakiem krępować! I to jeszcze przestrzegać należy; aby podrosłszy dzieci często się na wolnem powietrzu bawiły, i żeby dalekie były od zatrudnień, przy którychby ich ciało przez długi czas w jednymże stanie, czy siedząc czy stojąc, miało zostawać. Starać się przytem należy, o rozmaite dla nich poruszenie, przez które władze ciała coraz większej doskonałości nabierają, a do czego nauka różne ćwiczenia ciała obejmująca, zwana gimnastyką, sposoby i środki nastręcza. Szacunek tej nauki u Greków i Rzymian, obu znakomitych w starożytności narodów i poważanie tejże przez mędrców dawnych, z przyczyny, jej wpływu na zdrowie ludzkie, przytem oraz codzienne doświadczenie, mówią dostatecznie za wa-

żnością przepisów fizycznego wychowania. — Jak wielka jest różnica między dziećmi, które ustawicznie wodzi się przy sobie, strzeże się przed najmniejszym wietrzykiem, którym nic śmielszego czynić się nie pozwala, gdzieby siły ciała wykazać się mogły, owszem krok śmiały uważa się jako postępek naganny, niebezpieczeństwem grożący; a dziećmi które od pierwszych lat przez różne poruszenia kształcą członki ciała swojego, sposobią się jakby unikać niebezpiecznych wypadków. Zdarza się wprawdzie, iż niekiedy ćwiczenia ciała zanadto przesadzone bywają, że odbywane nawet z ostrożnością stają się szkodliwemi, to jednak dowodzi, iż wszystko częścią nadużyciu podlega, częścią iż nie wszystkie wypadki od samego człowieka zależą.

Wszystkie dzieci i młodzież, zwłaszcza płci męzkiej, których żaden przymus nie dręczy, bez żadnego w dalszym czasie przewodnictwa rozpoczynają pewne ćwiczenia i poruszenia ciała, i im młodszemi i zdrowszemi są, tem mniej mogą w spokojności zostawać! Chodzą, biegają, skaczą, wdzierają się na wyższe miejsca, pasują się, podnoszą i ciągną ciężary, obnoszą co tylko im się nastręczy, igrają chętnie z wodą, jeżdżą, jeśli nie na koniach, to na kijach przynajmniej i tym podobne mają zabawy. Byłoby srogością, zakazywać im tego wszystkiego. Dozórca lub nauczyciel nic nie ma więcej do czynienia, jak tylko we wszystkiem miarę oznaczać, i wspierać niedoświadczenie, zwłaszcza gdy zabawa niebezpieczeństwem grozi. Wszystkie te jednak przyrodzone poruszenia mogą być przez sztukę i pewne do tego poczynione środki nietylko pomnożone, lecz staną się nawet z większym pożytkiem i ukształceniem dla młodzieży. Tak działo się już w starożytności, i ztąd sztuczna gimnastyka powstała; też samo i w teraźniejszych czasach z pe-

wnemi tylko odmianami, z przyczyny odmiennych teraz obyczajów, dziać się może i powinno. Znajomość tych ćwiczeń ze strony nauczyciela jest więc konieczną; powinien on ile możności posiadać biegłość, aby swych uczniów własnym przykładem do tego pociągnął. To mu nieskończonych przykrości oszczędzi, których uniknąć nie można, skoro młodzież nudzi się, lub żadnego nie ma przewodnika przy swoich zabawach.

Z wielu ćwiczeń fizycznych, jakiemi dziecko bez nadwerężenia ciała zatrudnionem być winno, wymienię następujące:

*a.* Najpospolitsze i najpożyteczniejsze ze wszystkich poruszeń, któregoby w żadnym dniu opuszczać nie należało, jest chodzenie. Stanie się wzmacniającem ciało, jeśli na żadną zmianę powietrza uważać nie będziemy, jeśli nie zlękniemy się żadnej orzykrej lub niedostępnej dorogi, a przezco się rozumie, wdzieranie się na mniej dostępne góry, wyszukiwanie dróg nowych, które niedostępnemi być się zdają. Jeśli wybiera się piękne okolice do przechadzki, wzmaga się czucie człowieka, jeśli czasami przedłużamy przechadzki, i zwłaszcza niekiedy przedsiębierzemy piechotą małe podróże. Szukać należy przy przechadzkach różności przedmiotów, aby te bawiąc młodzież, zawsze coś nowego nastręczały. *b.* Bieganie wzmacnia płuca, czyni lekkim, i ważne korzyści często sprawić może. Toczenie obręczy za pomocą kija, jest także pewnym rodzajem biegania, które nie wiele morduje, a bawi. *c.* Ćwiczenia na lodzie przez chodzenie, bieganie, ślizganie się, są nie bez pożytku. Czyste bowiem powietrze, wzmacniające zimno, przyspieszenie biegu we krwi, poruszenie muskułów, działając skutecznie na ciało, i dla duszy stają się dobroczynnemi. *d.* Skakanie na górę

i na dół, przez rowy, wzmacnia piersi, członki i muszkuły. *e.* Wdzieranie się na miejsca wyniosłe w niektórych przypadkach niebezpiecznych nie jest bez pożytku. *f.* Mocowanie się jest zabawą, do której wielką mają z siebie dzieci ochotę; chętnie bowiem sił własnych między sobą doświadczają. Samo tylko nieuczciwe i grubijańskie pasowanie się z biciem i darciem się za włosy połączone; rzucanie o ziemię gwałtowne i w miejscu niebezpiecznem z gniewu pochodzące, niepowinno być cierpiane. *g.* Rzucanie do wyznaczonych celów wzmacnia szczególniej rękę, piersi i oko. Gry rozmaite w piłkę są pożytecznem ćwiczeniem, do czego grę w wolanta przydać należy. *h.* Chodzenie na drążkach czyni śmiałym i zręcznym. *i.* Utrzymywanie równowagi jest bardzo pożytecznem ćwiczeniem, do którego wprawiać można dzieci przez chodzenie po wązkich ścieżkach, belkach, tarcicach. Kto w takim sposobie jest wyćwiczony, nie łatwo zawrotu głowy dostanie. *j.* Kąpanie się i pływanie, pierwsze jako środek do utrzymania czystości i wzmocnienia ciała, drugie jako sposób pomnożenia zdrowia i odjęcia trwogi wśród niebezpieczeństwa na wodzie. Dozór tylko przyzwoity i wzgląd na przystojność oraz uczciwość być powinien. *k.* Wreszcie taniec, który przedewszystkiem zmierzać powinien do tego, aby dziecko nabyło ruchawości, prosto się trzymało i umiało przyjemną w każdym razie zachować postawę ciała. — Prócz tych są jeszcze inne ćwiczenia ciała, które przecież w zakres nauki gimnastyki wchodzą.

Najpierwszem więc staraniem rodziców i wychowawców powinna być troskliwość o wyposażenie dziecka w zdrowie i czerstwość na całe życie. Najczęściej jednak przeciwnie się dzieje; dzieci zwykle od piątego roku siedzące życie prowadzić muszą.

Według instrukcyi szkólnej obowiązani są rodzice posyłać dzieci do szkoły elementarnej po skończonym piątym roku ich życia. W domach prywatnych także zaledwie dziecko mówić się nauczy, już je zasadzają do książki i stolika. Chłopcy uczęszczający do wyższych szkół cały dzień siedzą; najpierw sześć godzin w klasie, potem drugie sześć w domu, jeżeli chcą zadania porobić i dostatecznie na lekcyje się przygotować. Ztąd pochodzi, że młodzież nasza jest tak słabowita, mdła i tylu chorobom podległa, ztąd także pochodzi nietylko fizyczna słabowitość, ale i umysłowa ospałość, brak zapału młodzieńczego, natchnienia i tęgości, bez której nie może później wyrobić się charakter. Oby przynajmniej urządzone były dla młodzieży szkólnej regularne, latem i zimą, wspólne przechadzki i ćwiczenia gimnastyczne! Po osłabionej, chorowitej młodzieży, czy spodziewać się możemy zdrowych na ciele i duszy obywatelów kraju?

---

## Aforyzmy pedagogiczne.

### Zdania Platona o ćwiczeniu młodzieży

Zła matka dla dzieci, jest jak ryba, która wypuściwszy raz ikrę na wieki o swych dzieciach zapomina.

Jakim ty ojcem lub matką, kiedy dziecięciu twemu sposobu do życia nie zostawujesz?

Dobry syn u ojca, dobry będzie uczeń i obywatel.

Nierządne życie w rodzicach, dzieci ich robi słabemi, ale i w smutkach wielkich poczęte dziecię, zdrowem nie będzie.

Mleko do dwóch lat najlepszym pokarmem dzieci.

Człowiek jak drzewo; lepiej mu na dworze, a przynajmniej niech ma dziecię powietrze zdrowe, i pokarmy lekkie.

Zdrowsze dzieci mlekiem i jarzynami żywione, a trochę im tylko mięsa dając. Zwierzęta drapieżne jedzą mięso i są drapieżne. Jarzyny robią człowieka do ludzkości skłonniejszym i dają mu charakter słodszy

Ochędóstwo jak w dzieciństwie, tak w dalszym wieku zdrowiem największem będzie. Często kąpać dzieci w wodzie zdrowej w czasach letnich. Niech nie sypiają w pierzu, w gorącu, a niech mają odzienie obszerne. Wodę tylko pić mają, a dopiero około 12 roku ich, trochę mięsa pozwalać.

W siódmym roku jeszcze nie czas długiem siedzeniem psuć zdrowie dziecinne. Owszem utrzymywać (jeżeliby było ciekawe) chęć zbytnią do nauki; ale ćwiczenie ciała, umacniając je bieganiem na wolnem powietrzu, najlepsze.

Życie pracowite w młodości, długie lata sprowadza; ale do tego młodzież niech się chroni jeść i pić rzeczy gorące.

Ćwiczenie dzieci w naukach ma być urzędem najpierwszym w narodzie, i to ma być pierwszem staraniem rządu, ażeby do tego cnotliwi i najzdatniejsi byli wybierani.

Nudzenie się dziecięcia cały dzień nad książką, osłabia na potem siły jego.

Edukacyja fizyczna w dzieciach najpierwsze ma mieć miejsce; bo pierwej naród potrzebuje ludzi zdrowych, niżli uczonych.

Nie wypuszczaj z ćwiczenia dziecięcia, póki nie dojrzeje. Natura owocu nie puszcza od gałęzi, póki nie dojrzał; my wcześnie na świat młodzież puszczamy.

Sokrates nie chciał mięszać się do rządu, ale

mówił, że woli ćwiczeniem młodzieży wielu zdatnych do urzędów uczynić.

Dzieci niech się tego uczą, co im mężczyznom potem może być użyteczne. Temistoklesowi mawiał nauczyciel: „Dziecko! ty nie będziesz średnim, ale albo najgorszym, albo najlepszym obywatelem.“

Dzieci równie się psują karą niesprawiedliwą, jak niekarnością. Najlepsze zaś ćwiczenie dzieci, ażeby patrzyły na dobre przykłady tych, którzy je otaczają. Dzieci niżeli same co zrobią, pierwej naśladują; dawajmyż im najlepsze wzory.

Dzieci lubią historyją; niechże im dawane będą do czytania dzieje cnoty.

Psuć złym przykładem młodych, jestto zarażać wody publiczne.

Zabraniać młodzieży śmiechów i uciech, jestto chcieć, ażeby wiosna rodziła swoje owoce.

Z dziećmi z największem obchodzić się należy uszanowaniem, ażeby przy nich nic zdrożnego nie mówić.

Natura daje życie, a ćwiczenie daje życie dobre.

Czego ojciec żałuje, że zrobił w życiu swojem, niech od tego ochrania dziecię swoje.

Nauczysz dziecię jak to mieć sumienie, jeżeli je często przestrzegać będziesz w błędach, w które wpadać może.

Niech się dzieci uczą bez przymusu.

Kto zrobił w dzieciach wstręt do kłamstwa, już ich tem samem zrobił na potem poczciwemi.

Solon prawo śmierci napisał na tego, ktoby, wszedłszy do szkoły dzieci, zgorszył je.

Kobiety mają czułość większą do dobrego wyżywienia dzieci, a mężczyzni do ich edukacyji sposobność.

Nie żądaj wiele roztropności od młodych, co nic mają doświadczenia.

Uczą w szkołach głębokich albo bawiących nauk; nie masz szkoły, gdzieby uczono cnoty, a ta byłaby i łatwiejsza do pojęcia i potrzebniejsza nad inne; bo cnotą narody stoją.

Staraj się aby syn twój miał więcej rozumu i cnoty, niżeli majątku. Sokrates nie dbał o syna mniej cnotliwego; żonie napominającej go: „wszakże on synem twoim,“ plunąwszy na ziemię odpowiedział: „wszakże i ta ślina ze mnie.“

Nauczyciel winien, kiedy się uczeń nieuczciwie sprawuje.

Naucz dzieci twoje skromności, a nie będziesz się za nie wstydził; naucz męztwa, a siebie i ojczyznę obronią; naucz cierpliwości, a zniosą przykrość bez mruczenia; naucz pogardy życia, a umierać będą bez żalu; naucz miłości ojczyzny, a z nią razem będą szczęśliwemi; naucz mówić zawsze prawdę, a będą cnotliwemi. Kiedy się kto od młodości w cnotach nie wyćwiczył, z ciężkością mu przychodzi pełnić je potem.

Edukacyja dzieciom pokazać powinna, jakiej rozkoszy szukać, a jakiego bólu chronić się należy.

Niech będzie ustawicznie dziecię zatrudnione ćwiczeniem jakiem, albo uczciwą rozrywką, a nie będą miały namiętności czasu do wzrastania.

Religija, jakakolwiek jest, ma być gruntem edukacyji, bo każda broni występków głośnych, a tajnym grozi karą za nie po śmierci.

Nauka największa jest: niczego się złego nie nauczyć.

Nauki szczęśliwym są ozdobą, nieszczęśliwym pociechą. Nauki czynią to, że sam z sobą być i bawić się mogę. Majątek przypadek zniszczy, a nauka zawsze zostanie się.

Jak podróżny bez wiadomości drogi, tak człowiek bez edukacyji prędzej zbłądzi.

Naukę cnoty, niech daje człowiek cnotliwy; bo kilka lat uczenia, jedna zbrodnia nauczyciela popsuje. Nauka jest pastwą młodości, starości pociechą, lekarstwem przeciwko nudzeniu się; ona nas prowadzi do poznania samego siebie, i im jest wyższa, tem uczy być pokorniejszym.

Lepsza jest niewiadomość rzeczy zupełna, niżeli wiadomość wielu niedoskonała.

Książka jest dobra, kiedy w niej autor mówi co trzeba, kiedy nie mówi tylko co trzeba, i kiedy mówi jak trzeba. Wiele złej książce a długiej przydać potrzeba, ażeby była krótsza. Piszący pięknie, ale o złych rzeczach, muzy robi nierządnicami.

Zdarzaj dziecięciu rozrywki słodkie, nie będzie napierać się niebezpiecznych.

Nie naznaczaj dziecięciu wiele obowiązków, bo cię będzie oszukiwać.

Nie traktuj dzieci z grubą ostrością. Miłość pokazywać się ma w oczach ojca, który strofuje syna.

Wiele jest dzieci, które dla słabości zdrowia albo pamięci, uczyć się umiejętności nie mogą; ale każde może się nauczyć cnoty.

Kiedy dziecię wyznaje dobrowolnie błąd swój, daruj mu karę, a tak się wprawi mówić prawdę.

Niech twój humor przypadkowy dziećmi nie rządzi; pomięszasz w głowie ich, co to jest sprawiedliwość.

Jeżeli dziecięciu wiele pozwalają, będzie chciało potem rozkazywać; jeżeli mu się ustawicznie sprzeciwiają, będzie podłym, albo złośliwym.

Dzieci ucząc się w tłumie, nauczą się, jak potem w tłumie z ludźmi obchodzić się, nikim nie pogardzając.

*„Rozmowy Platona z uczniami“ przez Fr. Karpińskiego.*

# WYJĄTKI

## „z Żywota człowieka poczciwego“

Mikołaja Reja z Nagłowic.

**1. Jakie ma być ćwiczenie obyczajów młodych.** „Gdy już będzie podrastać dzieciątko, nie trzeba go też nazbyt w grozie chować, bo ona młodość jego, gdyż jeszcze zmysły słabe we mdłem ciele być muszą, tedy zbytnią grozą a frasunkiem snadnie może być zgwałcona, iż potem zawdy straszliwa, tępa a głupia być musi. Ale bez zbytniej grozy i bez frasunku, nadobnem upominaniem przedsię mu potroszę trzeba ujmować obroków, aby nie rosło jako wierzba, którą jako nachyli, także też rość będzie. Nie dajże mu też wiele leda czego szczebiotać, jako to inni bardzo radzi widzą, a zowią to szpaczkiem; bo jako mu to w obyczaj wnijdzie, tedy mu potem z tego wszeteczeństwo urośnie, którego potem trudno oduczyć będzie. Także też i panie matki około dzieweczek swoich powinny takież pilność mieć, gdyż to jest naród mdły, a na wszystko snadnie nałomny.“

**2. Jaki nauczyciel i nauki mają być.** „Gdy już dzieciątko podrośnie, starajże mu się pilnie o jakiego cnotliwego, statecznego, trzeźwego a pomiernego preceptora, aby nauki słuszne i obyczajnie poczciwe, mógł z niego brać i obaczać. A najlepiej go doma do czasu pochować, bo wzdy i rodziców i preceptora potrosze przestrzegać się będzie, i lepszy wczas w swem młodem wychowaniu mieć może. Nie dajże się nim z młodu łamać twardemi i wichrowatemi naukami, boć mu snadnie w młodej głowie wszystko pomieszają, ale co najpilniej uczyć go czytać, a potrosze słowa na polski język wykładać, coby mu ku cnotom a poczciwym oby-

czajom ono młode przyrodzenie przywodziło. A to jest najpilniejsza, aby dzieciątko, które już ku lepszemu rozumowi będzie przychodziło, uczyło się rozumieć co jest Bóg, a co jest wola jego..... A gdy się już tego dzieciątko potroszę nauczy, jako ma rozumieć Boga i jako jest srogim i miłosiernym, jako do niego wołać i jako mu dufać będzie miało; to już potem i do innych nauk będzie snadniejszy przystęp miało. Niechże go z młodu nie bawią owemi zawikłanemi fabułami.... Ale niech czyta historyje onych zacnych pierwszych ludzi, jako niczego innego nie patrzyli, jedno sławy, cnoty a poczciwości. A nie czynić gwałtu zbytniego w przyrodzeniu, bo więc widamy drugie, iż się tak zaczną albo zamyślą, że i od pamięci odchodzą a omdlewają; co to na potem onej młodej fantazyji wiele zaszkodzić może."

**3. Jako z czytania i rozmów korzystać.** „Nietylko czytania ale i rozmowy mogą nie mało ćwiczenia do rozumu podawać, a nie wszeteczne, nie opiłe, a nie lada o czem, ale takie, jakie miewali przedtem oni mądrzy filozofowie, którym się i dziś ludzie dziwują. Przytem też i to miej na pieczy, iż cokolwiek smacznego przeczcisz albo usłyszysz, niechże to nie będzie u ciebie jako miedzianym brzękiem, który tylko iż mimo uszy leci; donoś wszystko do onego wszech zmysłów wójta a do wójtowej, to jest do rozumu, a do pamięci, a co wójt rozezna, iż potrzebnego jest, to wójtowa niechaj mocno schowa i zapieczętuje; bo to tam już będzie miał jako w skrzyni, ku wiernej ręce schowane. Boć mało po tem, byś najwięcej przeszedł i przesłuchał, jeśli żeć to przy pamięci nie zostanie. Tedy będzie podobno ku onemu chłopu, co milę idzie do kościoła, i powiada przyszedłszy do domu, iż było czyste kazanie. A kiedy go spytasz, o czem, tedy i słówka nie umie powiedzieć."

**4. Dobre są i pomniejsze umiejętności.** „Jako są różne natury ludzkie, także też różne są i chęci i rozumy i ćwiczenia. Bo się jednemu chce umieć skakać, drugiemu strzelać, trzeciemu szyrmować, czwartemu śpiewać, piskać, na lutni grać. A wszystko to nic poczciwemu nie wadzi, a równie to jest ku innym poczciwym sprawom, jako przysmaki do potraw."

**5. O użyciu czasu.** „A nie daj czasowi nigdy darmo upłynąć; widzisz, żeć to szkodliwa utrata, kto czas marnie traci, bo się już ten nigdy wrócić nie może; a co godzinka na zegarze uderzy, to już czas przeminął, a co dalej to do kresu bieżemy. A tak albo czytaj, albo się wzdy czego ucz, albo się czemu przypatruj, a rozeznawaj sobie, upatrując nadobnie, co lepsze, a co gorsze."

---

## Zdania Jędrzeja Śniadeckiego o wychowaniu fizycznem.

„Dzisiejsze naukowe wychowanie tak powszechnie zaprowadzone i wspierane pod pozorem oświecenia ludu i narodów, robi poniekąd społeczność naszą dla każdego rozsądnego człowieka nieznośną. Bo jak zaniedbanie wychowania fizycznego mnoży garbatych, koślawych i wszelkiego rodzaju niedołęgów, którzy w towarzystwie wady swoje cielesne, najmniejszym niekiedy sposobem pokrywają i maskują; tak już w modne zamienione przesadzenie w wychowaniu naukowem i umysłowem w ogólności, daje z jednej strony napuszonych i nieznośnych bakalarzy, na których spojrzeć bez wzdrygnienia ramionami nie można; z drugiej strony pełne pokoje i sale pretendentów do nauki, rozumu i dowcipów, na których wspomnienie drzy rozsą-

dek, a którzy są prawdziwą klęską i zarazą teraźniejszych towarzystw, któreby często raczej lazaretami moralnemi nazwać można.“

„Popuszczając wodzy władzom umysłowym, te tylko pielęgnując i pieszcząc, podkopujemy i niszczymy władze cielesne, a przeto przenosimy życie fizyczne na prawdziwy padoł płaczu.“

„Za wyrodzeniem się fizycznem idzie skażenie serca i wykrzywienie umysłu.“

„Doskonałość człowieka wymaga, ażeby wszystkie jego władze równie wykształcone były; a zatem tak duszne, jako i cielesne.“

„Jedynym doskonalenia władz tak cielesnych jako i umysłowych, sposobem, jest ich używanie, ale używanie przyzwoite. Wszyscy teraz rozprawiamy o oświeceniu; wszyscy pałamy chęcią do nauk, kunsztów, wiadomości wszelkiego rodzaju; wszyscy się popisujemy z niemi. Ztąd teraz starzy i młodzi, bogaci i ubodzy, mężczyzni i damy, wszyscy w zawód, wszyscy bieżemy pędem za nauką. Stąd pochodzi, że cały nasz byt do mózgu, że tak rzekę, przeniósłszy, żyjemy po większej części w świecie umysłowym, dla którego poświęcamy spokojność i zdrowie.“

„Dwa dziś mamy zwiędnienia, zmiękczenia i rozpuszczenia się źródła; zupełne oddanie się pracom umysłowym z zaniedbaniem cielesnych, i pielęgnowanie czułości, jej pieszczenie, podsycanie aż do przesady, lub puszczenie wolnych cugli bujnej i rozżarzonej imaginacyji. Pierwszego zdarzenia dają nam przykład przesadzeni uczeni, drugiego nasze damy, owszem już nickiedy i nadobni trefnisie. Jak jedni, tak drugie całe swoje życie przenoszą do nerwów; są nadto czuli, drażliwi, bojaźliwi, tysiącznemi namiętnościami miotani, tysiącznemi nękani udręczeniami, a zawsze gwałtownie.“

„Dzieci strzeżone pieczołowitością zbyteczną, których stąpnieniem każdem kierują guwernantki, lub ostrożne piastunki; którym zawsze każą stać, siedzieć, stąpać i trzymać się tym a nie innym sposobem, którym się nigdy z przepisanej formy wyłamać nie wolno, a których poślizgnienie się lub upadek cały dom trwogą napełnia i jest ważnem w dziejach familijnych zdarzeniem; których wrzaśnienie jest klęską i postrachem wszystkich służących; zostają niedołężnemi na całe życie.“

„Patrząc na naszą młodzież pańską, po miastach troskliwie i umiejętnie chowaną, którą od dzieciństwa podług reguł nogi stawiać uczono, która nigdy z rąk nauczycielskich nie wyszła; którą na paskach wodzono, chodzić z reguł i tańcować uczono, tak że zupełnie nabrała dobrego tonu i układu, śmiać się potrzeba.“

„U nas kiedy dziecko z natury jest wesołe, żywe, ruchawe, w ustawicznej pracy cielesnej, każemy mu siedzieć, każemy mieć układ, powagę i rozsądek mędrca; każemy mu się uczyć i myśleć, kiedy nie może, a kiedy dojrzeje i może, każemy dać pokój.“

„Ojcowie i maski! Panowie i rządzcy ludów! zachowajcie to w trwałej pamięci, iż zbyteczne wygórowanie i że tak powiem, rozpieszczenie nerwów, jest największą wadą teraźniejszych społeczeństw; jest źródłem tysiącznych cierpień i nieszczęść; jest rodzicem tylu zagorzalców w polityce, w wierze i naukach; jest początkiem sekt, przesadzonych maksym i urojeń, a zatem i wojen częstokroć, daj Boże! tylko literackich.“

---

## Rady Komisyji Edukacyjnej dla nauczycieli.

„Edukacyja dziecięcia — mówi Komisyja Edukacyjna — jest osnową starań około niego pod-

jętych na to, aby jemu było dobrze i aby z niem było dobrze. — Będzie rosnącemu człowiekowi dobrze, gdy się ciało jego utwierdzi ku zdrowiu, gdy oświecony w prawdach religiji i w prawdach przyrodzonych, znać będzie swoje istotne dobro, swój prawdziwy pożytek, gdy zawczasu wprawiony będzie w znanie i czucie dobra. Będzie z nim dobrze, kiedy będzie ludzki, sprawiedliwy, dobroczynny, wykonywający powinności swoje. Edukacyja szkólna do tego zmierzać powinna, inaczej lepiej jej nie mieć.

„Nie jest tedy szkólnych instrukcyji końcem nauczyć dziecię obcego zniszczonych narodów języka, oziębłego wierszopistwa, fałszywej retoryki i tym podobnych rzeczy. Ale owszem całe staranie obrócić trzeba, aby uczeń zawczasu zaczął być rozsądnym, czułym, cnotliwym, pożytecznym. Nie masz środka: młodzian musi być głupi, niebaczny, albo dowcipny, rozsądny; nieużyty, albo czuły i dobrotliwy; nikczemny, ciężki społeczności, albo użyteczny obywatel. Do tego zatem każdy nauczyciel ma kierować nauki szkólne, albo się nie podejmować urzędu.

„Nauczyciel każdy powinien być o tem przekonany, że od niego prawie wszystko w edukacyji zawisło. Przymioty jego rozumu i serca, wpłyną w rozum i serce uczniów. Trzeba nauczycielowi być filozofem, jaśnie widzieć rzeczy, znać grunt człowieka, skłonności, namiętności, pojętność każdemu wiekowi właściwą, związek umiejętności ludzkich; trzeba być czułym, nienaruszonym, sprawiedliwym, gorliwym o dobro uczniów i dobro pospolite narodu ludzkiego. Ktokolwiek się podejmujesz tej usługi ojczyznie twojej, roztrząśnij dobrze obowiązek, który bierzesz na siebie, siły które przynosisz! Ucz się sam. 1. Czytaj książki moralne, któreby na gruncie religiji za fundament obyczaj-

ności, miłość bliźniego przepisującej, uczyły kochać wszystkich ludzi, nikomu krzywdy, przykrości nie czynić. 2. Czytaj książki o sposobie uczenia, dobrych logików dających poznawać postępowanie i związek myśli człowieka. 3. Rachuj się z samym sobą po szkole, rozmyślaj o postępkach i powinnościach twoich. 4. Myśl jeszcze więcej niż czytasz. Żadnego rzemiosła bez nauki umieć nie można.

„Uważ co się ma mówić, co zamilczeć. 1. Nic nigdy nie mów w szkole, czego sam jaśnie nie rozumiesz, na co się nie nagotujesz, coby nad pojętność uczniów było. 2. Mów, odpowiadaj grzecznie, miło. 3. Myśl, że z ludźmi rozumnymi sprawą, chociaż z dziećmi sprawa. 4. Staraj się o poznanie charakteru, skłonności, przymiotów każdego ucznia. 5. Pozwalaj, owszem zachęcaj dzieci, aby względem tego, co mówisz, przerywały, poufałe swoje pytania w wątpliwości czyniły. 6. Nie obrażaj uczniów mową dumną, zapalczywą, próżną, grubiańską. Poznają twój charakter; prędkość, lekkość twoja przywiedzie ich do pogardy.

„Spraw, aby cię poważano. 1. Raz przepisane dobre ustawy komisyji jak najściślej zachowuj, niechylając ich na żadne względy urodzenia, przywiązania, pokrewieństwa i t. d. 2. Jak najdokładniej powinności twoich pilnuj, mocą przykładu odejmując dzieciom wszelką okazyją i pozór wyjmowania się z swoich obowiązków. 3. Okazuj szczerą, przyjacielską, ojcowską ku uczniom miłość, nie czczemi słowy, ale samem postępowaniem. 4. Znoś się zgodnie z prefektem i dozórcami. 5. W zachowaniu sprawiedliwości bądź ostatecznie delikatnym. Nie chwal jednego z poniżeniem drugiego. W sprawach i kłótniach między dziećmi zachodzących miej sobie za obowiązek sumienia i honoru nigdy od prawidła sprawiedliwości nie od-

stępować. 6. Gdy przyjdzie nieuchronna karania potrzeba, nigdy nie karz w gniewie, nigdy nie karz gdy winny jest w pasyji. 7. Kary nie na przykrem srożeniu się na ciele zakładaj, ale na umartwieniu umysłu umniejszeniem szacunku, skromnem poniżeniem. Ogólnie mówiąc, kiedy przyczyny zasłużenia na kary umniejszone będą, umniejszy się ich potrzeba."

---

## O ćwiczeniu i wychowaniu dziatek.

(Polityka Aristotelesowa przez Sebestyana Petrycego).

1. **Potrzeba ćwiczenia i wychowania.** „Czego z przyrodzenia dzieci nie mogą mieć, tego im z ćwiczenia potrzeba. Ćwiczenie bowiem jest natury niejaka poprawa. — Jako oracze latorośle od pnia urzynają, aby przyrodzona siła i żywność w pień nie poszła, tak też zbytnia młodych ludzi bujność wychowaniem i ćwiczeniem odcięta bywa. Jako też wiele chwastów się rodzi na bujnym ogrodzie, jednak te chwasty są znakiem dobrej ziemi, gdzie będzie wyplewiona; tak też namiętności same przez się złe, wielki dowcip znaczą, nie zły, by tylko dobre wychowanie przystąpiło. — Którzy się starają dzieciom o wielkie bogactwo, a nie myślą o tem, aby dobre były, to czynią, co owi, którzy konie dobrze karmią, aby były tłuste, lecz zatem będą do wojny niepożyteczne. Bo jeźli synowie będą źli, nie pomogą im nic bogactwa; jeźli dobrzy, nie urażą się ubóstwem; potrzebniejsze tedy jest ćwiczenie dzieciom, niźli zbieranie pieniędzy.

2. **W którym wieku ćwiczyć dzieci.** „Kiedy poczynają do baczenia przychodzić dzieci, wtenczas je potrzeba ćwiczyć, bo bez baczenia ćwiczenie

nie może być. Ale około siedmiu lat przychodzą dopiero dzieci do baczenia, czego i samo przysłowie polskie dowodzi. Bo gdy chcemy oświadczyć baczenie i rozum nasz, mówimy pospolicie: minęło mi już siedm lat i drugie i trzecie, jakobyśmy chcieli rzec, iż od siódmego roku baczenie, co dalej to większe przychodzi."

**3. Jeźli dzieci osobno w domu, czy wespół w szkołach uczyć się mają.**

a. *W domu.* „Złych się nauczają obyczajów, którzy między ludzmi mieszkają, są i żywią naśladując ich obyczaje. Każdy nauczyciel rychlej i lepiej wyćwiczy jednego niźli wielu. Gdy dzieci posyłamy do szkół, częstokroć odmieniamy preceptory im z wielką ich szkodą. Albowiem niemniej dowcipy jako i zioła i drzewka, gdy często przesadzamy, albo gdy wino do beczki często odmieniamy, w niwecz się obracają. Żaden nie może lepiej wiedzieć natury, obyczajów, dowcipu dziecięcego, jako sami rodzice, którzy ich urodzili, uchowali i odżywili. Więcej ważą rodziców przykłady, niźli wielu doktorów napomnienia i nauki, tak na złe, jak i na dobre; nie masz też większej miłości jako rodziców przeciwko synom; nie może też być większa pilność i staranie jako rodziców. — Jako dobro pospolite częstokroć bywa zaniedbane (bo o co się wiele starają, żaden się nie stara), tak też i ćwiczenie w szkołach. A tak ćwiczenie i nauka dzieciom raczej doma ma być, niźli w szkołach wespół z inszemi."

b. *Iż mają być wspólne ćwiczenia dziatek w szkołach* te są przyczyny: „Których jest jeden koniec, jednakie też ma być ćwiczenie. Ale młodych ludzi i miasta albo rzeczypospolitej jeden jest koniec; tedyć też młodzi ludzie i dziatki mają być jednako ćwiczone. — Spólnych rzeczy w rze-

czypospolitej, wspólne ma być ćwiczenie, jako o wspólnych rzeczach wspólne staranie. Ale dzieci w rzeczypospolitej spólne są wszystkim używaniem. Bo się urodziły służyć rzeczypospolitej. Przeto dzieci spólne ma być w rzeczypospolitej ćwiczenie, spólna nauka w szkołach. — Ćwiczenie częściej ma mieć wzgląd na samo całe, to jest: tak ma być ćwiczona i strugana część jaka całego, aby całej rzeczy była przystojna i pożyteczna. Ale dzieci są części rzeczypospolitej, są nasieniem przyszłych mieszczanów. Ćwiczenie w szkołach wzgląd ma na dobro pospolite, bo jest ćwiczenie wspólne i pospolite; a domowe ćwiczenie tylko się ogląda na pożytek domowy. — Gdzie jest pomoc do prędszego ćwiczenia, tam potrzeba dzieci uczyć, niźli tam, gdzie pomocy nie bywa. Ale gdy się dzieci społem w szkole uczą, jest pomoc do prędszego pojęcia, do większej nauki. Bo jeden drugiego drze pilnością przesiądz; gdy chwalą kogo, drugi się zapala; gdy ganią, drugi się poprawia: do tego dowcipy całe nie rade w kącie siedzą, milcząc. Czego w domowem ćwiczeniu nie masz. — Gdzie przyjaźń z młodu jeszcze między przyszłymi mieszczany zaczyna się i zamaga, tam się dzieciom przystoi raczej uczyć, niźli tam, gdzie przyjaźni nie bywa. Ale gdy się społem dzieci w jednej szkole uczą, zaczyna się między niemi przyjaźń, i co dalej tem więcej zamaga. Bo nie masz nic w czemby się ludzie więcej kochali, jako gdy z sobą jednych nauk się ucząc, przychodzą do miłości spólnej jeszcze z dawnego towarzystwa i obcowania. Którzy się osobno uczą, nie miewają przyjaźni z drugimi, nie obcują z nimi."

## Zdania sławnych ludzi o wychowaniu.

Ma sobie nauczyciel postępować z dziećmi, jako z rozumnem stworzeniem, mówiąc z niemi jako z ludźmi, rozsądnie, do rzeczy, z oświeceniem i przekonywaniem. Bardzoby błądził, mniemając, że samem użyciem swojej władzy może co dobrego w ich umysłach sprawić. *Piramowicz.*

Kto drugich naucza, powinien się na wzór Chrystusa Pana zawsze do ich wiadomości i zdolności stósować, i przez swój wykład nie szukać sławy, ale pożytku słuchaczy. *Ks. Goffin.*

Kształtnie pisać nie jest rzecz istotna, dość żeby pisanie było wyraźne i czytelne: że jednak to, co czynimy, jak najlepiej czynić mamy, i w tej mierze starania zaniedbywać nie należy. *Krasicki.*

Wielką dla człowieka są nauki zaletą, lecz większą daleko cnota i charakter moralny, najpierwsza i najużyteczniejsza jest nauka. *St. Potocki.*

Nauki uczą młodych umiarkowania, starym pociechę przynoszą, dla ubogich są majątkiem, a majętnych ozdobą. *And. Załuski.*

Nauka moralna pierwsza jest w edukacyji człowieka. Najwięcej i nam samym i rządowi, i całej społeczności na tem zależy, żebyśmy poznali, co dobrego, i wcześnie do niego serca wkładali. *Dmochowski.*

Zaród niedowiarstwa i fałszywych zasad, wpojony w młode serca i umysły, przytem złym przykładem

nauczycieli, a niekiedy i rodziców podniecony, niewygasza się, ale tleje, i przy każdej sposobności w formie niedowiarstwa wybucha. *Ks. J. Bogobojski.*

---

Nauka wszędzie człowieka zdobi i na wojnie, i u dworu i doma, i w rzeczypospolitej; widzimy to, że ludzie więcej sobie ważą chudego pachołka uczonego, aniżeli pana wielkiego, a błazna, co go sobie palcem ukazują. *Jakób Sobieski.*

---

Nie za małą rzecz mieć to potrzeba, starać się o nauczyciela cnotliwego i rozumnego; chwalebny to ojciec, gdy go szuka, a szczęśliwy syn, gdy znajduje. *Zegar Monarchów.*

---

Gdyby chłopkowie i wiejscy obywatele z nami spółkowania ani związku nie mieli; gdyby się nie bawili tą najpożyteczniejszą w oczach natury zabawą, którą rolniczym pługiem wydobywa z ziemi zdrowie, życie, skarby, moc i całe szczęście narodów; jednakże milejby było widzieć ich oświeconymi nauką, dla tego, że są ludźmi, niżeli patrzeć na nich dzikich, okrutnych, nieoświeconych, i widzieć obraz jednejże z sobą natury. tak obrzydłą niewiadomości zeszpecony ciemnotą. *Karpowicz.*

---

Jako w inszych rzeczach, tak w ćwiczeniu dziatek mierność i baczenie ma być, abyśmy nie wykroczyli granic karania; nie bić nazbyt, ani też pobłażać nazbyt, uważać potrzeba dziecinne dowcipy, jeśli biciem, jeśli chwałą, jeśli cackami rychlej naprawione będą. Jako lekarze gorzkie lekarstwa cukrem słodzą, aby i wdzięczne i pożyteczne były, tak też przykrości plag i bicia łaską mają być miarkowane, myśląc o tem, żeśmy też kiedyś byli dziećmi i młodymi. *Seb. Petrycy.*

Dzieciom nie trzeba dawać morałów, ale powieści znaczenia moralnego i to nie w pewnych oznaczonych godzinach, ale w porze właściwej, aby głowy ich nie stały się magazynami wokabuł moralnych, lecz serca rozpalonemi ogniskami cnót. Dla czego mamy tak mało wynalazców a tak wielu uczonych? Dla tego, że młodzież uczymy więcej zasad, aniżeli czynów według zasad. Nim ciało jest wzmocnione, szkodzi człowiekowi każde sztuczne wykształcenie duszy. Jedyne rozwinięcie wczesne dowcipu jest nieszkodliwe. Kto mądrości poświęca zdrowie, najczęściej poświęca i mądrość. Łatwiej oswoić drapieżne zwierzęta, aniżeli roje owadów; tak i nad wielkiemi pokusami łatwiej odnieść zwycięztwo, aniżeli nad powszedniemi, małemi.

*Jean Paul.*

---

Sławny Lavater zaleca nauczycielom i rodzicom pięć głównych reguł przy wychowaniu dzieci; 1. utrzymywać dzieci zawsze w dobrym humorze; 2. przyzwyczaić je do porządku; 3. niedozwolonych rzeczy z dobitnością im odmawiać i próśb o takowe wcale nie cierpieć; 4. na dozwolone rzeczy ile możności zezwalać i w zakazywaniu takowych ukontentowania nie mieć; 5. utrzymywać dzieci zawsze w zatrudnieniu i nawet zabawę z pożyteczną czynnością łączyć.

---

## Statystyka oświaty Europejskiej.

Dzisiaj nie wystarcza już popęd serca, aby stać się pożytecznym społeczeństwu. Trzeba rozumu i nauki. Powszechne uznanie tej zasady, rozrost jej ogromny, jest jednym z tryumfów postępu ludzkiego. Obowiązkiem jest wiedzieć o ruchu ludzkości i

społeczeństwa własnego, bo tylko na podstawie tej wiedzy można dobrze o nich radzić, skutecznie dla nich działać, wyrabiać opinią i opozycyją, przedsiębrać czyny polityczne z prawdopodobieństwem skutku. W celu ułatwienia tego nowo-wiecznego obywatelskiego obowiązku powstała w zeszłym wieku, a w ciągu stu lat rozwinęła się szeroko umiejętność osobna, nazwana statystyką, umiejętność podająca na widok publiczny ruch państw i społeczeństw, niby niepochlebiające nikomu zwierciadło.

W obec sądu, który wydaje owe proste i lakoniczne rubryki tablic statystycznych, nie utrzyma się żaden blichtr, który dawniej ludzkie oczy mamił; wady społeczeństwa, przewinienia rządu pokazują się jak na dłoni. Daty pojedyńcze wiążą się z drugiemi w nieubłaganą konsekwencyją, wykazując braki i zaniedbania, które naprawić, obłędy, z których cofnąć się należy. Niema tu innej rady, prócz zamykania się i chowania oblicza przed natrętnem statystyki zwierciadłem; jakoż tylko państwa świadome swoich zasług na polu postępu, jak Francyja, Anglija, Belgija, chętnie się w niem przeglądają, chętnie pozwalają obcemu i niezawisłemu spojrzeniu nauki zajrzeć w tajemnice swoje, a od niedawnego dopiero czasu wyszła statystyka za pomocą komisyji i kongresów z zależności od dawnych swych źródeł, administracyjną drogą podawanych, które jako obrona interesowanego, nie mogły na absolutną zasługiwać wiarę. Łatwo też zrozumieć, że tylko samorząd może wpłynąć na zupełną reformę statystyki; że statystyka tylko za pomocą organów autonomicznych może się rozwinąć na korzyść powszechną, że powinna się stać pomocą ciał reprezentacyjnych w stawianiu żądań słusznych i przedsiębraniu reform skutecznych.

Oddzielną statystyki gałęzią jest tak zwana sta-

tystyka porównawcza. Zestawia ona organizmy państwowe i narody pod względem wszechstronnych rezultatów ich życia, porównywa je i klasyfikuje. Sł romne owe cyfry i notaty, na których poprzestaje, mówią silniej, niż najkwieeistsze argumenta. Jestto dyagnoza medyczna, wśród której bacznem okiem żadna choroba się nie ustrzeże. Jako próbkę tej statystyki porównawczej podajemy czytelnikom statystykę porównawczą oświaty, a mianowicie:

1, co do oświaty elementarnej, początkowej. Ogromna skala postępu rozpoczyna się tutaj w rzeczypospolitej szwajcarskiej a kończy naturalnie w cesarstwie rosyjskiem.

W kantonie tesyńskim i berneńskim, stojących na szczycie przypada jedna szkoła na 260 mieszkańców, w całej Szwajcaryji na 352 mieszkańców; w cesarstwie rosyjskiem (europejskiem) przypada szkoła na 7,260, w guberniji kazańskiej w szczególności na 13,700 mieszkańców.

W skutek tego stosunku liczba dzieci uczęszczających do szkoły do liczby dzieci, które do szkoły uczęszczać powinny, ma się w Szwajcaryji jak 94 do 6, w kantonie Zurich nawet 113 na 100, tj. że po zliczeniu wszystkich przynależnych do gminy, jeszcze 13 obcych do gminy nie należących, lub też osób po za wiekiem szkolnym będących, do szkoły uczęszcza. W Rosyji na 100 dzieci zdolnych do pobierania nauki 95 jej nie pobiera, tj. że wręcz odwrotny tamże istnieje stosunek (w Kazańskiem 2 na 100).

Pomiędzy temi dwoma ostatecznościami grupują się społeczności europejskie państwowe w następujący sposób:

Po Szwajcaryji i kilku mniejszych państewkach niemieckich Francyjaposiada największą szkół ilość, bo jednę szkołę na 501 dzieci. Następuje Danija

z jedną szkołą na 650, Anglija na 665, Hiszpanija, na 676, Prusy na 682 dzieci jednę szkołę mające.

Szwecyja i Norwegija przenoszą co do ilości szkół Austryją, celują przed nią i Włochy. Szwecyja ma jednę szkołę na 900, Norwegija na 810, Włochy na 960 dzieci, Austryja na 1200 (co się naturalnie do Galicyji nie stosuje, gdzie jedna szkoła zaledwie na 2000 dzieci przypada.

W najbliższem z Rosyją sąsiedztwie stoji Grecyja (jedna szkoła na 1510), państwo papieskie (na 1980), Portugalija (na 2860), Turcyja (na 3125), Romanija (na 3680).

Jeżeli niniejsze porównanie świadczy o ile istniejące rządy starały się o środki elementarnej oświaty, to porównanie liczby dzieci uczęszczających do szkoły z liczbą dzieci w wieku szkólnym będących, świadczy o mniejszem lub większem poczuciu potrzeby nauki, niemniej o stopniu propagandy ludności na rzecz oświaty.

Celują tu obok Szwajcaryji Prusy, w których95 na 100 dzieci do szkoły uczęszcza. Niżej stoji Francyja, wykazująca tylko 76, a trzymająca się pod tym względem na równi z Niderlandami i Anglią. Szwecyja ma 66, Norwegija 75 na sto. W Austryji znajdujemy liczbę 45 jako ogólną wypadkową, wypływającą z bardzo niejednostajnych dat prowincyjonalnych, bo podczas gdy w Czechach liczba przeciętna dochodzi do 78, w Galicyji wynosi zaledwie 17, w Dalmacyji i Bukowinie 11. Państwo papieskie graniczy pod tym względem z Turcyją i Rosyją, ma bowiem liczbę 16 na 100 (Turcyja 10, Rosyja 5).

W krajach narodowości polskiej liczby przeciętne są bardzo rozmaite. Podczas gdy w Galicyji znajdujemy fatalną liczbę 17, w Królestwie Polskiem (przed powstaniem) liczbę 12, która zapewne od tego czasu znacznie podrosła, spotykamy się w W.

Ks. Poznańskiem z liczbą 88 na 100, którą przynajmniej w połowie na rachunek polskiej ludności brać możemy.

Rezultaty oświaty początkowej objawiają się widomie w znajomości pisania i czytania. Dbalsze o statystykę państwa zbierają liczbę umiejących czytać i pisać z wykazów rekrutacyjnych, z metryk ślubnych i protokołów sądowych. Z wykazów tego rodzaju dowiadujemy się np., że ilość rekrutów umiejących czytać i pisać największą jest w Prusiech, bo 75 na sto, w Angliji 68, we Francyji 67, we Włoszech 40, w Austryji 29 na sto. W roku 1855 we Francyi 60 na 100 ślub biorących umiało się podpisać, w kilka lat potem, 1861 r., urosła ta liczba o 5 procent. Ale najciekawszą jest niezawodnie statystyka wykształcenia zbrodniarzy. Stawiając ją obok liczb przeciętnych wykształcenia, przekonywamy się z niej, że nawet w krajach z wysoką elementarną oświatą, zbrodnia przeważnie gnieździ się w sferach, gdzie taż oświata nie dotarła, że zbrodniarze rekrutują się głównie między intellektualnie zaniedbaną ludnością. I tak w Prusiech, gdzie 96 dzieci na 100 do szkół uczęszcza, gdzie na 100 rekrutów jest 75 umiejących czytać i pisać, wypada na 100 zbrodniarzy 20 tylko czytać umiejących, 25 zupełnie niewykształconych; we Francyi 18 czytających, 37 niewykształconych; w Austryi 56 niewykształconych, a 8 nieumiejących czytać. Od owych resztujących wykształconych, musimy odtrącić zbrodniarzy stanu, pokutujących za przekonania polityczne. Można zatem tylko przyklasnąć owej zasadzie: Jedna szkoła więcej, jeden dom karny mniej! Dodamy jeszcze, że owa zasada sprawdza się rzeczywiście. Szwajcaryja i Francyja mają stósunkowo najmniej wypadków kryminalnych w całej Europie. — Tyle o oświacie elementarnej.

2. W oświacie średniej (gimnazyja, szkoły realne) stosunek państw do siebie mało się zmienia, acz pomiędzy przewagą szkół łacińskich a realnych wielka zachodzi różnica. I tak Szwajcaryja utrzymuje równoważne między obudwoma kierunkami oświaty, a w obu wysokie stanowisko (na 398 mieszkańców jeden gimnazyjasta, na 542 jeden realista). Francyja i Anglija dały przewagę szkołom realnym na niekorzyść łacińskich (w Angliji jedna szkoła łacińska na 98,000 mieszkańców, we Francyi na sto tysięcy); w ogóle zaś przypada jeden uczeń kształcący się w realnych lub humaniorach: w Szwajcaryji na 229, w Prusiech na 259, we Włoszech na 380, w Austryi na 510, w Rosyji na 1690 mieszkańców.

3. Inaczej układają się liczby przy oświacie najwyższej, uniwersytetach. Liczba ich ogólna nie jest rezultatem usiłowań wieków ostatnich; tylko 19 wszechnic w naszym powstało wieku. Największa ich liczba datuje się: 16 z XIII, 18 z XIV, 36 z XV, 42 z XVI wieku. To też wszechnice są instytucyjami przeważnie średniowiecznemi, niewypływającemi z szkół średnich i ludowych, ale powstałemi w przypadkowych ogniskach nieprzystępnej masom oświaty. Przeważna ich ilość podupadła ze zmianą stosunków, wartość jest też nadzwyczaj rozmaitą. Podczas gdy przy paryskim jest 180, berlińskim 109, wiedeńskim 99 profesorów, ma uniwersytet w Perugiji zaledwie 18, w Cammerino i Sassari 12. W Paryżu liczymy przeciętnie 7928, w Oxfordzie 5275, w Berlinie 2708 słuchaczów, w Urbino bywa ich 178, w Sassari 118. Włochy mają 22, Niemcy z Prusami i Austryją niemiecką 23 wszechnic, Francyja ma ich tylko 17, Anglija 9, a przecież oba te ostatnie nie ustępują Niemcom co do uprawy nauk ścisłych, a Włochy niezawodnie

o wiele przewyższają. Cyfry oznaczające liczbę uczniów uniwersyteckich nie mogą także być miarą wysokiej oświaty, bo z nierównowagi między ilością szkół średnich i wszechnic wypływa w niektórych krajach mała doniosłość owej oświaty uniwersyteckiej. I tak na 965 mieszkańców w Rzymie przypada jeden student wszechnicy, co się tłómaczy napływem księży chcących otrzymać stopień doktora teologiji, w Rzymie bardzo dostępny. Z podobnych przyczyn jest liczba uczniów uniwersytetu we Włoszech, Hiszpaniji i Grecyji w stosunku do liczby ludności większą, niż w Niemczech, Francyji i Szwajcaryji.

Pomiędzy specyjalnemi szkołami zwracamy uwagę na przewagę instytutów technicznych w Francyji, Angliji i Niemczech, gospodarczych w Niemczech i Angliji, teologicznych i wojskowych w Rosyji. Rosyja licząca zaledwie 8 wszechnic i 5 na 100 dzieci uczęszczających do szkoły, utrzymuje 50 akademiji wojskowych o 12,338 studentach. Taż Rosyja bawiąca się w liberalność ma 50 instytutów dla dzieci wyłącznie szlacheckich.

Jeżeli powyższe daty wskazują nam stopień państw i narodów podług środków oświaty jakie dają żyjącemu pokoleniu, to interesowanie się ludności oświatą daleko trudniej liczbami da się wyrazić. Jedynym światło rzucającym wykazem, może tu być wykaz ruchu literackiego i dziennikarskiego.

Wykazy tego rodzaju obejmują: 1, ilość księgarń, 2, drukarń, 3, książek rocznie wychodzących, 4, gazet.

Jedna księgarnia wypada w Holandyi na 4450, w Rosyi na 350 tysięcy mieszkańców. Po Holandyi idą: Saksonija, Belgija, Wirtemberg, Szwajcaryja, kraje, które żadnego prawie ucisku ze strony cenzury nie cierpią i dla tego wielki handel ksią-

żkowy prowadzą. Co do ilości książek rocznie wydanych, równają się Niemcy i Francyja (Niemcy z niemieckiemi prowincyjami Austryji) dochodząc liczby 12.000, Anglija ma liczbę przeciętną 8,100, mała Szwajcaryja 955. W stosunku z liczbą ludności wychodzi w Saksoniji (centralnym punkcie książkowego świata w Niemczech) 1 książka na 1090 mieszkańców, w Szwajcaryji na 2640, we Francyji na 2930, w Austryji na 8800, w Rosyji na 29,000 mieszkańców. W Paryżu wychodzi rocznie 7460, w Londynie 4180, w Lipsku 1320 publikacyji, które się naturalnie na cały świat rozchodzą. Produkcyja Warszawy w latach przed powstaniem była znaczną (456), Galicyi zawsze ubogą (145 naturalnie z broszurami i kalendarzami). Wychodzi w Europie 7676 czasopismów, 2644 politycznych między niemi. Północna Ameryka ma samych politycznych 3242. Największą żurnalistykę ma Szwajcaryja, Saksonija, Anglija. W samym Londynie wychodzi 676, w Paryżu 641 czasopism. „Times“ rozchodzi się w 80,000 egzemplarzach, „Illustraded London News“ w takiejże liczbie. Dziennik robotników „Siécle“ ma 46,000, „Patrie“ 35 tysięcy, „Kladderadatsch“ 34,000 abonentów.

## Zakłady naukowe w Galicyji.

Uniwersytetów posiada Galicyja dwa: w Krakowie i we Lwowie. W uniwersytecie krakowskim było w r. 1864 profesorów 64; między tymi zwyczajnych 32, nadzwyczajnych 2, suplentów 7, adjunktów 17, prywatdocentów 6. Uczniów w zimowem półroczu było 371; z tych 283 zwyczajnych a 88 nadzwyczajnych; podług narodowości: Polaków 364, Rusinów 2, Niemców 3, Słowianin 1, innej narodowości 1; podług wyznania: rzymskich ka-

tolików 334, unitów 6, ewangielików i reformowanych 4, starozakonnych 27. W letniem półroczu liczba uczniów zmniejsza się do 341 w skutek wydalenia wszystkich obcokrajowych, w miejsce których przybyło tylko 38 Rusinów na wydział teologiczny.

W uniwersytecie lwowskim było profesorów 39; między tymi zwyczajnych 22, nadzwyczajnych 7, suplentów 6, adjunktów 2, prywatdocent 1, nauczyciel 1. Uczniów było w zimowem półroczu 723; z tych 642 zwyczajnych, 81 nadzwyczajnych; podług narodowości: Polaków 215, Rusinów 357, Niemców 116, Słowian 23, innych narodowości 12, podług wyznania: rzymskich katolików 329, unitów 344, syzmatyków 4, ewangielików i reformowanych 3, starozakonnych 43. W letniem półroczu liczba uczniów zmniejszyła się do 683.

Na wszystkich uniwersytetach monarchiji austryackiej znajdujemy Polaków z Galicyji: w zimowem półroczu 644, w letniem 611; Rusinów 390 w obu półroczach.

**Teologicznych zakładów naukowych** było w Galicyji:

*a*, Rzymsko-katolickich 4, a mianowicie:

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Krakowski | 8 | profes., | „ | supl., | 14 | alumn., | 16 extern. |
| Tarnowski | 5 | „ | „ | „ | 47 | „ | „ „ |
| Przemyski | 7 | „ | 1 | „ | 42 | „ | 1 „ |
| Lwowski | 3 | „ | 1 | „ | 15 | „ | „ „ |

wszyscy uczniowie prócz jednego Rusina w Przemyślu, Polacy.

*b*, Unicki jeden zakład w Przemyślu, w nim nauczycieli 3, uczniów 19 Rusinów.

**Chirurgiczna szkoła** we Lwowie liczyła w zimowem półroczu: profesorów 11, studentów zwyczajnych 112, nadto jednego prywatnego; w letniem

półroczu profesorów 11, studentów zwyczajnych 92, nadto jednego prywatnego.

**Instytut techniczny** w Krakowie liczył profesorów i nauczycieli 15, uczni 172, między którymi 156 Polaków, 4 Czechów, 2 Niemców, a pod względem wyznań: 145 rzymskich, 1 grecki katolik, 2 wyznania reform., 14 starozakonnych.

**Akademija techniczna** we Lwowie liczyła: profesorów i nauczycieli 14, uczniów 155, między którymi 98 Polakow, 10 Rusinów, 2 Czechów, 44 Niemców i 1 Rumun, a pod względem wyznań: 112 rzymskich, a 12 greckich katolików, 1 syzmatyk, 2 reform., 28 starozakonnych.

**Gimnazyjów** było w Galicyi 17, do których uczęszczało 6,329 uczniów; — **szkół realnych** 5, a w nich 641 uczniów.

Według rocznika centralnej komisyji statystycznej ma być w Galicyji, biorąc ogółem wszystkię wyznania, **szkół głównych** (Hauptschulen) 56; **trywijalnych** 2531, między któremi samych katolickich 2,448, i **szkółek dla dziewcząt** 54. Do tych szkół winno uczęszczać 568,221 dzieci, uczęszcza ich zaś rzeczywiście 142,619. Wreszcie tak zwanych **szkół powtarzania** (Wiederholungsschulen) ma być 1,120. Gdy atoli obliczenie szkół trywijalnych, dodawszy do nich nawet już parafijalne i prowizoryczne (Nothschulen) wykazuje liczbę ich zaledwie do 1,871 dochodzącą, wszystkie zatem powyższe tak zwanych szkół ludowych dotyczące daty, nader stają się wątpliwemi — a to właśnie daty, może z całej statystyki Galicyji najważniejsze.

Wewnętrzne urządzenie szkół w Galicyji jest następujące: najprzód idą tak nazwane **szkoły normalne**, złożone z 4 klas, nazwanych klasami niemieckiemi. Do tych szkół przyjmują się dzieci od 6 roku. Szkoły te są przygotowawczemi do gimna-

zyjum; prócz tego zaprowadzone po miasteczkach, zastępują miejsce szkół miejskich elementarnych i nazywają się wtenczas powszechnie trywijalnemi. **Klasa elementarna** czyli najniższa w szkołach normalnych. Uczą w niej sylabizowania, czytania polskiego i niemieckiego, tłumaczenia z książki elementarnej regułek czytania ale nie pisania. Mniej więcej takiej klasy elementarnej są urządzone nieliczne szkółki wiejskie w Galicyi. Od gorliwości proboszczów i nauczycieli zawisło uczyć lepiej i więcej w tych szkółkach. **I klasa**, czyli druga po elementarnej. Katechizm mały polski z pytaniem gdzie niegdzie, i tłumaczenie katechizmu niemieckiego; gramatyka polska i niemiecka; pisanie po polsku i niemiecku; rachunki tylko z głowy; Komeniusz — ćwiczenia z polskiego na niemieckie, tłumaczenie ustne z niemieckiego na polskie; ortografija języka niemieckiego. **II klasa.** Polski albo niemiecki katechizm bez pytań. Jeżeli niemiecki katechizm wykładają, wtedy niektóre jego części aż do trzeciej klasy odkłada się; gramatyka niemiecka i polska obszerniej; pisanie polskie i niemieckie i pisanie dictando z niemieckiego, a tłumaczenie z polskiego na niemieckie piśmiennie; ortografija niemiecka obszerniej; w rachunkach cztery działania piśmiennie; tłumaczenie z książki na pamięć i analizowanie słów. — **III klasa.** Katechizm wielki niemiecki; polskiego już się nie używa; historyja starego zakonu; czytanie polskie i niemieckie i tłumaczenie na niemieckie z książki na 3cią klasę; gramatyka niemiecka; niemieckie dictando; ćwiczenia piśmienne z polskiego na niemieckie; piśmienne wypracowania; pisanie polskie i niemieckie; rachunki proporcyji, kapitałów, reguła trzech. W sobotę po południu czytają uczniowie ewangieliją i z niej wyprowadzają moralne nauki. W każdej klasie są dwa kursa pięciomiesię-

czne, po których następują egzamina. Aby z niższej klasy przejść do wyższej, trzeba przepisany złożyć egzamen. W klasach tych uczy po kilku nauczycieli, każdy innego przedmiotu. Są więc tak zwani nauczyciele wydziałowi. Rano o 7½ bywa msza, potem o 8 zaczynają się lekcyje, a trwają do 10 przed południem, po obiedzie zaś od 2 do 4, wyjąwszy czwartek, w którym przez cały dzień rekreacyja. W niedzielę katecheta daje naukę kościelną. Szkoły te są bezpłatne; w większych miastach na koszcie cesarskim, w mniejszych opłaca je dziedzic i miasto.

Gimnazyja, czyli wyższe szkoły dzielą się w Galicyji, jak w W. Ks. Poznańskiem na 6 klas. Cztery klasy zowią się **gramatykalne**, tj. parva, infima, gramatyka, syntaksis. Następujące ostatnie dwie zowią się **humaniora**, tj. poetyka, retoryka. Te same nazwy używanemi bywają w innych dawnych zakładach, np. w konwiktach jezuitów, acz organizacyja ich daleko jest lepszą niż w galicyjskich szkołach. W gimnazyjach galicyjskich uczą w parwie wszystkich przedmiotów przez cały rok, wyjąwszy religiją. Na rok następny przechodzi nauczyciel z uczniami do infimy i znowu ich uczy wszystkiego. Ci zaś, którzy się źle uczyli, w niższej zostają klasie, a odbiera ich pod swój dozór profesor, który do niższej przychodzi klasy. W następnym roku znowu profesor idzie do klasy gramatyki, wraz z swymi uczniami; w czwartym zaś roku przechodzi z nimi do syntaksis, zostawując po drodze nieuków. Na rok piąty dostaje wreszcie nowych uczniów z którymi zaczyna kurs czteroletni znów od parwy. — Profesor gramatykalnych klas pobiera 500 fl. c. m. (2,000 złp.) w mniejszych miastach, a we Lwowie 100 fl. dodatku. Roczna szkolna opłata wynosi od ucznia 4 reńskie; uczniowie którzy się bardzo do-

brze uczą, uwalniani bywają od opłaty szkólnej. — Profesor daje tygodniowo godzin 18. We wszystkiem trzyma się przepisanych kompendyów i wypisów, autorem zwanych. Uczniowie nie czytają jak wypisy, a żadnego autora. — W gimnazyjum kar cielesnych nie używają. — Uczniowie opuszczający gimnazyjum, nie są przygotowani do uniwersytetu; przeto ktokolwiek się ma poświęcić teologiji, prawu lub medycynie, obowiązany jest słuchać na akademiji tak zwanej filozofiji, która się dzieli na 2 lata, czyli na 2 działy tj. logikę i fizykę. W pierwszym roku czyli logice wykłada się z religiji szczegółowo naukę o sakramentach; z filozofiji psychologiją i logikę w skróceniu; z matematyki algebrę, a w drugiem półroczu jeometryją na prędce. Prócz tego tłumaczą autorów łacińskich, np. Senekę, lecz nie poetów i uczą historyji naturalnej. W drugim roku czyli fizyce uczą religiji, historyji powszechnej i tłumaczą łacińskich prozaików. Matematyki już nie wykładają. Opłata roczna wynosi 6 reńskich. Tu każdy profesor wykłada swój przedmiot. Profesorowie pobierają 1200 fl. c. m. Na filozofiji wykładają się nauki w 4 godzinach dziennie, tylko w poniedziałek w 5, w czwartek zaś nie ma wcale lekcyji.

O ile się różnią urządzenia szkół gimnazyjalnych w Galicyji i w Poznańskiem, o tyle różnią się także urządzenia uniwersytetów. W Galicyji są stali, niezmienni profesorowie; każdy z nich daje swój przedmiot. Opłata nauk wynosi tylko 8. fl. c. m. na rok; żadnych nie ma honoraryjów. Od rządu bierze profesor 1400 fl. Nauka prawa trwa cztery lata; pierwszy rok poświęcony jest statystyce ogólnej i austryackiej, drugi prawu rzymskiemu, kościelnemu i kameraliom, trzeci polskiemu prawu itd., czwarty procedurze.

## Szkolnictwo w polskich ziemiach pod rządem rosyjskim.

Ze wszystkich zamiarów, które Rosyja przedsięwzięła przeciw polskości w Kongresówce i krajach zabranych, a które uważa za systematyczne dążenie do celu raz wytkniętego, najbardziej się odznacza zamiar szerzenia między ludem moskalizmu przez szkoły. — Rządowy cel wychowania publicznego pod panowaniem rosyjskiem jest pewno najhaniebniejszy pod słońcem. Jak rząd despotyczny opierać się może jedynie na niewoli mieszkańców, którzy się zaprzeć mają godności człowieka; tak i rosyjski cel wychowania publicznego jest: wyzucie człowieka z godności osobistej, a zamienienia go w podłego niewolnika, w ślepe narzędzie cara. Wychowanie publiczne pod panowaniem moskiewskiem ma wydać zupełnie inny skutek, aniżeli ten, jaki w ogóle wychowanie wydać ma; nie idzie tam o uszlachetnienie człowieka, ale przeciwnie o spodlenie go. Prawosławna religija pierwszą jest nad wszystkiemi, bo ta od cara pochodzi i car jest głową kościoła. Język polski i historyja polska całkiem jest ze szkół wyrugowana. Stósunki osobliwie pogorszyły się po ostatniem powstaniu. Moskwa nie wątpi, że jej się uda przeprowadzić haniebny system moskwiczenia, bo ona przywykła liczyć na wszelkie będące w jej mocy środki, a te, począwszy od kwestyi włościańskiej, aż do ostatecznych krańców chytrości i podejścia, aż do wyniszczenia polskiej narodowości przez deportacyje, przez zrujnowanie obywatelów i zatem przez zasiedlenie kraju kolonistami obcego rodu, tyle jej jeszcze w przypuszczeniu nastręczają widoków, iż się czuje panią położenia, lubo naród nie ugiął się na chwilę pod brzemieniem przechodzącego wszelką miarę ucisku. Nie wiele wywró-

żyć można pomyślności dla rezultatów szkół w krajach zabranych.

Szlachta polska na Litwie i Rusi, pierwsza w moskiewskim caracie podnosząc głos o zniesienie poddaństwa, zaczęła oraz robić starania za podźwignieniem moralnej strony ludu. Stanowisko do którego przez usamowolnienie pociągała niedawnych włościan swoich, nie mogło się godzić z ociemnieniem, z niewiadomością, z prostactwem. Nie dość więc było dać wolność, nie dość wolno obmyśleć środki na ziemską dla kmiecia własność i w niej zapewnić rękojmię obywatelstwa, bez czego wolność jest marą, wypadło jeszcze wyposażyć tych młodszych braci wiedzą, rozumem, aby stanęli w równowadze z tą nową dla nich obywatelską godnością.

I któż miał się tem zająć? — Car ze swojem ministeryjum oświecenia, z okręgami naukowemi, jedno miał w głowie, a to, żeby jak najskuteczniej i najprędzej młode pokolenie szlachty zdemoralizować i zmoskalić. Co do ludu, stał on na uboczu, i nietylko oświaty chłopa nie wspierał, ale jej przeszkadzał, zagradzając przepisami drogę do naukowych zakładów. Założenie ludowej szkółki w prowincyjach polskich było politycznym kryminałem.

Dawniej, za Mikołaja, jako ze wszystkiem co godziwe, co pożyteczne dla narodowej jedności, w podziemiach kryć się było trzeba, tak też i ze szkółkami nikt na jaw nie śmiał wystąpić: Komu dostatki pozwalały opłacać się rok rocznie sprawnikom i całej czeredzie policyjnych urwiszów, ten zwolna poruszał oświatę ludu, ale szkółki były nieliczne. Najprzód Żmudź, potem Litwa właściwa stanęły najwyżej, bo to części kraju zupełnie katolickie i tam duchowieństwo postępowało jednozgodnie ze szlachtą. Szkółka przed okiem policyj-

nego dozoru dała się tam ukryć pozorem książkowego nauczania katechizmu, pacierza, jednem słowem kościelną nauką. To też oświata ludu w tych częściach najwięcej postąpiła i od niepamiętnych czasów chłop tam modli się z książki, a i świeckie pisma stały się dla niego konieczną potrzebą: on tego pragnie, on się domaga i bez książki już się obyć nie może.

Z wstąpieniem na tron Aleksandra, szlachta powiedziała sobie: „teraz i czas już nie ten i car nie ten, ustał rząd policyjnego prześladowania — weźmy się do nauki ludu.“ I zaraz po złożeniu w ręce cara-reformatora sprawy o zniesienie poddaństwa, na pierwszym planie stanęła kwestya szkółek ludowych. I nie skarżono się, że na nauczycieli brak ludzi miejscowych, jak teraz Moskwa narzeka. Młodzież szlachecka, zaledwo projekt szkółek podniesiono, hurmem się sypnęła ze wszystkich uniwersytetów, ochoczo idąc na te nizkie posady, choć niejeden był już wykwalifikowany zająć w uniwersytecie katedrę. Lud prosty serdecznie witał tych młodych przewodników swej dziatwy, bo w nich, w ich nauczaniu, w ich braterskiem zbliżeniu się do siebie znalazł to, za czem dusza prostaka w poczuciu tęskniła.

Obok szkółek, pod dozorem dziedziczek stawały ochronki, na czas letni roboczy, dla tych znowu dzieci włościańskich, które jeszcze do szkółki chodzić nie mogły, a matki nie miały ich przy kim w domu zostawiać.

I Moskwa zawistnem okiem obejrzała się po prowincyach polskich, bo car, bo jego minister oświecenia, bo kuratoryje okręgów naukowych w inną stronę zamierzali nawrócić naukę ludu. Im nie szło o jedność przez oświatę w narodzie, ich oświata miała tę jedność rozerwać. I to jest obraz moskiewskiego w Polsce cywilizatorstwa.

Dziś stan rzeczy jeszcze się pogorszył. Wszędow dziś język polski wypierają z zakładów naukowych, zastępując go rosyjskim. Gimnazyja i inne wyższe zakłady naukowe zamieniają na czysto rossyjskie.

---

# ROZMAITOŚCI.

## 1.

Najnowsza statystyka wyższych zakładów naukowych w monarchiji pruskiej, wydana z polecenia ministra oświecenia, podaje, że nasze Księstwo liczy obecnie dziewięć gimnazyjów i jedno progimnazyjum w Pile. Z tych dziewięciu gimnazyjów dwa są katolickie w Poznaniu i Ostrowie, trzy mięszane w Inowrocławiu, Śremie i Gnieźnie, i cztery ewangielickie w Poznaniu, Bydgoszczy, Lesznie i Krotoszynie. W półroczu latowem 1865 roku, w którym Księstwo nasze liczyło siedm gimnazyjów i trzy progimnazyja, zatrudnionych było w tych dziewięciu zakładach gimnazyjalnych: 107 dyrektorów, rektorów, wyższych i etatowych nauczycieli, 14 umiejętnych nauczycieli pomocniczych, 15 nauczycieli technicznych, 20 księży i pastorów miejscowych, udzielających naukę religiji, 4 kandydatów wyższego stanu nauczycielskiego i 7 nauczycieli elementarnych, w ogóle 166 nauczycieli. — W półroczu tem uczęszczało do tych zakładów 3208 pozostałych i 509 nowo przyjętych, ogółem 3717 uczniów i to do klasy I 210, do klasy drugiej 457, do kl. III 820, do kl. IV 648, do kl. V 651, do kl. VI 606, do klasy VII 325. — Pomiędzy nimi

było: 1551 katolików, 1420 ewangielików i 746 żydów; 2047 miejscowych, 1614 zamiejscowych i 56 obcokrajowych. — Z tej ogólnej liczby złożyło popis dojrzałości 51, przeszło do innych wyższych zakładów naukowych 160, umarło 15 i poświęciło się różnym zawodom 450, tj. z klasy I 10, z klasy II 34, z kl. III 64, z kl. IV 45, z kl. V 45 i z kl. VI 26, tak że na końcu półrocza latowego 1865 roku liczba uczniów, do powyższych zakładów gimnazyjalnych uczęszczających wynosiła 3267. — W półroczu zimowem $18^{65}/_{66}$ r. nauczało w istniejących dziewięciu gimnazyjach i jednem progimnazyjum 107 dyrektorów, rektorów, nauczycieli wyższych i etatowych, 17 umiejętnych nauczycieli pomocniczych, 13 nauczycieli technicznych, 19 księży i pastorów miejscowych, udzielających naukę religiji, 6 kandydatów wyższego stanu nauczycielskiego i 7 nauczycieli elementarnych, w ogóle 169 nauczycieli. — W półroczu tem uczęszczało 3267 pozostałych i 557 nowo przyjętych, ogółem 3824 uczniów i to do klasy I 248, do klasy II 522, do klasy III 820, do klasy IV 614, do klasy V 691, do klasy VI 641 i do klasy VII 288 uczniów. Pomiędzy nimi było 1645 katolików, 1413 protestantów i 766 żydów; 2102 miejscowych, 1658 zamiejscowych i 64 obcokrajowych. Z tej ogólnej liczby złożyło popis dojrzałości 46, umarło 5, udało się do innych wyższych zakł. naukow. 154, i przeszło do różnych zawodów 224, to jest z klasy I 10, z klasy II 68, z klasy III 64, z klasy IV 28, z klasy V 33 i z klasy VI 21, tak że na końcu zimowego półrocza $186^{5}/_{66}$ r. pozostało 3395 uczniów do zakładów gimnazyjalnych uczęszczających. — Z powyższego zestawienia pokazuje się, że w szkolnym roku $18^{65}/_{66}$ 800 uczniów katolickich przypadało w przecięciu na jedno katolickie, a 354 uczniów ewangielickich na

jedno ewangielickie gimnazyjum, chociaż zaś gimnazyja nowego pomysłu, czyli tak nazwane mięszane, uważać będziemy jako naukowe zakłady, w których zarówno katolicka jak ewangielicka młodzież kształcić się może, wtedy mimo to 320 uczniów katolickich, a tylko 200 uczniów ewangielickich przypadnie na jedno gimnazyjum. Brak gimnazyjów katolickich, czyniących zadość potrzebie kształcenia się młodzieży katolickiej, okazuje się ztąd jak na dłoni.

## 2.

W latowem półroczu 1867 uczęszczało do uniwersytetów, liceów, zakładów agronomicznych w Prusiech: 1. **Uniwersytet Fryderyka Wilhelma w Berlinie.** Na końcu ubiegłego semestru było 1507, nowo immatrykulowanych przybyło 450, tak że ogólna liczba wynosiła 1957. Z tych należało 373 (314 krajowców, 59 cudzoziemców) do wydziału teologicznego, 503 (411 krajow., 92 cudz.), do wydziału prawniczego, 395 (351 kraj., 44 cudz.) do wydziału lekarskiego i 686 (572 kraj., 114 cudz.) do wydziału filozoficznego. Prócz tych immatrykulowanych odwiedzało jeszcze odczyty: 82 farmacentów, 19 dentystów, 72 elewów instytutu Fryderyka Wilhelma, 80 elewów akademiji medyczno-chirurgicznej, 455 elewów akademiji budowniczej, 34 akademików górniczych, 6 uczniów akademiji sztuk pięknych i 10 nieimmatrykulowanych, tak że ogólna liczba tego zakładu była 2715.

2. **Uniwersytet Fryderyka Wilhelma w Bonie.** Do pozostałych na końcu przeszłego semestru przybyło 182; ogółem było w latowem półroczu 921. Z tych uczęszczało do fakultetu ewangielicko-teologicznego 68 (4 cudz.), do fakultetu katolicko-teologicznego 206 (pomiędzy nimi 1 cudz.), do fakultetu prawniczego 179 (13 cudz.) a do fakultetu

medycznego 211 (8 cudz.), a do fakultetu filozoficznego 257 (43 cudz.), pomiędzy którymi 54 z akademiji z Popelsdorf i 17 na mocy § 36 immatrykulowanych. Prócz tych uczęszczało na odczyty 20 hispitantów i 23 farmaceutów; ogólna liczba słuchaczów wynosiła zatem 964.

3. **Uniwersytet Fryderyka w Halli-Wittenberg.** Pozostało z ubiegłego semestru 608, przybyło 244, ogółem 852. Teologiji słuchało 356 (pomiędzy którymi 31 cudz,), jurisprudencyji 45, medycyny 108 (5 cudz.) a filozofii 312. Z ostatnich jest 153 krajowców z świadectwem dojrzałości, 94 bez takowego i 65 cudz. Kolegija odwiedza prócz tego 2 hospitantów i 17 farmaceutów, ogółem więc 840.

4. **Uniwersytet w Królewcu.** Z przeszłego półrocza pozostało 359, przybyło 67, razem 426. Z tych było 82 teologów (2 cudz.), 69 jurystów (2 cudz.), 93 lekarzy (6 cudz.) i 183 filozofów (172 krajowców z zaświadczeniem dojrzałości, 7 bez takowego i 4 cudz.) Odczyty odwiedzało prócz tego 13 farmaceutów i 5 hospitantów, ogółem 445.

5. **Akademija w Monasterze.** Pozostało z ubiegłego półrocza 454, nowo immatrykulowanych przybyło 11, razem 465, w wydziale teologicznym było 253 (14 cudz)., w filozoficzny 112 (9 cudz.), prócz tego uczęszczało na odczyty 11 ,ogółem 376. Z immatrykułowanych pochodzi 241 z Westfaliji, 150 z Nadreńskiego, 5 z Saksoniji, 1 z Pomeraniji, 1 ze Szląska, 6 z Poznańskiego, 10 z Prus, 27 z Hanoweru, 1 z Nasau, 23 cudz. i wprawdzie 1 z W. Ks. Heskiego, 18 z W. Ks. Oldenburg, 1 z Belgiji i 3 że Szwajcaryji.

6. **Wrocław.** Pozostało 783, na Wielkanoc przybyło 135, razem 918. Z tych należy do wydziału katolicko-teologicznego 158 (1 cudz.), ewangielicko-teologicznego 78 (1 cudz.), jurystycznego 177 (1

cudz.), medycznego 187 (5 cudz.) a filozoficznego 318 i wprawdzie 264 krajowców z świadectwem dojrzałości, 23 bez takowego i 31 cudz. Prócz tego odwiedzało kolegija 53 farmaceutów, 1 hospitant i 10 ekonomów; ogólna liczba wynosiła więc 982.

**7. Gryfija.** Z przeszłego półr. 328, przybyło 84, ogółem 412. Fakultet teol. liczył 22, jurystycz. 14, medyczny 261 (12 cudz.) a filozoficzny 115 (11 cudz.), 29 akademików z Eldeny. Kolegija odwiedzało jeszcze 8 farmaceutów i 7 nieimmatrykulowanych.

**7. Getynga.** Na Wielkanoc pozostało 542, immatrykulowało się nowych 276, ogółem 818. W wydziale teologicznym 162 (24 cudz.), jurystycznym 206 (75 cudz.), medycznym 196 (44 cudz.), filozoficznym 254 (83 cudz.).

**9. Marburg.** W ogóle uczęszczało na odczyty włącznie z 8 nieimmatrykulowanymi 304. Z tych słucha teologiji 85 (1 cudz.), jurysprudencyji i kameraliji 51, medycyny 55 (2 cudz.), filologiji i filozofiji 43, matematyki i nauk przyrodzonych 39 (1 cudz.), farmacyji 18, (1 cudz.).

**10. Brunsberg** (Lyceum Hosianum). Z 35 na odczyty w latowem półroczu uczęszczających należało do wydziału teologicznego 22, do wydziału filozoficznego 13.

Na akademijach agronomicznych w Eldenie, Proszkowie, Popelsdorf i Berlinie było w ogóle 179 słuchaczów i wprawdzie w Eldenie 31, w Proszkowie 65, w Popelsdorf 63, w Berlinie 20. Z tych 179 akademików pochodziło 22 z Prus, 19 z Brandenburgiji, 11 z Pomeraniji, 14 z Szląska, 17 z Poznańskiego, 5 z Saksoniji, 6 z Westfaliji, 19 z Nadreńskiego, 2 z Szlezwig-Holsztynu, 5 z Hanoweru i 3 z Hesen i Nasau.

## 3.

Egzamin abituryentów w katolickiem seminaryjum nauczycielskim w Poznaniu odbył się roku zeszłego 3, 4 i 5 lipca pod przewodnictwem radzcy rejencyjnego i szkólnego Dr. Milewskiego. Wszyscy czternastu do egzaminu przypuszczeni abituryjenci otrzymali świadectwa dojrzałości, a mianowicie trzech z numerem 1 (bardzo dobrze), sześciu z numerem 2 (dobrze) a pięciu z numerem 3 (zadowalniające). Wszyscy abituryjenci są pochodzenia polskiego. — W podobnym zakładzie w Paradyżu składało egzamin 26 abituryjentów, z tych otrzymało świadectwo dojrzałości z pierwszym numerem 4, z drugim 11, z trzecim numerem 9, a przepadło 2. — Katolickie seminaryjum w Kcyni dopiero w r. bieżącym będzie miało swoich abituryjentów. — Liczba wstępujących do seminaryjów aspirantów co rok jest mniejsza. W przeszłym roku przyjęto w Kcyni 13, w Poznaniu 12, w Paradyżu 13. Ogółem zatem 38, co nie pokrywa ubytku nauczycieli przez śmierć, lub występujących z tego zawodu.

## 4.

Z sprawozdania kasy pośmiertnej nauczycieli W. Ks. Poznańskiego wyczytujemy, że pod względem statystycznym przy rozpoczęciu roku administracyjnego było członków 1670. Wciągu r. $18^{66}/_{67}$ przyjęto 55, było zatem ogółem 1725 członków. W ciągu jednakże roku umarło 40, wykluczono 10, wystąpiło dobrowolnie 9, pozostało zatem na dniu 30 czerwca 1867 składkujących członków 1666, którzy składki swe w 137 rendanturach pomocniczych opłacali.

Składka każdego członka w roku administracyjnym 1866 i 1867 wynosiła 4 tal. 10 sgr. Wdo-

wom resp. spadkobiercom po zmarłych 40 nauczycielach wypłacono 38 po 200 a 2 po 190 tal. Pod względem stanu kasy towarzystwa wynosi ogólny dochód 8662 tal. 5 sgr. 3 fen. Ogólny rozchód czyni 8321 tal. 3 sgr. 5 fen. Pozostało więc na dniu 30 czerwca 1867 dla towarzystwa w gotowiznie 341 tal. 1 sgr. 10 fen. Oprócz tej gotowizny posiada jeszcze towarzystwo 2000 tal. w 4% listach zastawnych poznańskich z kuponami od św. Jana r. 1867. Zarząd towarzystwa składają obecnie nauczyciele pp. Hecht, przewodniczący; Knappe, rendant; Hubert, kontroler; Cynka i Kasiński rewizorowie kasy i Schipke, trzymający pióro. Trzeci członek komisyji do rewidowania kasy p. Buchowski już dawniej z zarządu dobrowolnie wystąpił; brak więc trzeciego członka komisyji przy rewizyjach kasy uzupełnił prezydujący. Ze sprawozdania pokazuje się także, iż walne zebranie na dzień 3 października r. 1867 przeznaczonem było. Na porządku dziennym był pod liczbą 4 wybór trzech członków zarządu w miejsce pana Buchowskiego, który dobrowolnie wystąpił, oraz pp. Schipke i Kasińskiego, których urzędowanie jako takich na św. Michał 1867 roku się skończyło.

## 5.

Wiek kuli ziemskiej różnie bywa podawany przez geologów, którzy z rozmaitych warstw jej robią swoje wnioski. Badania pokładów koralowych przy brzegach Florydy doprowadzają do mniemania, że nasza ziemia daleko jest starsza, niż się zdaje. Ławy wspomniane koralowe powiększają się pracą mieszkających w nich i budujących je polipów o pół cala rocznie. Z rozległości tych ław na grubość i szerokość wynika, że jeźli zawsze w tym samym powiększały się stósunku, to na ich wytworzenie

potrzeba było 864,000 lat. Jeźli całość formacyji koralowej rozciągającej się od przylądku Florydy do Torgutas, weźmie się na uwagę, i takie same jej formowanie przypuści, to wypadnie z tego, że 1,000,000 lat rosła. Niektóre ławy tej pomiary przekonały o daleko większej jej rozległości, wynoszącej 900 stóp grubości w przecięciu — na której utworzenie potrzeba było lat 5,400,000.

## 6.

Sławny statystyk Otto Hübner, obliczając powierzchnią posiadanej ziemi przez państwa europejskie zestawia następującą tabelę: Rosyja ma z Polską i Finlandyją 99,296.50, Austryja 11,305.9, Francyja 9,850.47, Prusy 6,392.79, Wielka Brytanija i Irlandyja posiadają 5,762.35 mil kwadratowych jeograficznych. Doliczając posiadłości zaeuropejskie wypada na Rosyją 369,800.53, na Wielką Brytaniją 241,587.95, na Francyją 24,427.29, na Austryją 11,305.90, na Prusy 6,392.79 mil kwadr. W stosunku ludności europejskiej rozdział jest następujący: Rosyja ma 68,227,252, Francyja 38,067,094, Austryja 35,000,000, Wielka Rrytanija 29,071,000, Prusy 23,557,959 mieszkańców. Długi państwa wynoszą: W W. Brytaniji 5,352 (w posiadłościach 911 we Francyji 3,760, w Rosyji 2,404, w Austryji 2,305, w Prusiech 428 milionów talarów. Kontyngens wojska liczy w Rosyji podczas pokoju 508,000, w czasie wojny 979,000 ludzi, we Francyji 417,000 i 800,000, w Prusiech 264,000 i 647,000, w Austryji 250,000 i 619,000, we W. Brytaniji 139,113, (milicyja angielska liczy 129 tysięcy, marynarka 68,000, w posiadłościach 213 tysięcy 290 ludzi). Flota wojenna w Angliji ma 626 okrętów z 9158 działami, we Francyji 473 statków z 7747 działami, w Rosyji 325 okrętów

z 2168 działami, w Austryji 91 ekrętów z 1004 działami. Flota handlowa angielska liczy 28,787 statków o 5,760,309 tonach po 2000 funt (oprócz tego w posiadłościach 9734 statków o 862,999 tonach, francuzka 15,184 statków o 998,946 tonach, pruska 3218 statków o 623,964 tonach, rosyjska 3340 statków o 375,000 tonach, austryjacka 495 statków o 208,133 tonach. Związek północno-niemiecki liczy podczas pokoju 320,000, a podczas wojny 800,000 ludzi; flota handlowa 4641 statków o 1,323,786 tonach.

## 7.

Od dawnego czasu zwracały się usiłowania różnych uczonych ku rozwiązaniu ciekawego i każdego człowieka zajmującego żywo pytania: ile też ludzi zamieszkuje na całej kuli ziemskiej? Czy ród ludzki pomnaża, czy też zmniejsza swą liczbę? Odpowiedzi na to nie może dać wiadomość o ruchu ludności w jednym tylko lub kilku państwach, a nawet w jednej części świata. Trzeba módz zliczyć wszystkich mieszkańców na całej ziemi. Trudności były i są jeszcze ogromne, udaremniające dokładne poznanie cyfry prawdziwej, z powodu braku środków obliczenia w krajach dzikich i niedostępnych Azyji, Afryki i Ameryki południowej. Chcąc w przybliżeniu podać ogólną cyfrę, potrzeba prawdopodobnie tylko przypuszczeniami się wspierać, zkąd też pochodzi, że obliczenia najznamienitszych statystyków różnią się bardzo w rezultatach.

Najpoważniejsi autorowie takie dotąd w różnym czasie robili rachunki ogólnej liczby ludzi na ziemi.

| | | | |
|---|---|---|---|
| Püsching w roku | 1787 | obliczył | 1000 milionów. |
| Fabri i Stein | = 1800 | = | 900 = |
| Stein i Hörschelmann | 1833 | = | 872 = |
| Dieterici | = 1858 | = | 1288 = |
| Kolb | = 1865 | = | 1220 = |

Do tych obliczeń przybywa świeżo nowe, bardzo poważnego źródła, mianowicie w niedawno ogłoszonym I tomie Behma „Roczników jeograficznych". Ze wszystkich dotychczasowych obliczeń ludności ziemskiej, zdaje się ono być najdokładniejszem, rozumie się zawsze o tyle, o ile dzisiaj dokładność jest możliwa. Liczne podróże pojedyńczych badaczów, wyprawy kosztem rządów w najniedostępniejsze krainy urządzane, zespalanie prac biór statystycznych, kongresy uczonych, ulepszone środki komunikacyji i t. d., ciągle ułatwiają osiągnięcie coraz prawdopodobniejszych pod tym względem rezultatów.

Według Behma tedy, liczba mieszkańców kuli ziemskiej jest znacznie większą od dotychczas znanej cyfry. Wynosi bowiem 1350 milionów.

Z rozdziału na pojedyńcze części świata wypada, iż:

| | | |
|---|---|---|
| Europa liczy | 285.000.000 | mieszkańców. |
| Azyja | 798,600,000 | = |
| Australija i Polinezyja | 3.850.000 | = |
| Afryka | 188.000.000 | = |
| Ameryka | 74,500,000 | = |
| Ziemia | 1,349,950,000 | ludzi. |

Niezmiernie jest zajmującem udowodnienie tych obliczeń wedle części świata, wykazujące zarazem ich względne prawdopodobieństwo i trudności zebraniu ich towarzyszące. Z siedmioarkuszowego sprawozdania, zamieszczonego w rocznikach, treściwy następny wyciąg będzie w stanie bliżej wyjaśnić całość zagadnienia.

W Europie można ludność ogólną obliczyć prawie dokładnie, gdyż wszędzie już nieomal przyjęty system spisów ludności, a peryodyczne porządne jego przeprowadzenie małe tylko pomyłki pozo-

stawia. — Turcyja, w której statystyka ludności jest najgorzej z europejskich państw urządzoną, przedstawia co do azyjatyckich swoich posiadłości najpewniejsze cyfry w porównaniu z resztą Azyji. Zawsze bowiem istnieją już tutaj jakie takie obliczenia; tymczasem o takich krajach jak Persyja, Arabija, Turan i t. d., niema wcale wiarogodnych cyfr. Trzeba sobie radzić rozmaitego rodzaju przypuszczeniami, między któremi wybór sam jest nawet niemożliwy, bo żadna go nie ułatwia kontrola; może więc być, iż podana wyżej suma ludności azyjatyckiej różni się od rzeczywistej o jakie 100 milionów mniej lub więcej.

W Australiji i Polinezyji pewniejsze stósunkowo dadzą się zebrać daty, aniżeli w Azyji. Przedewszystkiem z małemi sumami mamy tutaj do czynienia, liczba bowiem ogólna piątej części świata nie przenosi wątpliwej w Arabiji, Persyji i innych azyjatyckich krajach; możliwy więc błąd nie tyle będzie wpływał na ogólne obliczenie. Następnie Australija i wszystkie wyspy na Wielkim Oceanie są daleko lepiej znane Europejczykom, gdyż są kolonijami państw europejskich. Posiadamy więc urzędowe obliczenie, a przynajmniej pewniejsze wiadomości o Australiji, Nowej Zelandyji i innych angielskich posiadłościach; o Nowej Kaledoniji, Tahiti, Markizach i wyspach Tuamotu, należących do Francyi; po części nawet i o hiszpańskich na Archipelagu kolonijach. Na najznaczniejszych wyspach Oceanu poosiedlani misyjonarze niezmiernie się przyczyniają także do uzupełnienia potrzebnych wiadomości. Z małemi osadami mając do czynienia, znając dobrze swą gminę, śledząc pilnie powiększanie lub ubytek jej członków, najlepiej mogą obliczać ruch miejscowej ludności. Organem tych wiadomości dla Polinezyji jest pismo peryody-

czne wydawane na wyspie Upolu od 1845 roku przez londyńskie stowarzyszenie misyjonarskie „Samoan Reporter“. Wiele innych dzieł angielskich, specyalnie badaniu Polinezyji poświęconych, uzupełniają tak dalece poszukiwania, że ogólna pomyłka co do liczby tamtejszej ludności zaledwo kilka tysięcy wynosić może.

Doskonale maluje stan statystyki ludności w Afryce odpowiedź, jaką daje sułtan Zanzibaru kapitatanowi Guillain. Kiedy ten go zapytał, jak wielką też może być ludność wyspy Zanzibar, władca jej odrzekł: „A zkądże mam o tem wiedzieć, kiedy nawet niewiem, ile w moim własnym domu mieszka osób?“

Rzeczywiste spisy ludności podejmowane tylko bywają w europejskich koloniach; w krajach pod zwierzchnictwem Turcyi będących, jak n. p. w Egipcie, obliczenia tylko są przypuszczalne, na których też dokładność nie można się zupełnie spuszczać. Ale i w kolonijach Europejczycy tylko i biali bywają spisywani; o liczbie ludności czarnej władze angielskie i francuskie dowiadują się pośrednio, wnioskując z sumy ogólnej podatków, dymów i t. d. Zupełnie więc jest niemożliwem podać wiadomość o całej masie murzyńskiej ludności, w okolicach równika przemieszkiwającej. Mniej lub więcej pewne wskazówki pojedyńczych podróżnych są tu jedynem źródłem. Tak słynny Livingstone o południo-Afryce, Henglin o wybrzeżach Nilu, misyjonarze Münzinger, Krapf, Władysław Mugyar, znamienity Barth udzielają wiadomości o północnej Abisyniji, wybrzeżach wschodniej Afryki, krajach Kimbunda i środkowym Sudanie. Lecz i ci powtarzają nieraz, iż ich cyfry są także więcej na domniemaniu, aniżeli na pewności oparte.

Żeby jednakowoż przyjść powoli do dokładniejszych

o afrykańskiej ludności obliczeń, potrzeba raz przyjąć pewne cyfry za punkt wyjścia, które potem w miarę nadchodzących lepszych wiadomości prostować zawsze możemy. — Dieterici przyjął 200 milionów jako ogólną cyfrę. Zewsząd jednak odezwały się głosy, iż cyfra ta jest zanadto wysoką; zredukowano ją na 150 milionów, zaczem przemawiał także i kunsul Hutchinson, dobry znawca zachodnich wybrzeży. Podnosząc dzisiaj tę cyfrę do 180 milionów, dzieje się to na podstawie nowych uzupełnień.

Nie mogąc zbadać ściśle sumy ogólnej ludności w Afryce, można jednak zrobić sobie dobre wyobrażenie o rozdzieleniu jej w pojedyńczych okolicach. Wtedy, gdy w Azyji południowo-zachodnie strony, Chiny i Indyje są najbardziej, a północ i zachód najmniej zaludnione: w Afryce zaś pas ziemi koło zatoki Gwineji, Senegalu aż do Cunene jest najludniejszy. Reszta kraju po za tym pasem bardzo mało jest zamieszkałą. Na całej północy, puszcze Sahary wypchnęły ludność tu i owdzie na brzegi Sudanu, lub osiedliły ją w rozrzuconych oazach. Wybrzeże tylko samo Śródziemnego morza znów jest nieco ludniejsze, chociaż wpływ Islamu nie dozwala mu zakwitnąć odpowiednio, jakby tego warunki naturalne gleby możność dawały. Nubija, Abisynija, Taka, słabo także są zaludnione; koło białego Nilu liczniej przez murzynów jest znów strona wschodnia zamieszkałą. Na południe ztamtąd, między zatoką Snaheli a wielkiemi jeziorami, w okolicach portugalskich posiadłości, koło Mozambiku, Zambezia i Sofala, prawie że wyludnionym okazuje się kraj. Zaledwo 17 ludzi przemieszkuje tam na jednej kwadratowej mili. W kraju Kafrów ludność się zwiększa, dochodzi nawet tu i owdzie do 453 mieszkańców na milę kwadratową;

ale w ogóle biorąc, południowy cypel całej Afryki, zacząwszy od 10° szer. jeogr. bardzo jest słabo zaludniony.

Przechodzimy do Ameryki. Zasiana europejskiemi kolonijami, ma swoje spisy ludności, podobnie jak na starym lądzie Europy. W Stanach Zjednoczonych bywają one regularnie co 10 lat dokonywane; w Brazylji, Meksyku i hiszpańskich dawniej rzeczachpospolitych nie dzieje się to równie akuratnie, lecz ze względu, iż instytucyje tamtejsze są bardzo do europejskich zbliżone, można dość dokładnie o liczbie ludności wnioskować, a w każdym razie bez porównania z większą pewnością, niż w Afryce lub Azyji. Pomyłki zresztą, mogące tu być popełnione, nie wpływają tak znacznie na błąd w ogólnej sumie, gdyż nie mamy z tak ogromnemi cyframi do czynienia jak w Azyji lub Afryce. Tam, jeźli zajdzie pomyłka o kilku lub kilkunastu mieszkańców na milę kwadratową, to w ogólnej sumie okaże się zaraz różnica o kilka milionów. Część nawet Indyjanów, żyjących w niezależnych plemionach, bywa obliczona w Stanach Zjednoczonych przez osobne urzędy, tak zwane „Indian Office“ przeznaczone do czuwania nad nimi. Ogólna ich liczba w całej Ameryce nie wynosi zresztą więcej jak 2 miliony. — Tym to sposobem ludność zbiorowa Ameryki zdaje się być dość dokładną, jeżeli ją na 74½ miliona oznaczymy. Dieterici podał ją wprawdzie tylko na 59 milionów, a więc o 15½ miliona mniej. Układając jednak swój rachunek w r. 1859, opierał swoję wiadomość o Stanach Zjednoczonych na podstawie spisów z r. 1850, podających ludność ogólną tychże na 23 milionów, gdy w spisie z r. 1860 dochodzi 32 milionów. — Podobnież północną Amerykę angielską obliczał o milion mniej, niż obecna jej lu-

dność wynosi; nakoniec co do całej południowej Ameryki opierał się na dawniejszych rachunkach, zamałe w ogóle podających liczby.

Suma tedy 1350 milionów wszystkich mieszkańców, przypuszczalnie na kuli ziemskiej żyjących, jest bez wątpienia jeszcze bardzo niedokładną, i pewno o kilka milionów mniej lub więcej od rzeczywistej różną. Jest ona wszakże w obecnej chwili, podług najnowszych i najstaranniejszych poszukiwań najprawdopodobniejszą. Nie należy wątpić, iż przy ciągłem dalszem badaniu coraz bliższą rzeczywistości będzie mogła się okazać.

## 8.

Wzrost Prus daje się jak następuje zestawić: Elektor Fryderyk I panował na 424 mil kwadr. zamieszkałych przez 188,500 mieszkańców. Król Fryderyk I na 1981 mil kwadr. i 1,731,000 mieszk. Król Fryderyk II na 3476 mil. kwadr. i 5,659,000 mieszk. Fryderyk Wilhelm IV na 5103 mil kwadr. i 18.491,220 mieszk., a król Wilhelm I na 6392 mil kwadr. i 24,000,000 mieszkańców.

## 9.

Dyrektorowie wyższych zakładów naukowych w W. Ks. Poznańskiem zebrali się w Poznaniu na konferencyą, celem naradzenia się nad rozmaitemi kwestyjami, tyczącemi się wykładania nauk. Pierwszą konferencyją zagaił 12 czerwca o godzinie 9 z rana na sali gimnazyjum protestanckiego Frydederyka Wilhelma naczelny prezes W. Ks. Poznańskiego p. Horn, powierzając prezesostwo w zgromadzeniu tajnemu radzcy rejencyjnemu Dr. teol. Mehring, a viceprezesostwo radzy rajenc. i szkólnemu Dr. Milewskiemu. Na zgromadzeniu obecny. .i byli następujący dyrektorowie gimnazyjów i szkół re-

alnych: z Poznania, za dyrektora gimnazyjum Maryji Magdaleny, który ma urlop, profesor Wannowski i dyrektor Szóstakowski, dyrektorowie Sommerbrodt i Brennecke; z Bydgoszczy Deinhardt i i Gerber; z Leszna Ziegler; z Gniezna Methner; z Inowrocławia Günther; z Ostrowa Tschackert; z Krotoszyna Gladisch; z Międzyrzecza Loew; z Wschowy Krueger: z Rawicza Rodowicz; z Śremu Stephan. Po ukonstytuowaniu się zgromadzenia, odczytał wnioskodawca dyrektor Semmerbrodt obszerny referat o 3 tezach, tyczący się uproszczenia wykładu nauki historyji; poczem dyrektor Tschakert odczytał korreferat. Nad wnioskiem dyrektora Sommerbrodta rozpoczęły się żywe obrady, w których udział wziął i pan naczelny prezes. Wszechstronnie uznano potrzebę uproszczenia nauki historyji po wyższych zakładach naukowych. Następnie przyjęto owe trzy tezy z małemi zmianami. 1. Historyją uniwersalną obejmującą historye specyjalne pojedyńczych narodów, uznano za nieodpowiednią dla gimnazyjów i szkół realnych i przekazano ją wszechnicom. 2. Z historyji starej najobszerniej traktowaną być ma pod względem etnograficznym historyja święta (biblijna), grecka i rzymska, w historyji średniej i nowej niemiecka, brandenbursko-pruska, ważne wypadki innych narodów, mianowicie w historyji średniej i nowszej mają być wykładane podług metody grupującej te fakta i w pojedyńczych punktach spoczynku historyi niemieckiej. Jednogłośnie oświadczono się przeciw wykładowi tak nazwanej filozofiji, historyji i metodzie synchronistycznej. 3. Starać się, ażeby uczniowie, mianowicie w średnich klasach, przyswoili sobie pewną liczbę dat historycznych, dochodzących do 200 a zawierającą najważniejsze fakta.

Drugie zebranie odbyło się w auli gmachu gi-

mnazyjum protestanckiego w czwartek 12 czerwca. Dyrektor p. Deinhardt odczytał obszerny referat „o traktowaniu wykładu łacińskiego języka po wyższych zakładach naukowych". Jako cel wykładu języka łacińskiego przedstawił: 1. przyswojenie sobie logiki praktycznej przez kształcenie gramatyczne; 2. wprowadzenie literatury rzymskiej; 3. ułatwienie i nadanie pewnej podstawy do nauczenia się nowszych języków romańskich. Referent uważa dla chłopców gramatyczne kształcenie w połączeniu z matematyką za centrum kształcenia. Pomimo, że rocznie w niższych klasach poświęca się 800 godzin na naukę języka łacińskiego, a zatem przynajmniej 4000 godzin aż do przyjścia do sekundy to jednakże częstokroć napotkać można nawet w najwyższych klasach niepewność i niedokładność w wykształceniu gramatycznem. Przyczyną tego jest wedle zdania referenta, nie dość sumienne i nie dość ostre ocenienie uczniów przy promocyjach, mianowicie z kwinty do kwarty i z tercyji do sekundy, oraz częstokroć za wielkie wymagania nauczycieli, przechodące siły ucznia. Następnie rozwodził się referent nad błędami pod względem metodycznego traktowania w skutek braku pedagogicznej zręczności, mianowicie u młodszych nauczycieli. Wykład języka łacińskiego opierać się powinien na języku niemieckim i dla tego potrzebną jest, ażeby uczniowie więcej byli obznajmieni z gramatyką niemiecką, niż to dotąd miało miejsce. Język łaciński nie powinien być używany za organ do naukowych rozpraw. Mówienie i pisanie po łacinie nic nie przyczynia się do lepszego poglądu na klasyczną starożytność, korzystniejszem jest porównywanie języków, w którem mianowicie ćwiczyć należy przez częste tłumaczenie z jednego na drugi. Przez zniesienie wolnych wypracowań łacińskich znikłby też

przedział, istniejący pomiędzy szkołami realnemi a gimnazyjami. Korreferentem był dyrektor Enger, w jego nieobecności odczytał korreferat dyrektor Szóstakowski. Zgadza się on z wywodami dra Deinhardta, twierdzi jednakże, że języka łacińskiego, mianowicie w sekscie i kwincie głównie w godzinach naukowych uczyć należy, nie spuszczajac się na pracę uczniów po za szkołą.

Trzecie zebranie odbyło się w piątek dnia 14 czerwca w izbie posiedzeń król. prowincyjonalnego kolegijum szkolnego. Na zebraniu tem radzono najpierw nad nauką języka łacińskiego w szkołach realnych i uznano ogólnie potrzebę pomnożenia godzin tej nauki w wyższych klasach. Następnie wywiązały się obszerne i gruntowne rozprawy nad nauką turniejów w wyższych nakładach naukowych, w których wyświecono jej dotychczasowe liczne niedostatki, pomiędzy któremi niepoślednią gra rolę brak nauczycieli, posiadających dostateczne naukowe w tym przedmiocie wykształcenie i brak lokalów, gdzieby się ćwiczenia turniejowe w każdej porze roku odbywać mogły. Podobne lokale posiadają bowiem tylko realna szkoła w Poznaniu i Międzyrzeczu. Te i inne niedostatki wyświecił w referacie swym dyrektor dr. Methner z Gniezna, z którym zgadzał się w swym korreferacie dyrektor dr. Gerber w Bydgoszczy; ostatecznie uznano potrzebę ograniczenia ćwiczeń turniejowych, których jedynym celem ma być zachowanie zdrowia i wzmocnienie ciała; prócz tego powinien zakład każdy postarać się o własny, osobny lokal do turniejów.

## 10.

Prowincyjonalne kolegija szkólne otrzymały w maju r. 1867 od ministerstwa oświecenia specyjalny plan nauk dla gimnazyjów i szkół realnych pierwszego

rzędu z tem nadmienieniem, że plan ten nie ma być uważany za obowięzujący plan normalny, lecz służyć ma za wzór, jakim sposobem postanowienia powszechnego planu nauk stósownie w wykonanie wprowadzone być mają. Prowincyjonalnym kolegijom szkólnym dozwolonem jest podzielić w inny sposób nauki, o ile stósunki miejscowe tego wymagają i o ile to pogodzić się da z wytkniętemi celami naukowemi. Wyraźnie zastrzegł jednakże minister oświecenia, że przy wykładzie historyji w średnich klasach głównie uwzględniać należy historyją ojczystą, a nawet w wyższych klasach należy ją często powtarzać.

## 11.

Minister wychowania wydał rozporządzenie do dyrektorów gimnazyjów i szkół realnych, ażeby ściśle się trzymali terminu przy zgłaszaniu się abituryjentów i przy egzaminie samym, a mianowicie, ażeby się wystrzegali przyspieszać takowy. Zgłoszenie nie ma rychlej nastąpić, jak trzy miesiące (w szkołach realnych dwa miesiące), egzamin nie rychlej jak 8 tygodni przed zamknięciem półrocza szkólnego, również przeciąg czasu pomiędzy ustnym a piśmiennym egzaminem ma być o ile możności krótki.

## 12.

Następujące rozporządzenie tyczące się rozszerzenia nadzoru nad nauczycielami przy wyższych zakładach naukowych ze strony państwa pod względem ich zatrudnienia pobocznego, wydał minister wyznań i wychowania publicznego: „Jak urzędy poboczne nauczyciele przyjmować jedynie mogą z pozwoleniem władzy nadzorczej, tak też i do pobo-

cznych zatrudnień prywatnych o tyle tylko są uprawnionymi, o ile to się da pogodzić z ich obowiązkiem jaki mają do właściwego swego urzędu. Osądzenie, o ile granica ta zachowaną lub przekroczoną została, przysługuje nasamprzód dyrektorowi, który pomiędzy innemi także, jak się to dzieje przy niektórych zakładach, wydać może postanowienie, do przyjęcia ilu godzin zastępczych podczas czasu szkolnego każdy nauczyciel przygotowany być musi. Każdy dyrektor wie, że tak tu, jak we wszystkiem innem, co w interesie szkoły rozporządzić uważa za potrzebne, w razie potrzeby odwołać się może o poparcie go do prowincyjonalnego kolegijum szkólnego, tudzież że to kolegijum podług uznania dyrektorów, którym jest trudno wynaleść zawsze słuszne pogodzenie interesów osobistych nauczycieli z interesami szkoły, żądać może, ażeby było zawiadomionem o rozległości prywatnej czynności każdego nauczyciela, ażeby módz udzielić potrzebne pozwolenie lub takowego odmówić."

## 13.

Podobne rozporządzenie wydała król. rejencyja w Bydgoszczy pod dniem 26 czerwca 1866 dla nauczycieli elementarnych, wedle którego tylko za poprzedniem zawiadomieniem dozoru szkólnego nauczycielom wolno udzielać lekcyje prywatne. Skoroby dozór szkólny z nadmiaru godzin prywatnych przewidywał uszczerbek dla szkoły, może takowe nauczycielowi zakazać.

## 14.

Rozporządzeniem ministra oświecenia z dnia 11 marca 1867 r. wygotowane zostały przez król. prow. kolegija szkólne instrukcyje: 1. dla dyrektorów, 2. dla ordynaryjuszów, 3. dla nauczycieli.

## 15.

Dziennik urzędowy ogłasza rozporządzenie z d. 27 marca 1867 r. król. rejencyji poznańskiej, tyczące się szkół elementarnych:

„Jeżeli szkoła ludowa odpowiadać ma zadaniom życia publicznego, należy poświęcić na ten cel potrzebny czas a korzystać z niego sumiennie. Niestety: w tutejszym obwodzie rejencyjnym nie staje się temu wszędzie zadosyć, a mianowicie w porze latowej. Celem zaradzenia takowym dowolnościom i nadużyciom spowodowani się widzimy przy zniesieniu wszelkich dawniejszych dotyczących postanowień a szczególnie ogłoszeń dzienników z dnia 4 kwietnia 1847, 7 marca 1848 i 20 maja 1858 rozporządzić niniejszem dla powszechnego zastósowania się, co następuje: 1. Wszędzie ku temu celowi dążyć należy, ażeby tak we wiejskich szkołach elementarnych, jak i w miejskich w czasie pory latowej nauka regularnie się odbywała w 32 godzinach przez tydzień, a mianowicie przed południem w 4 godzinach, po południu, z wyjątkiem środy i soboty w 2 godzinach. 2. Tylko tam, gdzie ubóstwo i gospodarcze stósunki ludności koniecznie wymagają, aby rodzice dzieci swe do szkoły jeszcze należące do pasania bydła i innych robót gospodarskich używali, wyjątkowo urządzoną być może, jeżeli przynajmniej 20 takowych dzieci się znajduje, tak zwana osobna szkoła dla dzieci pasących, a obok niej dla reszty dzieci skrócona szkoła latowa. 3. Do szkoły pasterskiej uczęszczać wolno tylko takim dzieciom, które: *a.* dziesiąty rok życia już skończyły, *b.* dosyć biegłe są w czytaniu i pisaniu, *c.* do takich należą rodziców, których biedne stósunki majątkowe uwzględnienie wyjątkowe usprawiedliwiają. 4. Przy końcu każdego półrocza zimowego winien inspektor szkoły liczbę dzieci, które uwzglę-

dnione być mają, event. po poprzedniem przekonaniu się o ich wiadomościach szkólnych ustanawiać i wykaz, przez nauczyciela w dwóch egzemplarzach ułożony, własnoręcznie podpisać, z których jeden egzemplarz nauczyciel odbiera, drugi zaś dotyczącej władzy policyjnej natychmiast doręczonym być winien. W równym sposobie postępować należy z dziećmi po św. Wojciechu lub w czasie półrocza latowego przybywającemi. Od rezultatu tychże wykazów zależeć będzie, czy w dotyczącem miejscu szkólnem osobna szkoła dla dzieci pasących urządzoną być ma lub też nie. 5. Nauka w szkole pasterskiej w każdym razie odbywać się musi przez 12 godzin w tydzień, najstósowniej przez 2 godziny dziennie, lub tam, gdzie miejscowe stósunki tego nie dozwalają, w 3 lub 4 dniach po 4 i 3 godziny; natomiast na skróconą naukę w szkole latowej przynajmniej 3 godziny dziennie przed południem poświęcić należy. 6. W razie gdyby mniej niż 20 było dzieci, które uwzględnione być mają, azatem nie byłoby potrzeby do urządzenia osobnej szkoły pasterskiej, winna nauka w szkole latowej najmniej przez 26 godzin w tydzień być udzielaną, która tak urządzoną być musi, iż dzieci pasące, które na uwzględnienie zasługują, po odbytej dwugodzinnej nauce do domu puszczone być mogą. 7. Odpowiednio tymże stósunkom należy ułożyć każdorazowy rozkład naukowy i nad przestrzeganiem onegoż starannie czuwać. 8. Ze szczególną sumiennością zaś należy przy dozwolonem odbywaniu skróconej szkoły latowej i szkoły pasterskiej baczyć na regularne odwiedzanie szkoły i upoważniamy podrzędne nam władze policyjne, ażeby rodziców odnośnie ich zastępców, a szczególnie chlebodawców, którzyby mimo tychże względów dzieci do szkoły należące w czasie wyznaczonych godzin naukowych do pasania by-

dła, lub do robót polnych, ogrodowych lub innych używali, po poprzedniem powtórnem protokularycznem napomnieniu bezwzględnie przez coraz więcej obostrzone, aż do 10 sgr. od każdego dziecka i za każdy bez uniewinnienia zmudzony dzień szkólny zwiększyć się mogące kary pieniężne do regularności i porządku przytrzymywały.

## 16.

Rozporządzenie rejencyji poznańskiej z dnia 26 września 1865 r., dotyczące nauki języka niemieckiego w szkołach elementarnych W. Ks. Poznańskiego brzmi jak następuje: „Ze sprawozdań radzców ziemiańskich, zdanych nam w ciągu roku bieżącego co do statystycznych stosunków dotyczących powiatów, przekonaliśmy się, że w katolickich szkołach wielorako nauka języka niemieckiego udzielaną niebywa. Ponieważ to w żadnym razie dozwolonem być nie może, bo nauka niemieckiego języka na fundamencie istniejących przepisów należy do obowiązujących przedmiotów naukowych każdej szkoły, przeto powodujemy Jks. Dobrodzieja, ażebyś w najbliższej dekanalnej konferencyji nauczycielskiej oświadczył nauczycielom, że każdy z nich pociągniony będzie do odpowiedzialności i spodziewać się może niemiłych następstw, któryby w szkole mu powierzonej zaniedbywał naukę niemiecką lub wcale jej nie udzielał. Panów inspektorów szkólnych zechcesz zawiadomić o tem naszem rozporządzeniu, przyczem wyraźnie nadmieniamy, że żaden inspektor szkólny nie ma prawa nauki języka niemieckiego, jak to w niektórych razach zachodzić miało, ograniczać lub wcale zakazywać. Jks. Dobrodziej zechcesz przy swych rewizyjach szkólnych szczególową baczność na rzecz tę zwrócić, jakiekolwiek zachodzące niedostatki lub niedogodności,

stósownemi rozporządzeniami usunąć, a gdzieby grube niewłaściwości zaszły, nam zdać raport.“ Do wszystkich katolickich inspektorów szkolnych powiatowych obwodu rejencyjnego.

## 17.

Król. rejencyje w Opolu pod dniem 5 września 1851, w Kwidzynie pod dniem 26 marca 1852, wydały, podług naszego zdania bardzo dobrą instrukcyą, tyczącą się przysposobiania tak nazwanych preparandów, t. j. młodych ludzi, mających wstąpić do seminaryjum nauczycielskiego. Podług tej instrukcyji preperand powinien posiadać następujące kwalifikacyje: zdrowe ciało, zwłaszcza mocne piersi i dobry wzrok, muzykalny słuch, mocny i przyjemny głos, dobre zdolności umysłowe, religijne usposobienie i moralne prowadzenie się, rzeczywistą skłonność do zawodu nauczycielskiego, wiadomości takie, jakie posiadać powinien dobry uczeń elementarny i początki tego języka krajowego, który nie jest jego językiem ojczystym. We względzie nauk wspomnioną instrukcyją w następujący sposób zmodyfikowano:

*A.* **W religiji:** *a.* Dokładna znajomość historyji biblijnej starego i nowego testamentu, w mowie ile możności biblijnej; krótka historyja ksiąg biblijnych, ich podział i treść ogólna. *b.* **Z katechizmu:** dokładna znajomość katechizmu dyecezyalnego i zrozumiałość treści. *c.* Obeznanie z następującemi chorałami resp. pieśniami kościelnemi; 1. Po upadku człowieka. 2. Zdrowaś bądź Maryja. 3. Urząd zbawienia ludzkiego. 4. Anioł pasterzom. 5. Mesyjasz przyszedł. 6. Dzieciątko się narodziło. 7. W dzień Bożego narodzenia. 8. Ach, ja matka. 9. Zawitaj ukrzyżowany. 10. Rozmyślajmy dziś. 11. Gorzkie żale.

12. Jezu Chryste. 13. Ojcze Boże. 14. Krzyżu święty. 15. Wesoły nam dzień. 16. Chrystus zmartwychwstan jest. 17. U drzwi twoich. 18. Twoja cześć, chwała. 19. Do Ciebie, Panie. 20. Witaj królowa nieba. 21. O Gospodzie. 22. Witaj święta i poczęta. 23. Gwiazdo morza. 24. Przez czyszczowe. 25. Kto się w opiekę. 26. Boże w dobroci. 27. Jezu w ogrójcu. 28. Boże Sędzio. 29. Z pokłonem. 30. Co nam nakazuje. Jako książkę podręczną zaleca się: „Dostateczny Śpiewnik kościelny i domowy," wydany w roku 1850 w Piekarach niemieckich u Heneczka. W religiji traktowane pensa winny być wykładane w tym języku, w jakim preparandzi, jako przyszli nauczyciele religiją udzielać będą.

*D.* Z nauki o świecie: *a.* dokładniejsza znajomość Prus, wewnętrzny pogląd na mapę, obeznanie się z powierzchnią kuli ziemskiej, tak jak ją przedstawia zwyczajny globus szkólny np. Nagla, i znajomość historyji Prus od Fryderyka Wielkiego.

*F. c.* Co do gry na organach: bezbłędne, pewne i ścisłe podług taktu wykonanie pod *A. c.* wymienionych chorałów i pieśni kościelnych wedle Chorału Nachbara. Do dalszych ćwiczeń posłużyć mogą następujące chorały i pieśni: 1. Matko niebieskiego Pana. 2. Duszo moja słuchaj Pana. 3. Jezusa słodkie wspomnienie. 4. Wisi na krzyżu. 5. Przed tak wielkim. 6. Przybądź Duchu. 7. Pokropisz mnie. 8. Przez twoje święte. 9. Z pokorą upadamy. 10. Boże kocham Cię; również i inne powszechnie używane śpiewy, — W końcu widzimy się być spowodowani do § 10 następujące dodatkowe rozporządzenie wydać:

1. Biegi dyktowane z gramatyki, rachunków, nauki o świecie i t. d. są niedozwolone.
2. Ściśle na to zważać należy, aby naukę tylko na przepisany od nas okres rozprzestrzeniać;

jak również w użyciu środków do nauki naszych tylko przepisów trzymać się wolno.

3. Nauczyciele preparandów na to baczyć winni, aby ich uczniowie zaopatrywali się w potrzebne książki, i udzielone im przez nas wsparcie tylko na ten cel użyli.

*B.* **Język niemiecki i polski.** *a.* Łatwość w czytaniu i mówieniu. *b.* Wprawa w tłómaczeniu z jednego języka na drugi. *c.* Znajomość nauki wyrazów i główne wyobrażenia z nauki o zdaniu. Znajomość główniejszych reguł gramatycznych, osobliwie tych, które bezbłędne mówienie i pisanie ułatwiają. Nadto powinien uczeń tak dalece być przysposobiony, iżby opowiedzianą krótką powieść lub list bez ważnych błędów ortograficznych mógł w obydwóch językach napisać. *d.* W pisaniu piękny, czytelny i wyraźny charakter.

*C.* **Rachunki.** Wprawa w zwyczajnych rachunkach praktycznych liczbami całkowitemi i z ułamkami, na pamięć i piśmiennie; zaostrzona pamięć liczb i dokładny pogląd na przyczyny działań rachunkowych.

*D.* Niektóre wiadomości z fizyki, odnoszące się osobliwie do najzwyczajniejszych spostrzeżeń i zjawisk natury. Dokładny opis zwierząt, roślin i kopalin swojskich, jak również podział płodów natury na królestwa i klasy.

*E.* **Muzyka.** *a.* Śpiew: łatwe i bezbłędne wykonanie pojedyńczej pieśni podług nót z wyraźnem wymawianiem wiersza. Zaśpiewanie jakowej pieśni kościelnej i responsoryjów na pamięć i bezbłędnie. *b.* Łatwość w odegraniu na skrzypcach dokładnie i gładko pojedyńczej melodyji.

*F.* **Rysunki i nauka o formach.** Wyobrażenie i nazwanie wszystkich w planimetryji zachodzących kątów i figur.

Celem kształcenia się po za lekcyjami, mają preparandzi czytać tak polskie jak niemieckie książki, Preparand ma być zarazem pomocnikiem nauczyciela w klasie. Nauczyciel ma uważać preparandów za swych domowników i pozwalać im brać udział w życiu familijnem.

## 18.

Wedle ogłoszenia król. prowincyjonalnego kolegijum szkolnego w Poznaniu następujące wychowanice król. seminaryjum guwernantek i nauczycielek złożyły w dniu 24. czerwca 1867 r. egzamin dojrzałości i przyznano im kwalifikacyją do objęcia posad jako guwernantki w familijach lub jako nauczycielki przy szkołach miejskich: Adolfina Boeck, Klara Knothe, Klara Reichel, Anna Rekowska, Anna Springer, Maryja Borsekow, Anna Boelter, Zofija Cunow, Stefanija Dehnel, Emma Grossmann, Ida Meyer, Olga Molińska, Klara Petersohn, Maryja Sametzka, Anna Schirmer, Klara Schultz, Jadwiga Schwandt, Stanisława Strzyżewska, Hermina Wende, Melanija Boye, Leokadyja Gintrowicz, Stanisława Michałowska, Helena Schön. Podając to do publicznej wiadomości, zwraca się wyraźnie na to uwagę, iż familije, któreby sobie życzyły przyjąć dla swych dzieci guwernantkę z rzeczonego instytutu, zechcą donieść panu dyrektorowi Dr. Barth: 1, ile dzieci, odnośnie w którym wieku i jakiej płci są do uczenia; 2, jakiego guwernantka ma być wyznania religijnego; 3, czy język polski ma być uczony, lub czy język polski zupełnie ma być językiem wykładowym; 4, czy życzeniem jest, ażeby guwernantka posiadała biegłość w graniu na fortepianie, lub czy wystarczy, jeżeli jest w stanie udzielania nauki na fortepianie;

5, jaką pensyją guwernantce płacić zamierzają; 6, w którym czasie objąć ma swe obowiązki.

## 19.

W celu podniesienia szkół ludowych w W. Ks. Poznańskiem wydano w roku 1866 jako nadzwyczajne wspomózki następujące sumy: 2683 tal. na wykształcenie preparandów do zawodu nauczycielskiego; 7500 tal. na podniesienie nauki w miejskich szkołach, mianowicie w wyższych klasach, które przygotować mają uczniów do gimnazyjów i szkół realnych; 8500 tal. na wspomożenie biednych gmin przy budowlach szkół elementarnych; 10,000 tal. na lepsze uposażenie szkół elementarnych po miastach i wsiach. Ogółem 28,683 tal.

## 20.

Ustawa, uchwalona przez sejm względem języka wykładowego w szkołach ludowych i średnich Galicyji, otrzymała, podobnie jak uchwała o Radzie szkólnej sankcyją cesarską, i już wkrótce ogłoszoną zostanie. Opiewa ona następnie:

„1, Prawo stanowienia o języku wykładowym w szkołach ludowych przysłuża tym, którzy szkołę utrzymują. 2, Jeżeli szkoła ludowa pobiera zasiłek z funduszów publicznych, prawo stanowienia, który z języków, polski albo ruski, ma być wykładowym, wykonywa gmina wspólnie z władzą szkólną krajową w ten sposób, że orzeczenia gminy ulegają zatwierdzeniu władzy szkólnej krajowej. 3, W każdej szkole ludowej, w której część uczęszczającej młodzieży używa polskiego, część zaś ruskiego języka, ten język, który nie jest wykładowym, będzie obowiązkowym przedmiotem nauki w granicach szkole odpowiednich. Począwszy od trzeciej

klasy wszystkich wyższych szkół ludowych język niemiecki jest obowiązkowym przedmiotem nauki. 4, W szkołach średnich, utrzymywanych wyłącznie funduszem prywatnym czy to gminy, czy osób pojedyńczych lub zbiorowych, językiem wykładowym będzie ten, za jakim oświadczą się dostarczający do szkoły fundusze. 5, W szkołach średnich, w części lub w całości utrzymywanych z funduszów publicznych, językiem wykładowym jest język polski z następującemi zastrzeżeniami: *a*, Język ruski pozostaje jako wykładowy dla nauki języka ruskiego, tudzież w czterech niższych klasach gimnazyjum akademickiego we Lwowie. Co do języka wykładowego w nauce religiji obowiązują istniejące przepisy. *b*, O czasowej potrzebie i możności zaprowadzenia obok wykładów w języku polskim także wykładów ruskich w pojedyńczych przedmiotaah nauki, orzeka w każdym danym wypadku władza szkólna krajowa. *c*, W klasach z językiem wykładowym ruskim nauka języka polskiego, w szkołach średnich z językiem wykładowym polskim nauka języka ruskiego jest obowiązkiem względnym tj. zależnym od oświadczenia się w tej mierze rodziców. *d*. Dopóki ustawa krajowa inaczej nie orzecze, pozostaje język niemiecki w dotychczasowym zakresie wykładowym w gimnazyjum II we Lwowie i gimnazyjum niższem w Brodach. 6, Co do nauki języka niemieckiego, będącego obowiązkowym we wszystkich klasach szkół średnich, przestrzegane będą przepisy cesarskiego postanowienia z dnia 20 lipca 1859. 7, O zmianach co do języka wykładowego w szkołach średnich z funduszu publicznego utrzymywanych w ogóle, a w szczególności mających na celu stopniowe rozszerzauie wykładów w języku ruskim, przez zaprowadzenie go stale bądź w pojedyńczych klasach głównych lub pobocznych

(równoległych), bądź z czasem w całych gimnazyjach lub szkołach realnych, stanowić będzie na przyszłość sejm po wysłuchaniu rad powiatowych. 8, Uczącym się, względnie ich rodzicom lub opiekunom, zostawia się wolność w wyborze szkoły tak, że uczniowie bez względu na obrządek słuchać mogą polskich lub ruskich wykładów. 9. Wszystkie przepisy z ustawą niniejszą niezgodne uchylają się. 10. Wprowadzenie tej ustawy w wykonanie polecam memu ministrowi stanu.

## 21.

Już i w dawnych czasach nie schodziło na przyjaciołach ludzkości, którzy szukali środków, aby nieszczęśliwym osobom, z najważniejszych przymiotów, jakie są słuch i dar mówienia, ogołoconym i dla tej przyczyny do przyzwoitego ukształcenia duszy przyjść niemogącym, jakokolwiek w udoskonaleniu dopomódz mogli, aby przez stósowną do ich talentów edukacyją usposobili się do utrzymania społeczności z ludźmi, od której dla niedostatku koniecznych pomocy odciętymi być się zdają. Jednakże dopiero wiekom nowożytnym, wiekom rozwijającej się ideji chrześcijańskiej, wiekom cywilizacyji na słowie Chrystusa opartej, należy się chwała i zasługa, że spłodziły Michała de L'Epée, Sicarda we Francyji, Samuela Heineckego i Eschka. Chrystus zostawił wzory do naśladowania, uzdrawiając ślepego i przywracając głuchoniememu słuch i mowę. Nie ludzką to rzeczą działać cuda Boże, ale powinnością jest człowieka, o ile sił mu i myśli starczy, nieść pomoc tym, którzy sami sobie nie zaradzą w życiu. I to, co Bóg tchnął cudem i przyłożeniem ręki, człowiek w części przynajmniej dokonał pracą i wytrwałością. Przemówili głusi, niewidomi przejrzeli. Zmysł który odjął traf i urodze-

nie, wynagrodził się natężeniem i zręcznem użyciem innych zmysłów; ten który przez niedokładność natury na wieczną może ciemnotę moralną skazany został, przejrzał w duchu, nauczył się pojmować Stwórcę i stworzenie a miłość bliźniego. ową świętą zasadę naszej wiary, której winien był wtajemniczenie w Boga, świat i życie, zwrócić tymże bliźnim jako należny hołd wdzięczności. — To są zasady, któremi się przejęli owi wielcy mężowie, przyjaciele ludzkości, zakładając instytuta głuchoniemych; ta myśl przewodniczyła także śp. księdzu Falkowskiemu, który pierwszy wprowadził u nas w praktykę takowy instytut. — Za staraniem ks. Falkowskiego założony został w Warszawie instytut głuchoniemych r. 1817. Z początku dwunastu tylko mieścił w sobie wychowańców. Gmach teraźniejszy przy ulicy Wiejskiej, w którym instytut ma pomieszczenie, wybudowany został ze szczodrobliwości Aleksandra I w r. 1826. Umarł ks. Falkowski, ale duch jego żyje ciągle tak w jego następcy ks. J. Szczygielskim, jak i w czcigodnych pomocnikach. — Prócz Warszawy wspomnieć mi wypada w ziemiach polskich o instytucie głuchoniemych we Lwowie, którego dyrektorem był w ostatnich czasach pan Ostrowski i w Poznaniu, założony r. 1831. — Wedle statystycznych obliczeń żyje w W. Ks. Poznańskiem ogółem 1352 głuchoniemych różnego wieku. Z tych przypada na dzieci w wieku szkolnym około 250. Dla tych głuchoniemych istnieje jedyny jeden zakład w Poznaniu, a ponieważ tenże zaledwie 50 głuchoniemych na wychowanie przyjąć może, przeto ustanowiła władza kursa, aby metodę uczenia głuchoniem. rozpowszechnić, a tym samym podać nauczycielom elementarnym sposobność uczenia głuchoniem. w ich obwodzie szkolnym się znajdujących. Stąd też jedynie tacy nauczyciele na kurs ten przy-

puszczeni bywają, w których obwodzie szkólnym głuchoniemi się znajdują. Zgromadzone w r. 1863 stany prowincyjonalne uchwaliły, aby nauczycielowi zajmującemu się kształceniem głuchoniemego dać wynagrodzenie, mniej więcej od jednego głuchoniemego po dwa talary miesięcznie. Jak słychać, ma przyjść niezadługo do rozdzielenia zakładu Poznańskiego. Dzieci niemieckiego pochodzenia mają się przenieść do Bydgoszczy, a zakład dla polskich dzieci ma pozostać w miejscu.

---

## SPRAWOZDANIE

### Dyrekcyji Towarzystwa Pomocy Naukowej Imienia Karóła Marcinkowskiego

dla młodzieży Wielkiego Księstwa Poznańskiego

**za rok 1866.**

Ze względu na ważność Towarzystwa Naukowej Pomocy dla W. Ks. Poznańskiego, oraz dla obeznania z działaniami tegoż tych osób, do których roczne sprawozdania nie dochodzą, wreszcie celem obudzenia większego udziału dla tej tak pożytecznej instytucyji, która hojnemi funduszami licznych dobroczyńców zaopatrzona, uczącą się ubogą młodzież polską wspiera, postanowiłem w niniejszem pisemku podać sprawozdanie Dyrekcyji Tow. Pomocy Naukowej.

Podobnież jak we wszystkich minionych latach ćwierćwiekowego żywota Towarzystwa, i jak to z natury rzeczy wynika, w zeszłym roku 1866, Towarzystwo to podzielało losy społeczeństwa, na którego gruncie wzrosło, i z którego rozległemi swemi korzeniami ciągnie soki żywotne. Nietylko w sprawozdaniu zeszłorocznem, nietylko w protokółach

Dyrekcyji i komitetów, ale nadto w sercach niezmazalnemi rysami zapisane są wrażenia i skutki, jakie wywarł poważny i uroczysty obchód 25-letniej pamiątki założenia Towarzystwa. Odezwy wydane z ramienia tak Dyrekcyji, jako też komitetów powiatowych, a wydane w imię szlachetnego Założyciela Towarzystwa, który był przedmiotem czci zeszłorocznej uroczystości jubileuszowej, błogie przyniosły owoce, gdyż nietylko znacznie przymnożyły dochodu, ale nadto podniosły ducha ożywiającego stowarzyszenie i popchnęły towarzystwo z nowym zapałem na drogę drugiego dwudziestopięciolecia. I w tem to miejscu zapisać wypada wyraz podziękowania tak dla komitetów powiatowych, które chwalebną rozwinęły czynność ku uczczeniu pamięci założenia i Założyciela towarzystwa, tudzież ku zebraniu nadzwyczajnych z tej okazyji składek, jako też dla wszystkich tych członków towarzystwa, którzy się nadzwyczajnemi datkami do uszanowania tej pamiątki i do zasilenia żelaznego funduszu towarzystwa przyczynić zechcieli.

Atoli ta świetna gwiazda na horyzoncie towarzystwa wnet zaćmioną została chmurami znanych wypadków czasowych; przestraszone i w inną stronę zwrócone umysły nie mogły długo wytrwać w czynnem zajęciu około dobra towarzystwa, a wysilenia i klęski materyjalne powstrzymały na czas dość długi obfity i regularny przypływ do kasy jego. W takiem położeniu rzeczy i w obec niepewnej a w ówczas w nieprzewidziane następstwa brzemiennej przyszłości, miała sobie dyrekcyja za obowiązek zaprowadzić w wydatkach wszelką możliwą oszczędność, i to było powodem, dla czego przez ciąg roku zeszłego nader skąpą ręką nowe rozdzielała wsparcia. W tak nadzwyczajnem przesileniu czasowem musiała sobie dyrekcyja kłaść to pytanie ra-

czej, czy i jak zdolną będzie podjętym sprostać obowiązkom, aniżeli, czy nowe obowiązki podejmować ma prawo. Tem się też tłumaczy systematyczne prawie odmawianie wsparcia na wnioski tak komitetów, jak pojedyńczych petentów, i zasady tej trzymała się dyrekcyja tak długo, dopóki się horyzont europejski nie rozjaśnił, a bieg interesów towarzystwa i wpływ przychodów jego nie weszły na tór zwyczajny, pewniejszy i bezpieczniejszy. Jeżeli więc poniżej zestawione cyfry przychodów przedstawiają na pierwszy rzut oka świetny stan towarzystwa, w roku ubiegłym, to nie należy zapominać, że z jednej strony znaczna część dochodu przypada na czas zachodów około uczczenia pamiątki jubileuszowej i według uchwały towarzystwa do żelaznego jego funduszu przydzieloną została, z drugiej główne i najliczniejsze nadsyłki ze strony komitetów przychodziły dopiero po zupełnem uśmierzeniu burzy czasowej i prawie już pod sam koniec roku. Wszakże nawet pomimo to dyrekcyja oględności i oszczędności swojej tylko sobie powinszować mogła, ponieważ suma wydatków pokazuje, że pomimo tę oszczędność przechodzi ona sumę regularnych rocznych przychodów, które za etatowe przypuszczone być mogą. Jestto wypadek naturalny i konieczny, mający główną i stałą swoję przyczynę w tem, że coroczny przybytek stypendyjatów wyprzedza i przewyższa o wiele wzrost rocznych funduszów, które, jak to doświadczenie wielu lat ostatnich uczy, w pewnych stałych poruszają się granicach i pewną skalę rzadko przekraczają. Upadają tym sposobem wszelkie niewczesne utyskiwania komitetów powiatowych z powodu, jakoby dyrekcyja wnioski tego właśnie lub owego powiatu, albo tego właśnie lub owego petenta mniej chętnie i mniej chojnie uwzględniała, aniżeliby tego bądź zasługi komitetu i jego powiatu

około materyjalnego dobra towarzystwa, bądź kwalifikacyje interesentów wymagać miały prawo.

Uczyniliśmy już chlubną i dziękczynną wzmiankę o energicznej czynności, jaką rozwinęły komitety w chwili, kiedy szło o to, aby zebraniem składek nadzwyczajnych zadokumentować cześć towarzystwa dla pamiątki tak założyciela jego, jako też samejże jego fundacyji. Tym to usiłowaniom komitetów winno towarzystwo, że dochód roku zeszłego dosięgnął prawie sumy 11.000 tal., z której jak się już powiedziało, stósownie do woli towarzystwa, część znaczna funduszowi żelaznemu przekazaną została. Takie samo uznanie należy się komitetom i za to, że kiedy pod wpływem nadzwyczajnych zeszłorocznych wypadków kasa towarzystwa ogołoconą została z funduszów na bieżące wydatki, odezwa dyrekcyji do komitetów o spieszne zaradzenie tej potrzebie prędki i znaczny odniosła skutek. Stąd to poszło, że większa część przychodu ze zwyczajnych składek zeszłorocznych przypadła na ostatnie dwa miesiące roku.

Dyrekcyja składała się w roku 1866 z następujących osób: 1. Hr. Mielżyńskiego Macieja, jako prezesa; 2. Dr. H. Cegielskiego, jako zastępcy prezesa; 3. Ks. Prałata Brzezińskiego, jako sekretarza; 4. Hr. Cieszkowskiego Augusta, 5. Ks. Kanonika Janiszewskiego, 6. Kantaka Kazimierza, 7. Łaszczewskiego Feliksa, 8. Łączyńskiego Adolfa, 9. Dr. Mateckiego, 10. Profesora Dr. Motty, 11. Radońskiego Anastazego, 12. Profesora Dr. Rymarkiewicza, 13. Profesora Wannowskiego, 14. Wegnera syndyka. Ks. kanonik Grandke pełnił obowiązki podskarbiego.

Dyrekcyja odbyła w roku bieżącym 23 posiedzeń we wtorki po pierwszym i piętnastym każdego miesiąca.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Dochodu było według dziennika kasowego: | | | | | | |
| 1. ze składek . . . . . | 8589 | tal. | 22 | sgr. | 6 | fen. |
| 2. z wpływów nadzwyczajnych . | 1500 | — | 27 | — | 8 | — |
| 3. z wpływ. nadzw. na pamiątkę zeszłorocznego jubileuszu . . | 673 | — | 27 | — | 6 | — |
| 4. z wpł. nadzw. na fundusz żelaz. | 100 | — | . | — | „ | — |
| 5. wpł. w papierach procentowych | 3,501 | — | 20 | — | „ | — |
| 6. z zwróconych pieniędzy . . . | 100 | — | 7 | — | 6 | — |
| *a.* w papierach procentowych . | 3,501 | — | 20 | — | „ | — |
| *b.* w gotowiźnie . . . , . | 10,964 | — | 25 | — | 2 | — |
| Rozchodu było według dzien. kas. | 13,500 | — | 5 | — | 7 | — |
| Azatem rozch. przew. doch. . . | 2.535 | — | 10 | — | 5 | — |
| Że zaś w końcu roku 1865 było remanentu: | | | | | | |
| *a.* w papierach procent. . . . | 3,771 | — | 20 | — | „ | — |
| *b.* w gotowiźnie . . . . . | 8,247 | — | 18 | — | 2 | — |
| Stąd w końcu roku 1866 pozostało remanentu: | | | | | | |
| *a.* w papierach procentowych . | 7,273 | — | 10 | — | „ | — |
| *b.* w gotowiźnie . . . . . | 5,712 | — | 7 | — | 9 | — |

## Wykaz szczegółowy dochodów od 1 stycznia do końca roku 1866.

| Z Powiatów: | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. Babimostskiego . . . . . | 401 | tal. | 2 | sgr. | 6 | fen.; |
| 2. Bukowskiego . . . . . | 346 | — | 10 | — | „ | — |
| 3. Bydgoskiego , . . . . . | 84 | — | 15 | — | „ | — |
| 4. Chodzieskiego . . . . . | 73 | — | „ | — | „ | — |
| 5. Czarnkowskiego . . . . . | 191 | — | „ | — | „ | — |
| 6. Gnieźnieńskiego . . . . . | 491 | — | 10 | — | 6 | — |
| 7. Inowrocławskiego . . . . . | 407 | — | „ | — | „ | — |
| 8. Kościańskiego . . . . . , | 363 | — | 20 | — | „ | — |
| 9. Krobskiego . . . . . | 266 | — | „ | — | „ | — |
| 10. Krotoszyńskiego . . . . . , | 294 | — | 10 | — | „ | — |
| 11. Międzychodzkiego . . . . . | 220 | — | 15 | — | „ | — |
| 12. Międzyrzeckiego . . . . . | 76 | — | „ | — | „ | — |
| 13. Mogilnickiego . . . . . | 255 | — | „ | — | „ | — |
| 14. Obornickiego . . . . . | 198 | — | 10 | — | „ | — |
| 15. Odolanowskiego . . . . . | 226 | — | 7 | — | 6 | — |
| 16. Ostrzeszowskiego . . . . . | 147 | — | 3 | — | 6 | — |
| 17. Pleszewskiego . . . . . | 349 | — | 25 | — | „ | — |
| 18. Poznańskiego . . . . . | 194 | — | 15 | — | „ | — |
| 19. Średzkiego . . . . . | 189 | — | 15 | — | „ | — |
| 20. Śremskiego . . . . . | 461 | — | „ | — | „ | — |
| 21. Szamotulskiego . . . . . | 456 | — | 25 | — | „ | — |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 22. Szubińskiego . . . . . | 513 | — 15 | — „ | — |
| 23. Wągrowieckiego . . . . . | 437 | — „ | — „ | — |
| 24. Wrzesińskiego . . . . . | 323 | — 5 | — „ | — |
| 25. Wschowskiego . . . . . | 384 | — 10 | — „ | — |
| 26. Wyrzyskiego . . . . . | 213 | — „ | — „ | — |
| 27. Z Poznania z lewej strony Warty | 933 tal. | 18 srg. | 6 fn. | |
| 28. „ z prawej strony Warty | 92 „ | — „ | — „ | |
| 29. Do tego dochód nadzwyczajny | 1500 „ | 27 „ | 8 „ | |
| 30. Dochód nadzwyczajny na pamiątkę obchodu jubileuszu . | 673 „ | 27 „ | 6 „ | |
| 31. Doch. nadzw. na fundusz żelazny, za który kupione papiery procentowe na 100 tal. | 100 „ | — „ | — „ | |
| 32. Dochód nadzwyczajny na fundusz żelazny w pap. procent. | 151 „ | 20 „ | — „ | |
| 33. Zwrócone pieniądze . . . . | 100 „ | 7 „ | 6 „ | |
| 34. Kupione papiery procentowe na fundusz żelazny ze składek jubileuszowych z r. 1865 . . | 3250 „ | — „ | — „ | |
| W ogóle jak wyżej | 10964 „ | 25 „ | 2 „ | |

## Wykaz szczegółowy wydatków z r. 1866.

| | | Tal. | Sgr. | Fen. |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Na uczniów uniwersytetu w Berlinie . | 550 | — | — |
| 2. | „ „ w Wrocławiu . | 2435 | — | — |
| 3. | „ „ w Gryfiji . . . | 175 | — | — |
| 4. | „ szkoły agron. w Prnszkowie | 460 | — | — |
| 5. | „ gimn. ś. M. Magd. w Poznaniu | 1044 | — | — |
| 6. | „ „ w Lesznie . . . . . | 327 | — | — |
| 7. | „ „ w Ostrowie . . . . . | 351 | — | — |
| 8. | „ „ w Wałczu , . . . . | 24 | — | — |
| 9. | „ „ w Inowrocławiu . . . | 36 | — | — |
| 10. | „ „ w Krotoszynie . . . | 36 | — | — |
| 11. | „ „ w Śremie . . . . | 676 | 15 | — |
| 12. | „ „ w Gnieźnie . . . . . | 99 | — | — |
| 13. | „ szkoły realnej w Poznaniu . | 99 | — | — |
| 14. | „ „ rektorskiej w Szamotułach | 72 | — | — |
| 15. | „ „ „ w Rogoźnie . | 8 | — | — |
| 16. | „ seminar. naucz. w Poznaniu | 219 | — | — |
| 17. | „ „ w Paradyżu . . | 146 | — | — |
| 18. | „ „ w Kcyni . . . . | 238 | — | — |
| 19. | „ szkoły przem. w Berlinie . | 1430 | — | — |
| 20. | „ „ w Holzmünden . | 150 | — | — |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 21. | Na uczniów szk. budowniczej w Hoexter | 90 | — | — |
| 22. | Na ucznia ksylogr. i malar. w Berlinie | 110 | — | — |
| 23. | Na ucznia rysunków w Poznaniu . . | 86 | — | — |
| 24. | Na uczn. kupiectwa w Berlinie i Szczecinie | 312 | — | — |
| 25. | Na ucznia leśnictwa . . . . . | 60 | — | — |
| 26. | Na ucz. aptekarstwa w Berlinie i Wrocławiu | 100 | — | — |
| 27. | Elew. gosp. na zwiedz. owcz. w Meklenburgu | 200 | — | — |
| 28. | Na ucznia gorzelnictwa . . . . . | 25 | — | — |
| 29. | Na opłatę szkolną od stypendyatów gimnazyum Maryi Magd. w Poznaniu . | 73 | 26 | 3 |
| 30. | Na opłatę szkolną od stypendyatów gimnazyum Fryderyka w Poznaniu . . | 5 | 7 | 6 |
| 31. | Na opłatę szkolną od stypendyatów gimnazyum w Gnieznie . . . . . | 5 | — | — |
| 32. | Na opłatę szkolną od stypendyatów szkoły realnej w Poznaniu . . . . | 19 | 27 | — |
| 33. | Na książki i materyały piśmienne dla stypendyatów gimnazyum Maryi Magdaleny w Poznaniu . . . . . | 82 | 17 | 6 |
| 34. | Na książki i materyały piśmienne dla stypendyatów gimnazyum w Gnieźnie | 10 | — | — |
| 35. | Na oporządzenie stypendyatów gimnazyum Maryi Magdaleny w Poznaniu . | 40 | — | — |
| 36. | Na oporządzenie stypendyatów gimnazyum w Ostrowie . . . . . | 8 | — | — |
| 37. | Na oporządzenie stypendyatów szkoły realnej w Poznaniu . . . . . | 30 | 4 | 6 |
| 38. | Na pensye kancelistów dyrekcyi . . . | 160 | — | — |
| 39. | Na pensyą woźnego dyrekcyi . . . . | 50 | — | — |
| 40. | Na portoryum od pieniędzy i korespondencyi dyrekcyi i komitów powiatowych | 43 | 27 | 6 |
| 41. | Na wydatki nadzwyczajne . . . . . | 246 | 4 | 7 |
| 42. | Przechodowa pozycya jako na powrót zwrócona . . . . . | 75 | — | — |
| 43. | Na kupno papierów krajowych . . . | 3091 | 25 | 9 |
| | Ogólny wydatek | 13500 | 5 | 7 |

## Wykaz stypendyjatów Towarzystwa.

a, Lista stypendyjatów wedle powiatów.

| Nr. bieżący. | Nazwiska powiatów w których się stypendyaci urodzili. | Na końcu roku 1865 zostało stypendyatów. | W ciągu roku 1866. przybyło. | ubyło. | w końcu r. 1866 pozostało. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | W Babimostskim . . . | 3 | 1 | 3 | 1 |
| 2 | w Bukowskim . . . . | 4 | 2 | 2 | 4 |
| 3 | w Bydgoskim . . . . | 2 | 3 | 3 | 2 |
| 4 | w Chodzieskim . . . . | 2 | 5 | 1 | 6 |
| 5 | w Czarnkowskim . . . | 3 | 2 | 1 | 4 |
| 6 | w Gnieźnieńskim . . . | 3 | 3 | 3 | 3 |
| 7 | w Inowrocławskim . . | 2 | — | 1 | 1 |
| 8 | w Kościańskim . . . . | 7 | 3 | 4 | 6 |
| 9 | w Krobskim . . . . . | 7 | 6 | 5 | 8 |
| 10 | w Krotoszyńskim . . . | 5 | 4 | 5 | 4 |
| 11 | w Międzychodzkim . . | 1 | — | — | 1 |
| 12 | w Międzyrzeckim . . . | 3 | — | 2 | 1 |
| 13 | w Mogilnickim . . . . | 5 | 4 | 5 | 4 |
| 14 | w Obornickim . . . . | 1 | 2 | 1 | 2 |
| 15 | w Odolanowskim . . . | 6 | 1 | 4 | 3 |
| 16 | w Ostrzeszowskim . . . | 3 | 2 | 1 | 4 |
| 17 | w Pleszewskim . . . . | 8 | 6 | 3 | 11 |
| 18 | w Poznańskim . . . . | 20 | 12 | 13 | 19 |
| 19 | w Średzkim . . . . . | 7 | 4 | 6 | 5 |
| 20 | w Śremskim . . . . . | 8 | 6 | 4 | 10 |
| 21 | w Szamotulskim . . . | 5 | 2 | 4 | 3 |
| 22 | w Szubińskim . . . . | — | 4 | 1 | 3 |
| 23 | w Wągrowieckim . . . | 5 | 3 | 4 | 4 |
| 24 | w Wrzesińskim . . . . | 6 | 3 | 5 | 4 |
| 25 | w Wschowskim . . . . | 2 | 3 | — | 5 |
| 26 | w Wyrzyskim . . . . | 4 | 1 | 4 | 1 |
| 27 | Przypadkowo za obrębem W. Ks. Poznańsk. zrodzeni | 2 | — | — | 2 |
| | Razem | 124 | 82 | 85 | 121 |

b. Lista stypendyatów, którzy całkowitym lub częściowym kosztem Towarzystwa nauki ukończyli, albo prześli na inny fundusz w ciągu r. 1866.

| | | |
|---|---|---|
| 1. | Złożyło popis na lekarzy stypendyatów . . . . | 5 |
| 2. | Złożył popis doktorski z nauk przyrodniczych styp. | 1 |
| 3. | Składa popis na wyższego nauczyciela gimn. . . | 1 |
| 4. | Ukończył studya filozoficzne . . . . . | 1 |
| 5. | Zwiedzał owczarnie w Meklenburgu itd. . . . . | 1 |
| 6. | Ukończył naukę w szkole przemysłowej w Berlinie | 1 |
| 7. | Złożył popis agronomiczny stypendyat . . . . . | 1 |
| 8. | Złożyło popis dojrzałości . . . . . | 5 |
| 9. | Przeszło z funduszu Towarzystwa na alumnat młodzieży sposobiącej się do stanu duchownego . . | 2 |
| 10. | Ukończyło teoretycznie i prakt. naukę aptekarską | 2 |
| 11. | Złożyło popis na nauczycieli elemen. w Poznaniu | 11 |
| 12. | Złożyło popis na nauczycieli elemen. w Paradyżu | 7 |
| 13. | Ukończył naukę praktyczną gorzelnictwa . . . . | 1 |

W Poznaniu, dnia 4 lutego 1867.

**Dyrekcyja Towarzystwa Naukowej Pomocy Imienia Karóla Marcinkowskiego dla młodzieży Wielkiego Księstwa Poznańskiego.**

BIBLIOTHECA
UNIV. IAGELL.
CRACOVIENSIS.